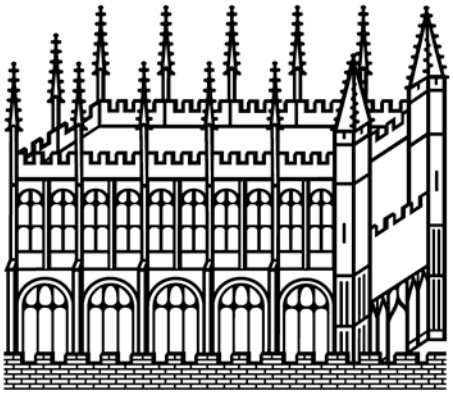

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Haril

13.B.23. Hindi Haril 1

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.







Inglistān kā itihāsa.

Engelistan Ka Etehas

इङ्गलिस्तानका

इतिहास

जिस को पश्चिम देशीय चटशालाओं के
विद्यार्थियों की शिक्षा के लिये पण्डित हरी
लालने उर्दू से हिन्दी भाषा मे

उल्था किया

अवध देश के डैरेक्टर आफ़ पब्लिक
इन्स्ट्रक्शन श्रीयुत विलियम हैण्डफोर्ड
साहिब बहादुर के

हुक्म से

स्थान लखनऊ
मतबअ मुन्शी नवलकिशोर में छापागया
सन १८६५ ई०

भूमिका

इतिहासों के पढ़नें का उत्तम फल यह है कि प्रत्येक जातों और बादशहों और राजाओं के चाल चलन और स्वभाव और उन के घटने बढ़ने का बोरा इससे जाना जाता है यद्यपि सम्पूर्ण इतिहास लाभकारी हैं और मनुष्यों को बुद्धि प्राप्त होने के कारण होते हैं परंतु इतिहास जिसमें समय के राजा श्रीमान अङ्गरेज़ बहादुर देश से आये हैं जिस हिन्दुस्तानियों ने कभी सुनाभी न था और रूप स्वरूप और चालढाल और खान पान और वस्त्र पहरावे में सबसे निराला ही रङ्ग ढङ्ग रखते हैं और अपने बल पराक्रम से इस अज्ञान देश में आकर थोड़ेही काल में बड़े २ प्रतापी राजा और नबोंवो को पराजय करके और प्रजा के साथ भलों से भलाई अधर्मियों को दण्ड देके इस देश के अधिकारी होगये हैं अवश्य पढ़ने वालों को रोचक होगा और हमारा मनोर

केवल राज्यों की उलट पलट और बादशाहों के गुण दोषों के वर्णन करने ही से नहीं है वरन आशय यह है कि उस परमेश्वर की प्रभुता पर ध्यान देना चाहिये कि जिसने एक को तो धूल में मिलाया और दूसरे के सिर छत्र फिराया और अपनी माया शक्ति से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को रचा सच तो यह कि न्याय नीति सब अवस्थाओं में बादशाहों को यश कीर्ति पहुंचाती है और अन्याय और अधर्म सब प्रकार से हानि कारक होता है अब इस इतिहास के अवलोकन करने वालों से प्रार्थना है कि जो कुछ भूल चूक इस में हुई हो उसे क्षमा करें और कृपा करके सुधारें और यह उल्था उर्दू से हिन्दी भाषा में विद्याभिलाषियों के लिये किया गया जानना चाहिये कि इस संसार में सब मनुष्य और जाति और देश अवश्य वृद्धि और क्षय को प्राप्त होते हैं अब सुनना चाहिये कि प्राचीन इतिहास वेत्ताओं ने इस जाति की वृद्धि का वृत्तान्त इस भांति लिखा है ॥

दोहा

न्याय धर्म करि प्रजा की पुजवै भुवपति आस।
मिलत सुयश यालोक में अन्त स्वर्ग को वास।
नीति धर्म को त्याग कें देत प्रजहिं दुख जौन॥
शास्त्र सुसम्मति सों लिख्यो लेत नर्क गति तौन।

इङ्गलिस्तान

का

इतिहास

दोहा

परम मनोहर देश है । भुव पर इङ्गलिस्तान
तहँ को यह इतिहास है सुनो सकल गुणवान
लन्दन राजधानी सुभग शोभा अमित अपार
धर्म राज तहँ करत है अङ्गरेज़ी सर्कार ॥१

इङ्गलिस्तान के देश को जिस समय तक रूम के महाराजाधिराज क़ैसर ने न लिया था तब तक और देशों के लोग उसे बहुत कम जानते थे उन दिनों वहाँ के बासी फूंस के झोंपड़ों में अपना निर्वाह करते थे दूध और जन्तुओं का मांस उन का आहार था और जंगली जीवों का चमड़ा पहरते थे सम्पूर्ण देवों की

केवल
दोषों
है कि
हिये
दूसरे
से
ति
च
ह
व
[illegible] के अधिकार में थी परन्तु आ
[illegible] होकर सम्पूर्ण सूबों में
[illegible] को छांट के पदवी और अ
[illegible] के प्रजा का सुख चैन और ल
[illegible] सम्पत्ति पर नियत था उनके
[illegible] थी और इसके सिवाय आव
[illegible] से सवार भी लासक्ते थे और रथ
[illegible] और लम्बे खड्ग धुरियों में दृढ़
[illegible] लड़ाई में लाते थे जो मनुष्य ऐसे
[illegible] वह बड़ी चतुराई से भाला वर्छी फें
[illegible] और जब उतरा चाहता तुरन्त धर
[illegible] और फिर रथ पर सवार होजाता ॥
[illegible] के मत का आचार्य्य देश की अमलदा
[illegible] अधिकार रखता और प्रतिष्ठा पाता औ
[illegible] के लोग अर्थात् उन के मज़हब के गुरू
[illegible] पर पूर्ण अधिकार रखते थे और उन के
[illegible] है कि लोगों से अगले जन्म के इक़रार पर
[illegible] जङ्गल खड्ड और वृक्षों के खोडरों में अपना
[illegible] करते और केवल फल फलारी खाते और पा
[illegible] और उन के तीन भेद थे पहले में भाट जो शूर
[illegible] और बंशावली का वर्णन किया करते थे दूसरे में
[illegible] जो गन्धर्वविद्या और मत धर्म के वक्ता थे और
[illegible] की बातों के बर्णन से लोगों को धोखा देते
[illegible] भेद अगले दोनों भेदों से बढ़कर था और
[illegible] मत धर्म में बहुत सावधान रहता और
[illegible] और इमानदारी के बड़प्पन के कारण

कई स्त्रियां उन भेदों के लिये रक्खी गईं और वे
ड्रूइड उन दिनों इङ्गलिस्तान के लोग मज़हब में
ऐसे बुतपरस्त थे कि मनुष्यों को प्रतिमाओं के ऊप
र नौछावर करके बलिदान करते थे और लिखा है
कि खाने पीने में ऐसी माव धानी रखते थे कि एक
सौ बीस वर्ष की अवस्था तक कुछ वृद्धावस्था न आपी

निदान बहुत काल तक यही दशा रही जब कि
प्रभु ईसामसीह के जन्म से छप्पन बर्ष पहले रूम
के महाराजाधिराज क़ैसर ने संपूर्ण पृथ्वी को अपने
क़बूज़े में किया और सेना साथ लेकर इङ्गलिस्तान
को आया तब इङ्गलिस्तानियों ने उसका ऐश्वर्य्य औ
र प्रताप देखकर आधीनी अङ्गीकार की और कई म-
नुष्य ओलमें दिये फिर महाराजाधिराज क़ैसर अप-
नी राजधानी को उलटा चलागया परंतु उन के उपद्र
व उठाने के कारण फिर आया और उन्हें बस में क-
रके उनसे नाल बन्दी लेता रहा और इसी भांति ब-
हुत समय बितीत हुआ अन्त को महाराजाधिराज
वैलनटीनियन जो क़ैसर के घराने में से था
उसने अधिकार के घटने और दूर देश के कारण
अपनी सेना वहांसे उठाली और इङ्गलिस्तान
के देश को एक साथ छोड़ दिया महाराजाधिराज
क़ैसर के आने से ले रूमियों के हाथ से इस दे
श के छूटने तक अनुमान चारसौ वर्ष के व्यती
त हुए थे कि पिकट और स्काट अर्थात् स्काट
लन्द देश के निवासी जो इङ्गलिस्तान के उत्त
र में हैं वे रूमियों के राज्य के उठजाने के पीछे

इङ्गलिस्तान को खाली पाकर अन्याय और लूट मार करने लगे इङ्गलिस्तानियों ने जब कि बहुत काल तक सब भांति से दुःख और कष्ट सहा तब लाचार होकर रूमके बादशाह से आधीनता सहित सहायता मांगी उन की अर्ज़ी की इबारत जो याद रखने के योग्य थी यह है कि हमारा कहीं बचाव नहीं क्योंकि निर्दयी पिकट पीछा करके समुद्र के किनारे तक आते हैं और वहां से समुद्र की प्रबलधार के कारण हम आगे नहीं बढ सकते इसलिये अब हम को केवल दो प्रकार की मृत्यु के सिवाय और कुछ दृष्टि नहीं आता यातो खड्ग से मारे जांय वा समुद्र की लहर में डूब मरें इस अर्ज़ी के जवाब के आने न आने की कुछ ठीक नहीं है परंतु यह प्रसिद्ध है कि वहां से कुछ कुमक न मिली और सहायता न पहुंची इसकारण से जाना जाता है कि जो मूढजन सम्पूर्ण देश को उजाड़ते और लूटते थे उन के उपद्रव के कारण उन दिनों रूम का बादशाह कुछ सन्देह और सोच बिचार में था जब इङ्गलिस्तानी बहुत घबराये तब सेकसनी के निवासी जो जरमनी देश में शूरवीरता और बल पराक्रम और युद्ध कर्म में बड़े निपुण थे उन से सहायता चाही सेकसनी के वासियों ने उन की बात अंगीकार करके जहाज़ों पर पन्द्रह सौ मनुष्य चढ़ा के इङ्गलिस्तान को भेजे उन्होंने शीघ्र सहायक होकर वहां के निवासियों से देश छुड़ालिया निदान वह तो झगड़ा चुक गया आगे का अद्भुत वृत्तान्त

यह है कि सेकसनी के लोगों ने इस उपजाऊ स-
एड को देखकर और अपनी धरती को बुरी और खा-
री जान कर छोड़ देना विचारा और होले २ वहीं बा-
स किया और इङ्गलिस्तान को दबाकर आप दृ
ढ़ हो बैठे जब इङ्गलिस्तान की लड़ाई का खटका
मिटगया तब वे आपस में लड़ने लगे उसी समय एग
बर्ट नामी एक मनुष्य जो सेकसनी की ज़ाति में ब
ड़ा नामी था उसने अपनी शूर बीरता से सम्पूर्ण सूबे
अपने बस में कर लिये उस समय के बुद्धिवान मनु
ष्यों ने इकट्ठे होकर सन् ८२७ ई० में एगबर्ट को
पहला बादशाह मुकर्रर किया इससे कई वर्ष पहले
प्रभू ईसामसीह का मत जारी होगया था जो कि म-
हात्माओं को और मतों की अपेक्षा अधिक आपत्तों
में सहिष्णुता और धीरज की शिक्षा करता है और
दुःख और कष्ट की दशा में दाढस और धैर्य्य बं ध
राता है उन दिनों तक लोगों ने अपनी अभाग्यता
से सन्तोष देश को नमाना वरन मूर्ख अभिमानी,
अज्ञानता के समुद्र में डूबे रहे औलिया औं को ऐसा
बुज़ुर्ग और बड़ा समझते कि ईश्वर को भी भूल जा-
ते और उनका यह निश्चय था कि जो किसी मनुष्य
से प्रजा के क़ायदे के बरखिलाफ़ किसी प्रकार का
अपराध होता तो वहाँ की भेंट देने से उसका दोष
निवृत्त होजाता परंतु ऐसे मूर्खता के समय में क-
ई बुद्धिवान अक़लमंद मनुष्य उस टापू में जन्मे
उन में से एक धार्मिकने ऐसी कीर्ति पाई कि चार्लि
मेन नामी फ्रांस के भूपति के दरबार में यद्यपि

सम्पूर्ण संसार के अच्छे बुद्धिवान प्रतिष्ठित जन रहते थे तो भी उस को उन सबने श्रेष्ठ समझ कर गुरु बनाया पूर्व काल में इराक़ और ईरान के अधिकारी बराबर सम्पूर्ण पूर्व के राज्य पर आज्ञा करते रहे उनबादशाहों के बिगड़ने से रूम का राज्य चमका उस के पीछे उस राज्य के बड़े २ बादशाह भी नाश को प्राप्त हुआ और कई सौ वर्ष के पीछे वह बड़ा बसा हुआ राज्य भी जो विद्या और चतुराई और निपुणाई में संपूर्ण संसार के भीतर अद्भुत और मनोहर था आलस्य और भोग बिलास के कारण बिगड़ने और घटने लगा अंत को सब नष्ट होगया उस समय से नवारीख में अन्तर पड़गया और पीछे कोई ऐसा बड़ा राज्य न हुआ कि सम्पूर्ण विलायत उस के अधिकार में आई हो रूमियों के राज्य के अस्त होते ही एक अंधेरी रात सी छागई परंतु क्रम २ से वह भी बीत गई अपने २ मत के अनुसार लोगों में धर्मनिष्ठा होती चली और विद्या और गुण ने नये सिरे से चमत्कारी पाई और लड़ाई की रीतें बारूत के बनने से और ही प्रकार की होगई और कुतुबनुमा की ईजाद से हर एक देश की यात्रा सुगम हुई और इसी से बुद्धि विद्या और गुण की वृद्धि हुई और बादशाहों को अच्छी २ उत्तम लाभें दृष्टि पड़ने लगीं कि प्रजा को सुख देने से ऐसा होता है और छापे की युक्ति के निकलने से शीघ्रही विद्या का समुद्र उमगा ॥

बादशाहों का वर्णन

शाह एगबर्ट

इसी बादशाह ने पहले इङ्गलिस्तान का राज्य स्थापित किया और वह उस समय में बड़ा बुद्धिवान् पण्डित और ज्ञाता था उस के राज्य गद्दी पर बैठने ही **डेनमार्क** वासी डेन जाति के लोग जहाज़ों में सवार होकर युद्ध की इच्छा पर आये महाराजाधिराज **एगबर्ट** ने सुनते ही तुरंत सेना साथ ली और जहाज़ों से उतरते हुए शत्रुओं को मारकर हटा दिया और पराजित होकर जहाज़ों को लौटा लेगये परंतु कभी२ अवसर पाकर आते रहे और ऐसे कठोर और दुष्ट स्वभाव थे कि किसी स्त्रीपुरुषबच्चे लड़के वालों पर दया न करते और तुरंत मारडालते **इङ्गलिस्तान** का देश अब तक **डेन** जाति के आने की अवाई से डरता था और महाराजाधिराज **एगबर्ट** नेजो युद्ध विद्या में बड़े चतुर और सावधान थे राजगद्दी होने के ११ वर्ष पीछे मृत्यु पाई **इङ्गलिस्तान** को इन का बड़ा शोक हुआ और इतिहास कर्त्ता ने उन की मृत्यु के ८३८ ई० सन् लिखे हैं और उन के मरने के पीछे **अथलवुल्फ** नामी राज कुवार को राजगद्दी प्राप्त हुई ॥

शाह अथलवुल्फ

इस बादशाह का थोड़ा समय राज्य के कामों में और बहुत सा ईश्वर के ध्यान में व्यतीत हुआ उसके समय में **डेन** जाति के लोग सदैव चढ़ाई करते रहे

और दो बेर बादशाही सेना से हार भी पाई परंतु अपने को एक **थेनट** नाम टापू में जो **इङ्गलिस्तान** के पास है मज़बूत रक्खा और वहाँ से कई बेर इतनी भीड़ साथ लेके चढ़े कि सम्पूर्ण **इङ्गलिस्तान** पर उन के राज्य हो जाने का संदेह होगया परंतु सब भांति ईश्वर की दया से क्षेम कुशल रही बादशाह ने अपनी भक्ति से अपने राज्य का दशवां हिस्सा मसीह के परिचारकों को दिया और अपने जीतेजी **अथलबलड** और **अथलबर्ट** दोनों बेटों को युबराज किया और सन् ८५७ ई० में मृत्यु पाई ॥

शाह अथलबलड शाह अथलबर्ट

इन दोनों बादशाहों का राज्य कुछ स्थिर न रहा पहले **अथलबलड** ने कि बहुत ही कुचाली था और पीछे **अथलबर्ट** ने जो उस की अपेक्षा कुछ बुद्धिवान था दोनों ने मृत्यु पाई सन् ८६६ ई० में राजसिंहासन उन के तीसरे भाई **अथलरड** को प्राप्त हुआ ॥

शाह अथलरड

यह बादशाह युद्ध कर्म में बड़ा चतुर था **डेन** ज़ाति के लोग कई बेर ज़ोर बांध २ के देश पर चढ आये परंतु बादशाह ने अपनी युक्ति से बड़ा दृढ़ प्रबन्ध रक्खा और शत्रुओं को अधिकार न दिया अन्त को उन्हों ने **नाटिनघम** के चकले में जो **इङ्गलिस्तान** के इलाक़े में है अपनी सेना ठहराई बादशाह ने वहाँ से भी उन को निकाल देना चाहा कि संयोग से उस के एक बड़ा भारी घाव लगा और

वह मरगया और उस के छोटे भाई अलफ़र्ड ने राज गद्दी पाई +

शाह अलफ़र्ड

इस बादशाह ने देश की भेज का बन्दोबस्त धर्म और न्याय पूर्वक किया और अपनी भेज का पैसा यथा योग्य प्रजा से लिया और सेना और देश का ख़र्च जुदा और दान पुण्य का ख़र्च अलग रक्खा और ऐसाही निबन्ध अपनी अवस्था के मध्ये भी किया कि दिन रात के तीन भाग बराबर ठहरा लिये थे एक में सोना और खाना और सैर करना और दो भागों में देश के बन्दोबस्त का लिखना पढ़ना और ईश्वराराधन करना उन दिनों तक घंटा घड़ियाल आदि कुछ न बनी थी इसलिये मोम की बत्तियाँ बराबर एकसी जलती रहती कि समय के बिभाग में अन्तर न पड़ने पावे यह प्रकृति और युक्ति बादशाह ने किसी से न सीखी थी बरन ईश्वर की देन से अपने आप निकाली थी राज्य की रक्षा बहुत अच्छी भांति से की और विशेष करके इङ्गलिस्तान की प्रजा के लिये बहुत श्रेष्ठ रीति निकाली कि अपने २ तुल्य और अपनी २ जाति में सब न्याय पावते अर्थात् कई अच्छे २ पण्डित चुने हुए मनुष्य पञ्चायत की रीति पर और २ नियत किये निदान बड़े आनन्द में दिवस व्यतीत होने लगे उन प्रशंसाओं के सिवाय देश के सुख चैन और अपनी नामवरी के लिये सम्पूर्ण राज्य भर की लूट मार और डकैती आदि उपाधियों को एक साथही मिटा दिया ऐसा चतुर

अमलदारी जुदे २ सरदारों के अधिकार में थी परन्तु आवश्यकता के समय सब इकट्ठे होकर सम्पूर्ण सूबों में से एक बुद्धिवान मनुष्य को छांट के पदवी और अधिकार दिया करते थे कि प्रजा का सुख चैन और लड़ाई झगड़ा सब उसकी सम्मति पर नियत था उनके यहां पैदल सेना बहुत थी और इसके सिवाय आवश्यकता पर बहुत से सवार भी लासक्के थे और रथ जिन के दोनों ओर पैने और लम्बे खड्ग धुरियों में दृढ़ता से बंधे हुए रहते लड़ाई में लाते थे जो मनुष्य ऐसे रथ को चलाता वह बड़ी चतुराई से भाला बर्छी फेंकता चलाजाता और जब उतरा चाहता तुरन्त धरती पर कूदता और फिर रथ पर सवार होजाता ॥

और उनके मत का आचार्य्य देश की अमलदारी में बहुत अधिकार रखता और प्रतिष्ठा पाता और डूडू जाति के लोग अर्थात् उन के मज़हब के गुरू सम्पूर्ण प्रजा पर पूर्ण अधिकार रखते थे और उनके मध्ये लिखा है कि लोगों से अगले जन्म के इक़रार पर ऋण लेते जङ्गल खड्ड और वृक्षों के खोडरों में अपना निर्वाह करते और केवल फल फलारी खाते और पानी पीते और उनके तीन भेद थे पहले में भाट जो शूरवीरों और वंशावली का वर्णन किया करते थे दूसरे में बाटिस जो गन्धर्वविद्या और मत धर्म के वक्ता थे और दुलमगेव की बातों के बर्णन से लोगों को धोखा देते थे तीसरा भेद अगले दोनों भेदों से बढ़कर था और वह अपने मत धर्म में बहुत सावधान रहता और उन की प्रतिष्ठा और इमानदारी के बड़प्पन के कारण

कई स्त्रियां उन भेदों के लिये रक्खी गईं और वे
ड्रूइड उन दिनों इङ्गलिस्तान के लोग मज़हब में
ऐसे बुतपरस्त थे कि मनुष्यों को प्रतिमाओं के ऊप
र नौछावर करके बलिदान करते थे और लिखा है
कि खाने पीने में ऐसी मावधानी रखते थे कि एक
सौ बीस वर्ष की अवस्था तक कुछ वृद्धावस्था न आपी

निदान बहुत काल तक यही दशा रही जब कि
प्रभु ईसामसीह के जन्म से छप्पन बर्ष पहले रूम
के महाराजाधिराज क़ैसर ने संपूर्ण पृथ्वी को अपने
क़बूज़े में किया और सेना साथ लेकर इङ्गलिस्तान
को आया तब इङ्गलिस्तानियों ने उसका ऐश्वर्य्य औ
र प्रताप देखकर आधीनी अङ्गीकार की और कई म-
नुष्य ओलमें दिये फिर महाराजाधिराज क़ैसर अप-
नी राजधानी को उलटा चलागया परंतु उन के उपद्र
व उठाने के कारण फिर आया और उन्हें बस में क-
रके उनसे नाल बन्दी लेता रहा और इसी भांति ब-
हुत समय बितीत हुआ अन्त को महाराजाधिराज
वैलनटीनियन जो क़ैसर के घराने में से था
उसने अधिकार के घटने और दूर देश के कारण
अपनी सेना वहांसे उठाली और इङ्गलिस्तान
के देश को एक साथ छोड़ दिया महाराजाधिराज
क़ैसर के आने से ले रूमियों के हाथ से इस दे
श के छूटने तक अनुमान चारसौ वर्ष के व्यती
त हुए थे कि पिकट और स्काट अर्थात स्काट
लन्द देश के निवासी जो इङ्गलिस्तान के उत्त
र में हैं वे रूमियों के राज्य के उठजाने के पीछे

इङ्गलिस्तान को खाली पाकर अन्याय और लूट मार करने लगे इङ्गलिस्तानियों ने जब कि बहुत काल तक सब भांति से दुःख और कष्ट सहा तब लाचार होकर रूमके बादशाह से आधीनता सहित सहायता मांगी उन की अर्ज़ी की इबारत जो याद रखने के योग्य थी यह है कि हमारा कहीं बचाव नहीं क्योंकि निर्दयी पिकट पीछा करके समुद्र के किनारे तक आते हैं और वहां से समुद्र की प्रबलधार के कारण हम आगे नहीं बढ सकते इसलिये अब हम को केवल दो प्रकार की मृत्यु के सिवाय और कुछ दृष्टि नहीं आता यातो खड्ग से मारे जांय वा समुद्र की लहर में डूब मरें इस अर्ज़ी के जवाब के आने न आने की कुछ ठीक नहीं है परंतु यह प्रसिद्ध है कि वहां से कुछ कुमक न मिली और सहायता न पहुंची इसकारण से जाना जाता है कि जो मूढजन सम्पूर्ण देश को उजाड़ते और लूटते थे उन के उपद्रव के कारण उन दिनों रूम का बादशाह कुछ सन्देह और सोच बिचार में था जब इङ्गलिस्तानी बहुत घबराये तब सेकसनी के निवासी जो जरमनी देश में शूरवीरता और बल पराक्रम और युद्ध कर्म में बड़े निपुण थे उन से सहायता चाही सेकसनी के वासियों ने उन की बात अंगीकार करके जहाज़ों पर पन्द्रह सौ मनुष्य चढ़ा के इङ्गलिस्तान को भेजे उन्होंने शीघ्र सहायक होकर वहां के निवासियों से देश छुड़ालिया निदान वह तो झगड़ा चुकगया आगे को अद्भुत दृष्टान्त

यह है कि सेकसनी के लोगों ने इस उपजाऊ स-
एड को देखकर और अपनी धरती को बुरी और खा-
री जान कर छोड़ देना विचारा और होले २ वंही बा-
स किया और इङ्गलिस्तान को दबाकर आप दृ
ढ़ हो बैठे जब इङ्गलिस्तान की लड़ाई का खटका
मिटगया तब वे आपस में लड़ने लगे उसी समय एग
बर्ट नामी एक मनुष्य जो सेकसनी की ज़ाति में ब
ड़ा नामी था उसने अपनी शूर बीरता से सम्पूर्ण सूबे
अपने बस में कर लिये उस समय के बुद्धिवान मनु
ष्यों ने इकट्ठे होकर सन् ८२७ ई० में एगबर्ट को
पहला बादशाह मुकर्रर किया इससे कई वर्ष पहले
प्रभू ईसामसीह का मत जारी होगया था जो कि म-
हात्माओं को और मतों की अपेक्षा अधिक आपत्तों
में सहिसुता और धीरज की शिक्षा करता है और
दुःख और कष्ट की दशा में दाढस और धैर्य्य बंध
वाता है उन दिनों तक लोगों ने अपनी अभाग्यता
से सन्तोष देश को नमाना वरन मूर्ख अभिमानी
अज्ञानता के समुद्र में डूबे रहे औलिया ओं को ऐसा
बुज़ुर्ग और बड़ा समझते कि ईश्वर को भी भूल जा-
ते और उनका यह निश्चय था कि जो किसी मनुष्य
से प्रजा के क़ायदे के बरखिलाफ़ किसी प्रकार का
अपराध होता तो वहाँ की भेंट देने से उसका दोष
निवृत होजाता परंतु ऐसे मूर्खता के समय में क-
ई बुद्धिवान अक़लमंद मनुष्य उस टापू में जन्मे
उन में से एक धार्मिकने ऐसी कीर्ति पाई कि चार्लि
मेन नामी फ्रांस के भूपति के दरबार में यद्यपि

सम्पूर्ण संसार के अच्छे बुद्धिवान प्रतिष्ठित जन रहते थे तो भी उस को उन सबने श्रेष्ठ समझ कर गुरु बनाया पूर्व काल में इराक़ और ईरान के अधिकारी बराबर सम्पूर्ण पूर्व के राज्य पर आज्ञा करते रहे उनबादशाहों के बिगड़ने से रूम का राज्य चमका उस के पीछे उस राज्य के बड़े २ बादशाह भी नाश को प्राप्त हुए और कई सौ वर्ष के पीछे वह बड़ा बसा हुआ राज्य भी जो विद्या और चतुराई और निपुणाई में संपूर्ण संसार के भीतर अद्भुत और मनोहर था आलस और भोग बिलास के कारण बिगड़ने और घटने लगा अंत को सब नष्ट होगया उस समय से तवारीख़ में अन्तर पड़गया और पीछे कोई ऐसा बड़ा राज्य न हुआ कि सम्पूर्ण विलायतें उस के अधिकार में आई हों **रूमियों** के राज्य के अस्त होते ही एक अंधेरी रात सी छागई परंतु क्रम २ से वह भी बीत गई अपने २ मत के अनुसार लोगों में धर्मनिष्ठा होती चली और विद्या और गुण ने नये सिरे से चमत्कारी पाई और लड़ाई की रीतें बारूद के बनने से और ही प्रकार की होगईं और क़ुतुबनुमा की ईजाद से हर एक देश की यात्रा सुगम हुई और उसी से बुद्धि विद्या और गुण की वृद्धि हुई और बादशाहों को अच्छी २ उत्तम लाभें दृष्टि पड़ने लगीं कि प्रजा को सुख देने से ऐसा होता है और छापे की युक्ति के निकलने से शीघ्रही विद्या का समुद्र उमगा ॥

बादशाहों का वर्णन

शाह एगबर्ट

इसी बादशाह ने पहले इङ्गलिस्तान का राज्य स्थापित किया और वह उस समय में बड़ा बुद्धिवान् पण्डित और ज्ञाता था उस के राज्य गद्दी पर बैठते ही **डेनमार्क** वासी डेन जाति के लोग जहाज़ों में सवार होकर युद्ध की इच्छा पर आये महाराजाधिराज **एगबर्ट** ने सुनते ही तुरंत सेना साथ ली और जहाज़ों से उतरते हुए शत्रुओं को मारकर हटा दिया और वे पराजित होकर जहाज़ों को लौटा लेगये परंतु कभी२ अवसर पाकर आते रहे और ऐसे कठोर और दुष्ट स्वभाव थे कि किसी स्त्रीपुरुष वृद्ध लड़के वालों पर दया न करते और तुरंत मारडालते **इङ्गलिस्तान** का देश अब तक **डेन** जाति के आने की अवाई से डरता था और महाराजाधिराज **एगबर्ट** ने जो युद्ध विद्या में बड़े चतुर और सावधान थे राजगद्दी होने के ११ वर्ष पीछे मृत्यु पाई **इङ्गलिस्तान** को इन का बड़ा शोक हुआ और इतिहास कर्त्ता ने उन की मृत्यु के ८३८ ई० सन् लिखे हैं और उन के मरने के पीछे **अथलवुल्फ** नामी राजकुमार को राजगद्दी प्राप्त हुई ॥

शाह अथलवुल्फ

इस बादशाह का थोड़ा समय राज्य के कामों में और बहुत सा ईश्वर के ध्यान में व्यतीत हुआ उसके समय में **डेन** जाति के लोग सदैव चढ़ाई करते रहे

और दो बेर बादशाही सेना से हार भी पाई परंतु अपने को एक **थेनट** नाम द्वीप में जो **इङ्गलिस्तान** के पास है मज़बूत रक्खा और वहाँ से कई बेर इतनी भीड़ साथ लेके चढ़े कि सम्पूर्ण **इङ्गलिस्तान** पर उन के राज्य हो जाने का संदेह होगया परंतु सबभांति ईश्वर की दया से क्षेम कुशल रही बादशाह ने अपनी भक्ति से अपने राज्य का दशवां हिस्सा मसीह के पुरोहितों को दिया और अपने जीतेजी **अथलबलड** और **अथलबर्ट** दोनों बेटों को युबराज किया और सन ८५७ ई० में मृत्यु पाई ॥

शाह अथलबलड शाह अथलबर्ट

इन दोनों बादशाहों का राज्य कुछ स्थिर न रहा पहले **अथलबलड** ने कि बहुतही कुचाली था और पीछे **अथलबर्ट** ने जो उस की अपेक्षा कुछ बुद्धिवान था दोनों ने मृत्यु पाई सन ८६६ ई० में राजसिंहासन उन के तीसरे भाई **अथलरड** को प्राप्त हुआ ॥

शाह अथलरड

यह बादशाह युद्ध कर्म में बड़ा चतुर था **डेन** ज़ाति के लोग कई बेर ज़ोर बांध २ के देश पर चढ़ आये परंतु बादशाह ने अपनी युक्ति से बड़ा दृढ़ प्रबन्ध रक्खा और शत्रुओं को अधिकार न दिया अन्त को उन्हों ने **नाटिनघम** के चकले में जो **इङ्गलिस्तान** के इलाक़े में है अपनी सेना ठहराई बादशाह ने वहाँ से भी उन को निकाल देना चाहा कि संयोग से उस के एक बड़ा भारी घाव लगा और

वह मरवाया और उस के छोटे भाई अलफ़र्ड ने राज गद्दी पाई +

शाह अलफ़र्ड

इस बादशाह ने देश की भेज का बन्दोबस्त धर्म और न्याय पूर्वक किया और अपनी भेज का पैसा यथा योग्य प्रजा से लिया और सेना और देश का ख़र्च जुदा और दान पुण्य का ख़र्च अलग रक्खा और ऐसाही निबन्ध अपनी अवस्था के मध्ये भी किया कि दिन रात के तीन भाग बराबर ठहरा लिये थे एक में सोना और खाना और सैर करना और दो भागों में देश के बन्दोबस्त का लिखना पढ़ना और ईश्वराराधन करना उन दिनों तक घंटा घड़ियाल आदि कुछ न बनी थी इसलिये मोम की बत्तियाँ बराबर एकसी जलती रहतीं कि समय के बिभाग में अन्तर न पड़ने पावे यह प्रकृति और युक्ति बादशाह ने किसी से न सीखी थी बरन ईश्वर की देन से अपने आप निकाली थी राज्य की रक्षा बहुत अच्छी भांति से की और विशेष करके इङ्गलिस्तान की प्रजा के लिये बहुत श्रेष्ठ रीति निकाली कि अपने २ तुल्य और अपनी २ जाति में सब न्याय पावते अर्थात् कई अच्छे २ पण्डित चुने हुए मनुष्य पञ्चायत की रीति पर और २ नियत किये निदान बड़े आनन्द में दिवस व्यतीत होने लगे उन प्रशंसाओं के सिवाय देश के सुख चैन और अपनी नामवरी के लिये सम्पूर्ण राज्य भर की लूट मार और डकैती आदि उपाधियों को एक साथही मिटा दिया ऐसा चतुर

और सावधान था कि प्रत्येक काम में उत्तम पद्धती वालों पर दया दृष्टि रखता ईंट बनाने की युक्ति निकाल के अपना निज महल ईंट का बनवाया कि वह उस समय के लकड़ी के स्थानों की अपेक्षा बहुत दिनों तक ठहरा और सब प्रकार की आपत्तियों और विघ्नों से बचा रहा और डेनमार्क वालों से जल थल की ५६ लड़ाईयां ऐसी लड़ा कि इङ्गलिस्तान की प्रजा उनसे निर्भय होगई इन अच्छे२ चाल चलनों और कामों से बादशाह सब छोटे बड़ों के मन को प्यारा लगता था इस के सिवाय युद्ध विद्या और नवीन क़ानूनों की रचना में बड़ा नामी और प्रसिद्ध हुआ और बहुत भला मनुष्य था ५५ बर्ष की अवस्था पाकर सन् ९०० ई० में इस अनित्य संसार को त्याग परलोक को सिधारा और उस के पीछे ॥

शाह एडवर्ड पहला
और
शाह अथलस्टन।
और
शाह एडमण्ड पहला
और
शाह एडरेड
और
शाह एडवी
और
शाह एडगर

इन सम्पूर्ण बादशहों ने अपनी २ बारी से थोड़े २ दि-
न राजपद भोगा फिर महात्मा लोगों के बरदान से
बादशाह शाह एडवर्ड दूसरे को राजगद्दी मिली ॥

शाह एडवर्ड दूसरा

इस बादशाह के समय में बादशाह की मृत्यु के
सिवाय कोई अद्भुत वृत्तान्त लिखने योग्य नहीं हो-
र वह यह है कि एक दिन बादशाह **करफगढ़**
के पास जिस में उन की सास रहती थी आखेट हो-
र सैर करने गये थे यद्यपि उन के साथ में कुछ
भीड़ न थी परंतु बादशाहने उस गढ़ के निकट पः-
हुंच कर सास से मिलना चाहा और साधारण से
वहाँ चले गये और प्यासे हो पानी मागा जब कि पा
नी का प्याला हाथ में लिया उन की सास के एक
नौकरने अपनी मालकनी के इशारे से बादशाह
की पीठ में पेशकबज़ मारी तब बादशाहने दे-
खा कि छुरी हड्डी को फोड़कर पार निकल गई
और जीव से मोस जाता हूं शीघ्र सवार होकर घोड़ा
फेंका और राजधानी का मार्ग लिया घाव में से ब-
हुत सा रुधिर बहा अशक्त होके घोड़े पर से गिरा
एक पांव रकाब में अटका रहा घोड़ा जो अधाधुं
ध दौड़ा जाता था इस संकट में बादशाह के प्राण
निकल गये और शाह **अथलरड** दूसरे को राज
गद्दी प्राप्त हुई ॥

शाह अथलरड दूसरा

इस अज्ञानी कायर बादशाह के समय में डेन
जाति के लोग जो पहले से लड़ते रहते थे और

अलफ़्रेड और उस के पीछे जो अच्छे २ बादशाह हु-
ए उन की बुद्धिवानी और प्रताप के कारण बहुत का-
ल तक इङ्गलिस्तान में न आसके थे और फ्रांस
देश में बसे थे उन्होंने आकर फिर अपना बल बाँ-
धा इस निर्बल असमर्थ बादशाह ने सेना और प्रजा
को ज़ोर तो न बंधाया परंतु शत्रुओं को बहुत सा
रुपया देकर देश बचाया इस अयोग्य और पोच युक्ति
से डेन जाति वालों ने चले जाने के पीछे फिर आ-
रबाया और बादशाह से बहुत सा रुपया लिया फि-
र बादशाह ने उन के चले जाने के बाद निर्दयता से
आज्ञा दी कि डेन जाति के जो लोग हाथ लगें ढूंढ़ २
कर मारो आज्ञाकारियों ने वैसाही किया डेन मा-
र्क के बादशाह ने यह वृत्तान्त सुन सेना साथ ले
इङ्गलिस्तान के देश को अपने अधिकार में कि-
या शाह अथलरड यह हाल देखकर अपने ब-
हिनोई रिचर्ड के पास चला गया जो नारमन्दी
के देश का ऊमूक अर्थात सूबा था ॥

शाह स्वीनडेन
शाह एडमण्डआयरनसैड

डेनमार्क का बादशाह स्वीन सन १०१४ ई०
में राजगद्दी पर बैठा परंतु थोड़े दिन जिया उस के
मरने के पीछे इङ्गलिस्तान के प्रतिष्ठितजनोंने
शाह अथलरड को फिरबुलाकर सिंहासन पर
बैठाया उसने कायरता और कुचाल प्रकट करी
और शीघ्रही इस संसार को त्याग काल वस हुआ

शाह स्वीन का पुत्र कैन्यूट पिता की भांति सेना सज के चालीस जङ्गी जहाज़ साथले डेन को आया उस से और शाह एडमण्डआयरनसैड से जो अथलरड के घराने का राज्य सत्राधिकारी था सामना हुआ और उसने भी अपनी सेना सज्जित की दोनों ओर के राज्याधिकारियोंने पहले के शत्रुभाव को छोड़कर परस्पर में सलाह की कि दोनों मिलकर राज्यमें साझी रहें निदान आधा २ राज्य बाँटकर अपना २ अधिकार जमाया एडमण्डआयरनसैड कैन्यूट के वह काने से थोड़े दिनों में अपने साथियों के हाथ से मारागया और कैन्यूट ने सन १०१७ ई० में सम्पूर्ण देश पर अधिकार पाया ॥

शाह कैन्यूट

उस समय में इस बादशाह की समान कोई ज्ञानवान और बुद्धिवान मनुष्य न था उसकी शूरवीरता और साहस से और पीछे करके धार्मिक और नेष्ठावान होजाने से दरबारी लोग प्रत्यक्ष में ऐसी तारीफ़ और प्रशंसा करते थे मानो सम्पूर्ण संसार की प्रभुता बादशाह के हाथ में है बादशाह इन खुशामदियों की बात को ख़ूब जानता था एक दिन उनको यह चमत्कार दिखाकर ताड़ना की कि चौकी बिछाकर समुद्र के तट पर आबैठा और ज्वार भाटे के आने के समय अज्ञानियों की भांति समुद्र से पुकारकर कहा कि ऐ समुद्र तू हमारा आज्ञाकारी है चैन से आगे मत बढ़ियो फिर जान बूझ

कर कुछ देर और बैठा रहा इस अन्तर में ज्वारभाटे की लहर ने चारों ओर से बादशाह को घेर लिया तब खुशामदियों से कहा कि प्रभु का शब्द ईश्वर ही के योग्य है जिस की आज्ञा सम्पूर्ण संसार एथ्वी समुद्र आदि मानते हैं डेन जाति से जो लड़ाई दो सौ वर्ष से हो रही थी इस बादशाह के राजगद्दी पर बैठते ही सब मिट गई बादशाह ने न्याय नीति से सब का पालन करके इङ्गलिस्तान की प्रजा को सुख दिया बहुधा डेनमार्क के राज्याधिकारियों और नौकरों को वहाँ से उठा दिया जब कि उस बादशाह के सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध हुए और कहीं शत्रु बाक़ी न रहा तब संसार से हाथ उठा लिया जितनेही लोग प्राणी कि शत्रुओं के हाथ से मारे गये थे उन का परलोक सुधरने के लिये एक निराला मन्दिर बनवाया ईश्वरसे ध्यान लगाया सुशीलता के कारण यह बादशाह सब को प्यारा लगता था और उस के ऐश्वर्य्य और तेज प्रताप से सब डरभी मानते थे राजपदवी से ९९ वें वर्ष नब्बे वर्ष की अवस्थापाकर सन १०४० ई० में बादशाह परलोक को सिधारा और उस के पीछे हरल्ड नाम राजकुमार को राजगद्दी मिली ॥

शाह हरल्ड पहला
और
शाह हारडी के नूट

शाह हरल्ड पहला बादशाह हुआ फिर उस का भाई शाह हारडी के नूट डेनमार्क से आया और

सम्पूर्ण जनों ने उसको राज्य का अधिकारी निश्चय क
रके प्रसन्नता पूर्वक राजगद्दी पर बैठाया परन्तु उस
का राज्य अन्याय और अधर्म से थोड़े दिन रहा इसी
अंतर में अङ्गरेज लोग उससे ऐसे नाराज़ हुए कि
डेन जाति का सम्पूर्ण अधिकार उठादिया और स
कसनी के वासी अथलरड के पुत्र एडवर्ड नामी
को राज तिलक किया और वे दोनों सन १०४२ ई०
तक मृत्यु को प्राप्त हुए ॥

शाह एडवर्ड तीसरा

इन सब राज्यों की उलट पलट के पीछे इस बा
दशाह का राज्य बहुत अच्छा हुआ इस ने न्याय नी
ति से डेन जाति और सकसन और अङ्गरेजों
को बराबर एक सा रक्खा इन जातों में आपस के
भीतर ऐसा स्नेह बढ़ा कि तनकभी मनों में अंतर
न रहा यह बादशाह डेन जाति के लोगों से ऐसा
मेल मिलाप रखता था कि उन्हों ने इसे महात्मा
प्रसिद्ध किया इस बादशाह ने कई वर्ष इस अनि
त्य संसार से निरपेक्ष होकर ईश्वर में ध्यान लगा
या और राज्य के बढ़ाने में भी चित्त दिया राजगद्दी
परबैठने से २५ वर्ष पीछे ६५ वर्ष की अवस्था पाक
र सन १०६६ ई० में मृत्यु पाई यद्यपि कहते हैं कि अ
पने नाते दार ड्यूकविलयम नारमन्दी से कहा
था कि मेरे पीछे तुम राज्य करना परंतु उस के बसी
यतानामे अर्थात् मरण पत्र से कुछ पाया नहीं जा
ता समह एडवर्ड के मरने पीछे हरल्ड नामी रा
जकुमार ने जब किसीको राज्य का अधिकारी न देख

तब अपने को बादशाह ठहराया और सब छोटे बड़ों ने उस का घराना बड़ा समझकर उसको राज सिंहासन पर बैठाया ॥

शाह हरल्ड दूसरा

यद्यपि यह बादशाह शूरवीरता और न्याय नीति में सराहने के योग्य था परंतु बादशाही करने से न था और राज्य का सुख न भोगने पाया कि **ड्यूक विलियम नारमन्दी** जो शाह एडवर्ड के चचा का बेटा था वह इस के राज गद्दी पर बैठने के समाचार पाकर अपना हक़ राज्य पर जताने के लिये सौ जंगी जहाज़ सजकर युद्ध करने आया दैव संयोग से जहाज़ से उतरने के समय धरती पर गिर पड़ा अपशकुन की शान्ति के लिये साथ के सरदारों ने कहा धन्यवाद आपने निस्संदेह देश को बिजय किया क्योंकि इस पृथ्वी पर आप के चरण कमल पड़े और इस भूमि के भाग्योदय हुए **नारमन** की सेना ने जो साठ सहस्रथी शीघ्र **सेक्स** के इलाक़े में अपने डेरे डाले शाह **हरल्ड** भी अपनी थोड़ी सेना सज कर सामने हुआ **ड्यूक नारमन्दी** ने संदेसा भेजा कि **इङ्गलिस्तान** के राज्य पद से हाथ धोओ और किनारा पकड़ो नहीं तो आप सन्मुख आकर हमसे युद्ध कीजिये बादशाह ने अंगीकार न किया और प्रति उत्तर कहला भेजा कि ईश्वर हमारा तुम्हारा झगड़ा जलदी निपटा देगा उसी रात से दोनों ओर की सेना के डेरे आमने सामने खड़े हुए और दिन निकलने की बाट देख रहे

ये कि इतने में सूर्योदय हुआ **ड्यूकनारमन्दी** ने अपनी दो पंक्ति प्यादों की आगे और एक पंक्ति पिछली सवारों की रक्खी जिस में आप आज्ञा करताथा इस भांति तीन पंक्ति बांधकर आगे बढ़ा लड़ाई कीआदि में दोनों ओर से बड़ा भारी युद्ध मचा अंत को **नारमन्दी** की सेना पीछे को हटी **ड्यूकनारमन्दी** ने जब अपनी सेना की हार देखी छटेवा सेना साथ ले आ पकुमक पर पहुंच सब को धीरज बंधाया इस सहायता के पहुंचने से **इङ्गलिस्तान** की सेना को कुछ ढबाया हुआजाना और कुछ हट देखा धोखा देकर अपनीसेना पीछे को हटाई और **इङ्गलिस्तानियों** ने उसका पीछा किया **ड्यूक** ने थोड़ासा मैदान दिया और अपनी सेना को लौटा कर एक साथ ऐसा हल्ला किया कि सैकड़ों **इङ्गलिस्तानी** मारेगये तो भी राह **हरल्ड** की शूरबीरता से सेना ने फिर सम्भलकर साहस बांधा कि युद्धभूमि में से पैर पीछे को न उठावें ईश्वर ही बलवान है शूरबीर **हरल्ड** और उस के दो भाई बाण के लगने से मारे गये सेना सरदारों के मारे जाने से उदास होकर भागी और **नारमन** की फौज पीछे लगी **हेस्टिङ्गस** की लड़ाई जिससे **एङ्गलोसेक्सन** का राज्य जाता रहा इस भांति समाप्त हुई दोनों ओर की शूरवीरता और साहस से यह लड़ाई बहुत बड़े राज्य के योग्य थी कि जिस में एक साथ बीस सहस्र अङ्गरेज़ और पंद्रहसहस्र दूसरी ओर के मारेगए ईश्वर की देन से **नारमन** की विजय होने से **इङ्गलिस्तान** में नये घराने की बादशाह

न बैठी ॥ ॥ ॥ ॥

शाह विलियम विजयी

सच तो यह है कि इस बादशाह को चतुर सेनाधिपति शूरवीर और सुभट गिनना चाहिये क्योंकि साहस और बल उस में अधिक था आगम विचार और बुद्धिवानी और सावधानी जैसी कि चाहिये वैसी ही उस में थी सेना के लिये यद्यपि बड़ी २ कठिन आज्ञा देता और भय पूर्वक आधीनी में रखना था परंतु यह भी चाहता था कि मुरु से प्रसन्न रहे यह बादशाह बालक पन से सदैव लड़ाईयों की दौड़ धूप में रहा और जो अच्छे २ हुनर और गुण उसने अपनी बुद्धिवानी से सीखे थे उन को आज़माइश करके पक्का किया और उस समय की शस्त्र विद्या में भी बड़ा चतुर था और साहस से अनेक प्रकार की कठिनाइयां झेल सकता था और ऐसा पराक्रमी और बलवान था कि उन दिनों में कोई मनुष्य उसका सामना नहीं कर सका सो इसी कारण उन दिनों की लड़ाइयों में अधिक प्रतिष्ठा और नाम पाया इस बादशाह के पराक्रम के विषय में लिखा है कि निज उसके धनुष पर उस के सिवाय कोई मनुष्य चिल्ला नहीं चढ़ा सकता था उस का भाग्योदय केवल लड़ाई में ही नहीं हुआ वरन दरबार और कचहरी के भी ऐसे बड़े २ काम अपनी युक्ति से संवारे जो औरों की बुद्धि में बहुत मुश्किल और कठिन थे और जितनी कठिनाइयां उन में दीख पड़ती थीं शाह विलियम ॥

उन से न घबराता और जो युक्ति जी में विचारता उ-
से शीघ्र और दृढ़ता से पूरी करता उस की बुद्धि ऐसी
तीव्र थी कि जिस समय कोई भारी वा कठिन काम
उस के सामुख आता तो उस की बुद्धि उस में अधिक
काम करती और प्रत्यक्ष में ऐसा शूरवीर और सा-
हसी मनुष्य था कि जो सम्पूर्ण संसार में उसका अधि-
कार होता तो वह इस के योग्य था और बड़ा निर्भ
य और निडर था और सदैव आपत्ति और विषय वास
ना से बचा रहा और नाच रङ्ग उस को कभी अच्छा न
लगता प्रजा के लोग तो पहले ही से उस का बड़ा-
दब रखते थे परंतु जब उसे किसी बुरे खोटे कामों
में प्रवृत्त न देखा तब अधिक प्रतिष्ठा और मान्य-
ता की और सुचाल और धार्मिकता ने उस के म-
न को अनेक प्रकार के विघ्नों और क्लेशों से बचा
ये रक्खा और तेज प्रताप के कारण ऐसा विभव
और ऐश्वर्य्य बढ़ा कि सब राज्य भर में उस का आ-
तंक छागया उस की अधिक प्रशंसा यह है कि उस
ने अपनी सम्पूर्ण अवस्था सेना में और उसपर इ
च्छापूर्वक आज्ञा चलाने में व्यतीत की और सिवा
य अपनी बेगम के कभी पराई स्त्री की ओर दृष्टि न
की जिस भांति कि इस बादशाह ने इस बात में
अपनी दृढ़ता और मज़बूती रक्खी इसी तरह अ-
दालत के मुक़द्दमें में प्रजा से जो अहद पैमाने ठ
हराये थे उस में भी अपनी मज़बूती रखता तो
सब बादशाहों से शिरोमणि गिना जाता इस के
सिवाय जो अन्याय उसने प्रजा पर होने दिये वे उस के

गुणों के लाभों से विशेष हानि कारक हुए ॥

इस बादशाह को ऐसा राजमद छाया कि कहने में नहीं आता और निर्दयता और ईर्षा द्वेष आदि गुण उस की प्रकृति में ऐसा समाया था कि बुद्धि से बाहर है परन्तु ऐसी निर्दयता परभी कृपा दृष्टि और गुण ग्राहकता करता था सो न जाने बुद्धिबानी के गुण से था वा सम्पूर्ण लोगों से प्रेम प्रीति रखने के कारण वा चित्त की उदारता से और वह अपने मे निर्बल शत्रुओं को तुच्छ जानता था जैसे एक एडगर अथलिङ्ग नामी राजगद्दी का अधिकारी था उस में इतना बल न था कि राज्य के लिये लड़े सो दिलियप ने भी उस पर कुछ कोप नहीं किया और जहां क्षमा करने में इसने लाभ न देखा वहां अपनी जाति का गुण मकाणित किया और दया और धर्म से रहित था इन अन्य आफामों में कोई २ बात ऐसी कठिन थी कि जो कठिनाइयां पूर्व के अधर्मियों के समय में हुई हों उन से भी बढ़ कर थी इतिहास कर्त्ताओं ने लिखा है कि बादशाह का मन ईश्वर की आराधना में बहुत लगता था सो उस समय का यूजन पाठ श्रद्धा और ईश्वर की भक्ति से रहित था और मेरे मत इस प्रकार पर थे कि अभी पुण्य दान की दृष्टि से देवालय के बनाने की आज्ञा दी उस के पीछे तुरंत देशों की लूट मार का आरंभ किया एक समय ईश्वर का पूजन पाठ कर ने के लिये पालखी मार कर बैठा उस के साथही लोगों के हक हकूक भी छीन लिये अमलदारी करने में उस समय के पिछले

इतिहास कर्त्ताओंने उसकी बहुत तारीफ़ लिखी है सो अवश्य इतनी बात पाई जाती है कि अन्याय करने से आतंक बढ़ता है पर अनीति के काम किस भांति से दृढ़ हो सकते हैं बादशाहों को उचित है कि ऐसी भलाइयों के साथ अपने राज्य को बढ़ावें जिन से प्रजा सुख पावे सो शाह विलियम विजयी में यह योग्यता नहीं थी उसका ऐसा बेढङ्गा चलन था कि जो आईन और क़ानून कि पहले आप मुक़र्रर किये थे सब रद्द कर दिये केवल बटमारी और डकैती के प्रबन्ध में प्रशंसनीय था क्योंकि सम्पूर्ण देश में थाने बैठाये थे और उसकी आज्ञा के बिना पत्ता नहीं हिल सकता था ॥

इस काम का जैसा अच्छा प्रबन्ध बादशाह ने किया सो उस समय में जो सेकसनी का इतिहास वेत्ता था उसके लिखने से भली भांति विदित है कि कोई मनुष्य सोना चांदी लिये हुए सम्पूर्ण देश में फिरा करता कभी हानि न उठाता और बड़े आनन्द में रहता दोषों और अपराधों का दंड बादशाह की आज्ञा के बिना कोई किसी को न देसकता था और किसी की सामर्थ्य नथी कि स्त्रियों को खोटी दृष्टि से देखे परन्तु जब निज उसकी सभाही में अन्याय होता था तो प्रजा के लिये मार्ग का यह प्रबन्ध कुछ नीति की गिन्ती में नथा प्रत्येक राज्याधिकारी अपनी सामर्थ्य भर देश को लूटता और अधर्म करता और बादशाह केवल ऐसे ही अन्यायों पर आना कानी नहीं करता था बरन लूट का माल बांट कर अपने ख़र्च

में उठाता था यद्यपि अपने राज्य और देश की आम दनी के कारण यूरोप के बादशाहों मे अधिक धन वानहुआ परन्तु इतने द्रव्य पर भी सन्तोष न करके महसूल की बढ़ोतरी के लिये सम्पूर्ण ज़िल्ला के त. हसीलदारों को आज्ञा दी कि प्रजा पर जितना अन्याय होसके करें सो उसकी आज्ञानुसार ठौर २ चरतियाँ सदैव नी लाम कीजाती जो कोई अधिक रुपया देते वे अधि. कार पाते और इसी कारण से किसी एक मनुष्य का अधिकार नियत न था बादशाह ने अनीत और रुपया दंड और दुराचार करके देश की मालगुज़ारी से अधि क धन लेकर अपना कोश भरा यद्यपि उसको रुपया बहुत थी परन्तु ख़र्च भी अधिक रखता था और इ सी से उसकी कोई क़सम भी नहीं कह सकता था राज्य परबी को बहुत अच्छीभांति से निवाहा और कोई निष्फल ख़र्च नहीं उठाया और किसी २ स्थान पर वि रोधकर अपने नौकरों और सिपाहियों के लिये उदा रभी बड़ा था बादशाह जानता था कि रुपये से रा. ज्य की नीम जमती है और देश की वृद्धि होतीहै रु. पया और अधिकार के कारण यह चाहा कि मनमा नता रुपया इकट्ठा किजिये जिससे सहायता और दृढ़ता बनी रहे इसलिये शस्त्रों से शस्त्रालय और धन से कोश परिपूर्ण रक्खा निदान इस बादशाह के स्व भाव में अच्छे २ गुण थे परन्तु प्रजा के साथ थोड़ी भ लाई करता था जो कर्म कि मनुष्यों और राजाओं की प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं उन पर न्याय दृष्टि कीजाय तो उस की प्रकृति में अद्भुत गुण पाये जाते थे परन्तु अपगु

ए भी उस से अधिक थे सन् १०८७ ई० में इस बादशाह ने मृत्यु पाई और राजकुमार पादरी **विलियम रूफ़स** को राजगद्दी मिली ॥

शाह विलियमरूफ़स

इस बादशाह ने अनुमान १३ वर्ष के राज्य किया और इस अंतर में अनेक प्रकार के अन्याय और अधर्म से प्रजा को सताया यह बादशाह बड़ा घमण्डिया और लपाटिया अधर्मी और अप्रतिष्ठित निर्बुद्धी था मत धर्म से रहित और मता बलम्बियों का शत्रु था और अधिक धन ख़र्च करता और विशेषकर अंगरेज़ों से अधिक द्वेषभाव रखता और जिस समय कि ना **रमन** के सरदारों ने मिलकर उस को राजपदवी से उतार देना चाहा था तब उन्हीं की सहायता और दया से इस का राजपाट बच गया था इस शुभ चिन्तक ना और उपकार के बदले बादशाह ने सब प्रकार इन के लूटने खसोटने पर ध्यान धरा और इस बहाने पर कि इन्हों ने बादशाह के हिरनों की शिकार की थी पचास अमीरों के घरानों को एक साथ क़ैद में डाला तब उन्हों ने लाचारी से बहुत सा धन ख़र्च के अपना बंधन छुड़ाया ॥

बादशाह ने विवाह का करना अंगी कार न किया और वेश्याओं के साथ विषय वासना कर के अपनी सारी उमर गंवाई इस बादशाह को शिकार करने का बड़ा चाव था सो एक दिन का यह वृत्तान्त है कि बादशाह और बहुत से सरदार सैर और शिकार को गये थे संयोग से **टिरल** नामी एक सरदार का तीर

जो उसने हिरन पर चलाया था किसी वृक्ष से टक्कर खाकर बादशाह की छाती में आलगा और भिद गया ॥

बादशाह थोड़े दिन पीछे इस अनित्यसंसार को त्याग काल बस हुए इतिहास वेत्ता ने उन की मृत्यु के सन ११०० ई० लिखे हैं इस बादशाह के कोई पुत्र नहीं था इस लिये उस के छोटे भाई हेनरी को राज गद्दी प्राप्त हुई उस को राज्य मिलने का ऐसा उत्सा ह हुआ कि उस की मरण क्रिया भी अच्छी भांति सेन की और न्याय मट गद्दी पर हो बैठा ॥

शाह हेनरी पहला

जितने इङ्गलिस्तान में और अच्छे अच्छे चतुर विद्वान बादशाह हुए हैं इस बादशाह को भी उन्हीं के समान प्रतिष्ठित गिनना चाहिये और जो स्वाभाविक गुण पदवी और प्रतिष्ठा को बढ़ाते हैं वे सब ईश्वर ने उस को दिये थे और डीलडौल में बड़ा शूरवीर था और रूप स्वरूप बादशाहों का सा रखता था जिन लोगों को उस की बुद्धिवानी और तेज के कारण भय लगता था उन को उसकी दीनदयालुता और मधुर बचन सुनने से शीघ्रही धैर्य बंधता और हौसला होता और मन का सब डर भय मिट जाता यद्यपि बादशाह हंसमुख था परन्तु मर्य्यादा पूर्वक सदा बर्तता रहता और सभा सदों में बैठकर कभी खुलकर हंसी मज़ाक न करता ॥

इस बादशाह ने आगम विचार और मधुरसम्भाषण से ऐसी योग्यता पाई थी कि जो सामान्य मनुष्यों में होना तो भी प्रतिष्ठा पाता और विद्या में ऐसी वृद्धि

ठी को पण्डित और बुद्धिवान प्रसिद्ध हुआ परन्तु विद्या के पढ़ने से देश की रक्षा और चौकसी में कुछ विघ्न न पड़ा ॥

यद्यपि उस समय की विद्या उत्तम लाभों के बदले बुद्धि को बिगाड़ती थी परन्तु बादशाह ने ज्ञान होजाने के कारण मुल्लाओं की अज्ञानता और पक्षपात से जो उस समय के विद्वानों में बहुत था अपने को बचाये रक्खा ॥

इस बादशाह की प्रकृति में मित्रता और द्वेष दोनों मिले हुए थे और उसको लज्जा अत्यंत थी और वह जो अपने भाई **रालर्ट** के साथ लड़ाई भिड़ाई न करता और उसे क़ैद में न डालता तो उस में कोई दोष कहने में न आता २५ वर्ष राज्य करके ६७ वर्ष की अवस्था पाके सन् ११३५ ई० में इस संसार को त्याग काल बस हुआ ॥

बादशाह का पुत्र बादशाह के आगे ही मरगया था अन्त को वसीयत नामे अर्थात् मरण पत्र से उस की बेटी **मिटिलडा** को राजगद्दी मिली बादशाह का भानजा **स्टीफ़न** नामी यह खबर पाके जो रावरी से आय राज्याधिकारी हो बैठा ॥

शाह स्टीफन ।

यह बादशाह यद्यपि बहुत अच्छा था और शूरवीरता और बुद्धिवानी और निपुणाई और प्रीति की रीति में बड़ा चतुर था परन्तु उस के राज में अन्याय के कारण **इङ्गलिस्तान** के लोग बहुत दुःख और कष्ट पाते रहे जो वह राज्य का अधिकारी होता तो

प्रजा की भलाई और लाभ के लिये ऐसी सहायता करता जो बादशाहों के योग्य होती है ॥ पहिले

प्रसिद्ध है कि विश्वासघाती पहले सब के मन की प्रसन्नता के अनुसार काम करता है सो इस बादशाह की ऐसी ही प्रकृति थी कि पहले ही जब वह राज्य गद्दी पर बैठा बहुधा अगले बादशाहों की भांति अन्याय नहीं किया परन्तु थोड़े दिन पीछे अपने वचन और निबन्ध जो प्रजा के सुख के निमित्त नियत किये थे छोड़ दिये और अधर्म और उपाधि से जो उसने राज्य लिया था इस लिये उस को कुछ भलाई और आनन्द प्राप्त नहुआ क्योंकि दूसरे को सताना आप दुःख पाना है ॥

थोड़े दिनों पीछे **मिटिलडा** जो राज्य की अधिकारिणी थी उसने **इङ्गलिस्तान** में आके अपना दावा किया और बादशाह से युद्ध लिया ॥

पहले तो बादशाह की सेना प्रबल हुई परन्तु फिर प्रति दिन **मिटिलडा** की फ़ौज ऐसी बढ़ी कि अन्त को **स्टीफ़न** बादशाह से बिजय प्राप्त करके राज्य छिना लिया और बड़े गर्व सहित सम्पूर्ण देश में अपने नाम की डोंडी फिरवादी और उसने भी राज्य पद पाते ही अयोग्यता प्रकाशित की ॥

इस बादशाहज़ादी ने राज्याधिकारियों और प्रजा के साथ ऐसी बुराइयां की कि वे उस के अधिकार पाने से बहुत पछताये और बादशाह **स्टीफ़न** की दशा को सोच कर उसी का दम भरने लगे इस प्रकार सबने विरोधबांध के **मिटिलडा** को गद्दी

से उतार दिया और स्टीफ़न को बन्दी गृह से निका लकर फिर राज्य सिंहासन पर बैठाया ॥

इस के सिवाय अद्भुत वृत्तान्त यह है कि एक और बड़ा मुद्दई मनक बादशाह हेनरी का दोहिता जब तरुण वस्था को प्राप्त हुआ तब नारमन के देश से सेना सज के इङ्गलिस्तान में लड़ने को आया स्टीफ़न बादशाह ने उस को बलवान और सब का हित कारी जानकर विरोध मिटाना चाहा परन्तु न मिट सका लाचारी से कौलक़रार करना विचारा अन्त को यह बात ठहरी कि स्टीफ़न बादशाह अपने जीतेजी राज्य गद्दी पर रहे उसके पी छे मिटिलडा के बेटे हेनरी को राज गद्दी मिले इस वचन पर हेनरी इङ्गलिस्तान से फिर नार मन के देश को लौट गया उन दिनों में यद्यपि कु छ सुख चैन रहा परंतु बादशाह की आयु शीघ्रही पूरी हुई सन् ११५५ ई० में काल पाया और हेन री वचनानुसार आकर राज्य सिंहासन पर सुशोभि त हुआ ॥

शाह हेनरी दूसरा

इस बादशाह ने अपने समय में बड़ी निपु णता और सुचाल और शूरवीरता प्रकाशित की बुद्धिवानी के कामों में यह बादशाह बड़ा चतुर और देश प्रबंध के क़ायदों के निकालने में भी अति प्र वीण था कि इसी से उस समय के सम्पूर्ण बादशा हों से अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त की अपने श्रम और उद्योग से सदैव प्रजा को प्रसन्न रक्खा और बहु धा

क़ानूनों के अनुसार अवस्था स्थापित की और आज्ञा दी कि इस को यथा योग्य सब बर्तते रहो ॥

जो किसी मनुष्य से ख़ुद बादशाह का अपराध होता तो उसको बादशाह दयालुता सहित क्षमा करदेता परंतु जो कोई मनुष्य प्रजा की कुछ हानि करता तो वह उसे कभी क्षमा न करता और जब किसी का दोष देखता न्याय पूर्वक निश्चय कर के छोटे बड़ों को भारी दंड करता परन्तु जिसे दीन दुखी जानता उस के ऊपर करुणा करता और कृपा दृष्टि रखता और दानी ऐसा था कि सम्पूर्ण अपनी सम्पत्ति और पृथ्वी में से दशवाँ हिस्सा निर्धन कंगालों को देता और अकाल और सूखा पड़ने के समय में शरद काल के आरम्भ से बसन्त ऋतु के अंत तक दस सहस्र दीन दुखिया बादशाह की दया से पलते ॥

और यह बादशाह अपनी भलाई और कीर्ति को प्रशंसा के साथ बड़े श्रम और उद्योग से निबाहता रहा और बुद्धिवानों की सङ्गत और बात चीत से अधिक प्रीति रखता और प्रसन्न रहता और उन के लिये बड़ा दानी और उदार था ॥

उस की स्मृति ऐसी पक्की थी कि कोई सूरत सूरत वा कोई वृत्तान्त जो याद रखने के योग्य होता तो एक दृष्टि भी उसे देख लेता फिर कभी न भूलता निदान उस समय के सम्पूर्ण बादशाहों से अधिक बलवान और धनवान और सेना की चातुर्य्यता में उत्तम था परन्तु कभी कठोर युद्ध नहीं किया

और उत्तम जनों से लड़ाई भिड़ाई करनी उसको अच्छी नहीं लगती थी और प्रत्येक सिपाही के मरने पर पछ ताया करता ॥

इतने गुणों पर भी दोषों से रहित नथा जन्म से ही उस की बड़ी तीव्र बुद्धि थी और कभी कभी ऐसी दशा पर पहुंच जाता कि मन पर क्रोध छा जाता और राज मद में अन्धा होजाता विशेष कर पराई स्त्रियों से ऐसी विषय वासना रखता कि उस की विवाहिता स्त्री दुःख और शोच में रहती ईश्वर उस का मकोला और डोल में सजीला था और मुख लाल और गोल और चितवन करुणा से सनी हुई मन को हरती थी परन्तु जिस समय क्रोध में भरता वही आँखें बिजली की चमकती और सम्पूर्ण मनुष्यों के मन को भय उपजाती थी ॥

और शरीर हृष्ट पुष्ट चाक चौबंद परन्तु मुटापे के मिटाने के निमित्त अधिक श्रम करता और इसी लिये खाने पीने में ऐसी युक्ति और सावधानी रखता कि सदैव भोजनों के घटाने पर उसकी दृष्टि रही बात चीत बड़ी नम्रता और मर्य्यादा पूर्वक करता बैतीस वर्ष राज्य करके ४९ वर्ष की अवस्था पाके सन ११९९ ई० में यह बादशाह मृत्यु को प्राप्त हुआ और उस का बेटा रिचर्ड नामी राज्य सिंहासन पर बैठा ॥

शाह रिचर्ड पहला

यह बादशाह युद्ध कर्म में बड़ा चतुर और प्रवीण था और उस समय में कोई मनुष्य बलपराक्रम और साहस में उससे बढ़कर न हुआ इसकारण

उस को शेर दिली की पदवी प्राप्त हुई और जिस समय सेना के साथ **बैतुल मुक़द्दस** नाम स्थान के छुड़ाने को **अरब** देश में गया तो वहां उस की ऐसी धाक पड़ी कि अरब के लोग अपने छोटे २ लड़के वालों को डराने के लिये उस का नाम सुनाते **सलाहुद्दीन** बादशाह जब कि **जफ़ा** की युद्ध भूमि में **रिचर्ड** से हार गया तब उस की शूरवीरता और साहस से प्रसन्न होकर दो असील अरबी घोड़े दिये शाह **रिचर्ड** हंस मुख और उदार चित्त था परन्तु शत्रुओं के लिये ईर्षावान और काल रूप था और प्रजा के पालन पोषण के बदले ऐसे ऐसे साहस के काम करता था जो मनुष्यों की बुद्धि में नहीं समाते थे और सेना की चाला की जो सम्पूर्ण जनों में यश कीर्ति को बढ़ानी है **इङ्गलिस्तान** की प्रजा ने बहुधा इस बादशाह की पसंद की **नारमन** के वंश का यह पहला बादशाह था और **इङ्गलिस्तानियों** पर मन से बड़ा प्यार रखता था और जब से राज्य पाया तब से केवल चार महीने इस देश मे रहा और अनुमान तीन बर्ष के सेना सहित अरब देश में और फिर विलायत जाने की उतावल के चाव से फ़क़ीरी भेष बदल सेना को वहीं छोड़ आप अकेला अरब से चलना हुआ मार्ग में आते हुए **जरमनी** देश में पकड़ा गया और चार महीने वहां क़ैद रहा जब अंगरेज़ों को बहुत खोज करते २ उस की थाह मिली तब उन्होंने **जरमनी** के बादशाह के पास वकील भेजकर एक करोड़ रुपया भेट में दिया और अपने बादशाह को वहां से छुड़ा लिया जब यह

बादशाह छूट कर प्रधान नगर लंदन में आया त
ब अपने राज्य का बख्शिहार दिया और नये सिरे से
मुकट सिर पर रक्खा और अपने भाई जान नामी
की सम्पूर्ण मिल्कियत और माल असबाब ज़ब्त
कर लिया इस लिये कि उसने उपाय किया था कि ब
दशाह बहुत दिनों तक क़ैद में रहे परन्तु बादशाह
ने थोड़े दिन पीछे उस पर क्षमा की और कहा कि
जब तक तेरा यह अपराध मुझे स्मरण रहे तब
तक तूभी मेरी यह दया और क्षमा मत भूलियो
निदान बादशाह का बाक़ी समय फ्राँस देश से
लड़ाई भिड़ाई करने के उपाय में व्यतीत हुआ ॥

जो शूरवीरता कि उसने पूर्व देश में आप्त
की थी उससे ऐसा प्रसन्न हुआ कि आपत्तियों के
पड़ने परभी यह विचार किया कि फिरभी कुछ
मिहनत और जीव जोखों उठावें और अरब
जाति पर चढ़ाई करें इस बादशाह की मृत्यु अज
ब तरह से हुई कि एक दिन किसी इङ्गलिस्तानी म
नुष्य ने फ्रांस की धरती में खोदते हुए अचान च
क ख़ज़ाना पाया और उसने राज्याधिकारियों में से
किसी मनुष्य को सौंप दिया आधे के अनुमान वा
कुछ कम ज़ियादह उस मनुष्य ने अपने अधिका
र में रखकर उसके पचाने के लिये बाक़ी बादशा
ह के दरबार में भेज दिया बादशाह ने यह भेद पा
कर सम्पूर्ण ख़जाने के लेलेने की आज्ञा दी जब उस
मनुष्य ने इनकार किया तब रिचर्ड बादशाह ने
चालूस के गढ़ को जहाँ ख़ज़ाने के रक्खने की

ख़बर पाई थी घेर लिया गढ़ के घेरने के चार दिन पी-
छे इस घात में था कि कहीं चढ़ने का ढंग लगे इस-
लिये क़िले के चारों ओर छड़ी सवारी फिरता था कि ब-
रतरमडीज़ोरो नामी तीरंदाज़ ने एक बाण बाद-
शाह पर चलाया और वह ठीक बादशाह के कन्धे प-
रलगा कुछ घाव ऐसा भारी नहीं था जिसमें जीव जो-
खों होती परन्तु जर्राह ने अनाड़ी पन से तीर निकाल
ने में उस घाव को बिगाड़ दिया बादशाह ने अपनी
मरण दशा देखकर देश और ख़ज़ाने का चतुर्थांश
अपनी चैतन्यता और सावधानी में पुराने नौक-
रों को दिया और वसीयत नामा अर्थात् मरण पत्र
लिखा कि बाक़ी के तीन भागों पर छोटा भाई जा
न अधिकारी रहे ॥

उसी समय उस तीरंदाज़ को पास बुला कर
पूछा कि मुझसे तेरा ऐसा क्या अपराध हुआ जिससे
तूने प्राण लेने का बैर काढ़ा उस क़ैदी ने धीरज से
कहा कि आपने अपने हाथ से मेरे बाप को और
दो भाइयों को मारडाला और मुझे भी सूली देने का
विचार किया अब आप के बस में हूं जो चाहो सो
करो परन्तु मुझे यह सन्तोष है कि एक अधर्मी
के हाथ से संसार को छुड़ा दिया यह उत्तर बादशा-
ह के हृदय में सुभगया और आज्ञा दी कि इस को
सौ रुपया इनआम देकर छोड़ दो निदान यह बा-
दशाह २० वर्ष राज्य करके ४२ वर्ष की अवस्था पाक
र सन् ११८९ ईसवी में इस अनित्य संसार को त्या-
ग काल वस हुआ और सन्तान में से सिवाय एक

बेटे फ़िलिप नामी के जो विवाहिता स्त्री से न था कुछ और चिन्ह बाक़ी न रहा और राज्य पदवी वसीयत नामा अर्थात् मरण पत्र के अनुसार उस के छोटे भाई जान को प्राप्त हुई ॥

बादशाह जान

इस बादशाह में अपने गुणों के सिवाय कोई गुण न था इसलिये प्रजा के लोग उसे कुछ नहीं मानते वरन तुच्छ समझते यह इस कुकर्मी बादशाह का अभाग्य था कि मूर्खता के कारण सम्पूर्ण गनीमों को जिन का परस्पर में लड़ाना उचित था उन्हें अपना शत्रु बनाया और इन खोटे चाल-चलनों से आपभी हानि उठाई और प्रजा को भी नुक़सान पहुचाया ॥

इस बादशाह की सम्पूर्ण अवस्था कायरता और आलस्य और मूर्खता और विषय बासना कपट छल अधर्म अनीति और निर्दयता में व्यतीत हुई इस में कुछ संदेह नहीं है क्योंकि ये बातें इतिहास वेत्ता लोगों ने कुछ बढ़ा कर नहीं लिखीं वरन यह बात सच है कि बादशाह के चाल चलन बाप भतीजे भानजे और प्रजा के लिये बहुत निंदित थे वा इस कारण कि फ्रांसीसों के बादशाह और सरदारों के साथ नीचता और बुराई प्रकाशित की जब कि भाई के मरने के पीछे उस को देश और धन प्राप्त हुआ तो वह देश ऐसा बड़ा था कि उस समय के सिवाय वैसा फिर किसी अङ्गरेज़ी बादशाह के अधिकार में नहीं आया ॥

इस बादशाह के खोटे बचनों और बुरे चलनों से फ्रांस के सम्पूर्ण सूबे जो उसकी बपौती में थे सब हाथ से निकलगये इस के अधर्म और अन्याय के मध्ये लिखा है कि एक समय किसी यहूदी से दस सहस्र मुहरें मांगी उसने अंगीकार न किया बादशाह ने आज्ञा दी कि जब तक यह देना क़बूल न करे तब तक रोज़ इसका एक दाँत तोड़ा जाय सेवकों ने वैसाही किया बिचारे यहूदी ने परबस होकर सात दिन तक सात दाँत तुड़वाये फिर लाचार हो बचनदिया और मुहरें दीं अधर्मराज्य और अन्याय के कारण यह दशा हुई कि बहुधा अमीर सरदार बेधड़क होकर लड़ने लगे और जब तक बादशाह ने मिगनाचार्टा अर्थात् बचन पत्र जिस में अंगरेज़ों के सत्व और हक़ और स्वेच्छाचारी की प्रसन्नताथी लिखन दिया तब तक लड़ाई से बन्द नरहे ॥

और वह मिगनाचार्टा अब तक जारी है इस दसा वेज़ से यद्यपि विद्वानों और अमीरों सरदारों और अंगरेज़ों की स्वेच्छाचारी की पहली रीति मज़बूत हुई परन्तु प्रजा के अन्य सामान्य लोग जो उस के अन्याय से सेवा और आधीनी में रहे और राजनीति से अज्ञात थे उन की दशा पर कुछ दृष्टि न की।

बादशाह ने यह बचन पत्र प्रजा के डरभय से लिख दिया था जिस समय उस के मन को स्थिरता हुई और भय मिटगया और कहीं लड़ाई झगड़ों का चिन्ह बाक़ी न रहा तब अवसर पाकर उस बचन पत्र से फिरगया और जिस प्रकार चाहा उसप्रकार

राज्य किया इस कारण उस के स्वदेशी लोग फिर उसेसल
ने लगे और ईश्वर के अनुग्रह से इङ्गलिस्तानि
यों ने उस अधर्मी के सताने से इस प्रकार छुटकारा
पाया कि बादशाह ने अपने राज्य की दृढ़ता के लिये
एक बड़ा भारी कटक दल इकट्ठा किया और राज
धानी से समुद्र के किनारे डेराकला ठहराया ऐसा
संयोगहुआ कि ज्वारभाटे के आने से उस सम्पूर्ण भू
मि में पानी भरगया और सब बादशाही सेना भीगगई
और बादशाह आप भी बड़ी कठिनाई से बचकर निक
ला इस कारण बादशाह का शरीर बहुत खेदितहुआ
और ज्वर चढ़ आया निदान ५१ वर्षकी अवस्था पाक
र राजगद्दी होने के १८ वर्ष पीछे सन १२१६ ई० में इ
स बादशाहने मृत्यु पाई जो निर्दयी मनुष्य सत्य और
धर्म को नहीं पहचानता वह ईश्वर की भक्ति से रहित
और देश में भी अपकीर्ति को प्राप्त होता है और अ
न्याय से लोक परलोक उस के दोनों बिगड़ जाते हैं
जो कोई अपनी सचेती और न्यायनीति नहीं रख
ता वह मूर्खता प्रगट करता है और कभी सुखी न
हीं रहता और जीवनका फलभी नहीं पाता सो वै
सीही नीचता और अनीति इस बादशाह के समय
में प्रकाशित हुई और इन्हीं अपराधोंसे वह मृत्यु
को प्राप्त हुआ उस के पीछे हेनरी नाम राजकुमार
को राजगद्दी मिली ॥

शाह हेनरी तीसरा

इस बादशाह की प्रकृति सब भांति से भली थी
परन्तु राज्य प्रबन्ध में कुछ ज्ञान नहीं था बाल्यावस्था

के कारण अपने मन्त्रियों की इच्छा पर चलता इ-
सी लिये बादशाह के वचन और निबन्धों में अंतर प-
ड़ा सो कुछ उस की बेईमानी नथी ॥

बादशाह ने आलस्य के कारण उत्तम लाभों की
ओर दृष्टि नहीं की यह बात छोटे सामान्य लोगों पर
विश्वास करने से हुई इस के वृथा अधिक धन खर्च
उठाने के कारण चचा रिचर्ड पहले के देशों की माल
गुज़ारी और भेज में बड़ा टोटा पड़ा तोभी इस भाग्य
हीन बादशाह ने समय की ऊंच नीच पर कुछ ध्यान
न धरा और बेरीत प्रजा से धन लेके आप धनी न
हुआ केवल अपने मुसाहिबों और मुंह लगे खुशा-
मदियों को असंख्य धन दिया और अन्य लोगों से स्ने-
ह बढ़ाया इस प्रकार प्रजा से वैर बंधा और वृथा विरो-
ध और शीघ्रही अपराधों के क्षमा करने से तुच्छ बु-
द्धी जाना गया यथार्थ में यह बादशाह बड़ा कुपात्र
और अयोग्य और अपने ऐश्वर्य्य में गर्वित रहता प-
रन्तु आपत्ति के पड़ने पर कायर था शूरवीरता और
यथोचित धन उठाने की चाल उस में नहीं थी उदा-
रता के विपरीत वृथा धन उठाने के कारण आव-
श्यकता के समय बहुधा हाथ खींचे रहता ॥

यह बादशाह दोषों और अपराधों से सदैव
बचा रहा और इन दोनों बातों में प्रशंसा के योग्य
था निश्चय है कि जो मुंहलगों की कुसंगति और खु-
शामद से अलग रहता तो उन सब आपत्तियों और
खराबियों से जो उस के समय में पड़ी बचा रहता नि-
शम चौंसठ वर्ष की अवस्था का होकर राजगद्दी होने

के ५६ वर्ष पीछे सन् १२७२ ई० में इस बादशाहने मृत्यु पाई और पाटवी राजकुमार एडवर्ड नामी को राज गद्दी प्राप्त हुई ॥

शाह एडवर्ड पहला

यह बादशाह दील में ऊंचा और बड़ा तेजस्वी रूपवान चतुराई और चालाकी में एक ही था और इङ्गलिस्तान के अगले बड़े २ प्रतिष्ठित बुद्धिवान बादशाहों की समान इस की तीव्र बुद्धि थी और बड़ा समझदार विद्वान और सावधान था सम्पूर्ण देश में उसका बल पराक्रम और शूरवीरता प्रसिद्ध थी अरब देश पर सेना की चढ़ाई करके इसने बड़ी विजय और कीर्ति प्राप्त की एक दिन की बात है कि बादशाह अपने डेरे में बैठे थे एक मुसलमान ने मत की जलन से विष का बुझा हुआ तीर बादशाह के कन्धे पर मारा उस के लगने से बादशाह ने बहुत कष्ट और खेद पाया परंतु एलहना नाम बेगम के अनेक उपाय से बादशाह के प्राण बचगये कि उस ने मुख से विष चूस कर फेंक दिया ॥

जैसा यह बादशाह युद्ध विद्या और साहस में अद्वितीय था वैसाही कानूनों के बनाने में भी एक ही था जब कि यह बादशाह सेना लेकर क्रोदर्स देश में लड़ता था तब खबर पाई कि वालस नामी एक मनुष्य जो इतिहासों में प्रसिद्ध है स्काटलेन्ड के देश को इङ्गलिस्तान की आधीनी से सर्वप्रकार छुड़ाना चाहता है और इङ्गलिस्तान के सेनाधिपति से कर्द वैर उसने विजय प्राप्त की तब बादशाह ने वहां

से लौटकर एक लक्ष जंगी सेना साथ ले उत्तर की ओर प्रस्थान किया और **फ़ालकर्क** क़स्बे में पहुंच कर शत्रु से युद्ध किया और बादशाह **एडवर्ड** ने विजय प्राप्त की और इस लड़ाई में **स्काटलैन्ड** की ओर के अनुमान पचास सहस्र योद्धा मारेगये और निज वाल्स के पैरों में बेड़ियाँ और हाथों में हथ कड़ियाँ और गले में तोक़ डालकर राजधानी को लेगये और सूली देकर उसकी लोथ के टुकडे किये ॥

यह बादशाह अपने सुख चैन में बहुत थोड़ा खर्च किया करता था और समयानुसार प्रजा की भलाई और देश की वृद्धि में बहुत साधन उठाता और अगले बादशाहों की अपेक्षा **इङ्गलिस्तान** की आमदनी के बढ़ाने पर अधिक दृष्टि रखता राजगद्दी होने के बाईसवें वर्ष पार्लीमेंट अर्थात् सरदारों और गंवारेज़ों की सभा नियत की इसलिये कि देश की वृद्धि के निमित्त विचार करें उस के समय में मिगनाचार्टा अधिकतर दृढ़ हुआ और सबों की सम्मति होकर एक यह बात ठहरी कि पार्लीमेंट की इच्छा के बिना जमा और खर्च कभी न किया जाय निदान राजतिलक होने के ३५ वर्ष पीछे ६८ वर्ष की अवस्था पाकर सन् १३०७ ई० में इसबादशाह ने मृत्यु पाई और उस के पीछे राजकुमार पारवी **एडवर्ड** राज्य सिंहासन पर बैठा ॥

शाह एडवड दूसरा

जिस समय यह बादशाह राजगद्दी पर बैठा इस की अवस्था २३ वर्ष की थी और बड़ा सजीला सहन

शील और गम्भीर स्वभाव था और मलङ्ग में बुराइयों और दुराचारों पर उस की दृष्टि नथी परन्तु थोड़े दिन पीछे इस प्रकार की मूर्खता और अज्ञानता प्रकाशित करी जो ऐसे नामी और प्रतिष्ठित बादशाह के पदवी के योग्य न थी सुख चैन और राग रंग में ऐसा डूबा और साथ के बैठने वालों के कुमंत्र से विषय वासना में ऐसा लिप्त हुआ कि राजकाज में आलसी और बे सुध रहा और जैसे और सब निर्बुद्धि बादशाह अपने मुसाहिबों और साथियों और मन्त्रियों के आधीन रहे हैं वैसे ही यह भी रहा और **पियर्सगावेस्टोन** नामी मनुष्य पर ऐसी कृपा और दया दृष्टि रखता जो बादशाहों की योग्यता से रहित थी यद्यपि वह मनुष्य रूप स्वरूप में बड़ा सुंदर था परन्तु स्वभाव उसका भी खोटा और विषय वासना में डूबा हुआ था उसी के कुसंग से बादशाह को ये दुर्व्यसन लगगये थे उस समय अप्र बन्ध के कारण राज्य में बड़ा विघ्न पड़ा और बहुत सा हरज मरज हुआ और राज्य के कार्य्य चाने में भी ऊंच नीच पड़ी तब **इजाबेला** नामी निज बादशाह की बेगम जो बड़ी अभिमानिनी और कपटन थी वह बादशाह से जुदी होगई और **फ्राँस** देश में जाकर उसने यह संदेसा भेजा कि जब तक मुख्यप्रधान राज्य में से न निकाला जायगा मैं **इङ्गलिस्तान** में कभी न आऊंगी इस खबर के भेजने में बेगम ने अपनी दो उत्तम लाभ विचारी एक यह कि **इङ्गलिस्तान** की प्रजा जो उस अधिकारी से बहुत अप्रसन्न थी वह यह संदेसा सुनकर बेगम से खुश हो दूसरे यह कि **मार्टिमर** नामी प्रियतम मित्र के

मिलने का संयोग हो और वियोग मिटे प्रत्येक मनुष्य क्या अमीर क्या ग़रीब जो बादशाह से दुखी हुआ बादशाह बेगम के पास फ्रांस देश को चला गया थोड़े दिन पीछे वह बेगम तीन सहस्र सेना की भीड़ जहाज़ों में बैठा के इङ्गलिस्तान के द्वापू के किनारे पर आई तुरन्त प्रजा बादशाह से फिरकर बेगम के साथ होगई और उस राज्याधिकारी को पकड़ के बिना पूछे खूनी देदी उस के साथ और कई सरदार भी इसी दशा को प्राप्त हुए इस अंतर में बादशाह छिपकर बहुत दूर तक भागा परन्तु शीघ्र बैरियों के हाथ आया उन्हों ने बड़ी अप्रतिष्ठा और निरादर के साथ बादशाह को राजधानी में लेजाकर हवालात में रक्खा थोड़े काल में उस पर इस दोष के कारण नालिश हुई कि यह कायर आलसी और विषयी और खोटे मनुष्यों की सम्मति पर चलता था पार्लीमेंट में जब यह दोष उस पर निश्चित हुआ तब उस को तख़्त से उतार देने की सम्मति ठहरी और उस के खाने पीने के योग्य रोज़ीना नियत किया और राजकुमार पदवी एडवर्ड को राजतिलक दिया और उस की बाल्यावस्था के कारण इज़ाबेला बेगम को युवराज पदवी देकर देश का अधिकार सौंपा बादशाह क़ैद में बहुत कष्ट और दुःख सह कर थोड़े दिन जिया दो सरदार जो बन्दी गृह पर नियत थे उन्हों ने बादशाह के मारने का गुप्त मंत्र किया और उसी उपाय के अनुसार लोहे की शलाका आग में गरम करके एक सींग की नली से उस के पेट में घुसेड़ी उस से पेट की सब आंतें जलगईं और

बादशाह इसी कष्ट से सन १३२७ ई० मरगया ॥

शाह एडवर्ड तीसरा

जब यह बादशाह पार्लीमेंट की सम्मति से राज गद्दी पर बैठा तब अच्छे २ विद्वान बारह मनुष्य बेगम की सेवा में नियत हुए ॥

थोड़े दिनों में बादशाह की बेगम ने जब विचार लो उन्हें मजा के दुखदाई और अपने लिये घातक जाना तब उन का सब अधिकार छुड़ा दिया परन्तु बेगम और उस के मित्र की ऐसी आज्ञा थी कि बहुत काल तक देश प्रबन्ध में मिली जुली रही निदान मन्त्रियों की सम्मति से बादशाह ने यह मन सवा ठहराया कि इन दोनों को पकड़ना चाहिये सो **नाटिंघम** के किले में जहाँ वे रहा करते थे दोनों पकड़े गये इज़ाबेला बेगम ने **मार्टिमर** की बहुत सी हिमायत करी परन्तु एक भी न चली और उसे शीघ्र शूली दी गई ॥

और बेगम महत्व और मनिषा की दृष्टि से ताड़ना से बची परन्तु **रिसिङ्ग्ज़** के गढ़ में जन्म क़ैद हुई और तीन सहस्र रुपये मासिक उस के खाने पीने के खर्च के लिये नियत हुए और जन्म भर इस क़ैद से न छूटी ॥

यद्यपि बादशाह वर्ष भर में एक बेर बड़ी धूम धाम से अपनी सवारी सज के उस के पास जाते परन्तु वह सदैव निरादर और अपमान में रही और पच्चीस वर्ष बराबर अपनी लाज पत खो कर विपत्ति में आयु गंवाई ॥ थोड़े दिन पीछे बादशाह ने **फ्रांस** देश पर चढ़ाई की और सेना और सरदारों को जहाज़ों में बैठा के उधर को प्रस्थानकिया और **ब्लोंदर्स** में समुद्र के

किनारे जाकर दो सौ तीस जहाज़ जो असंख्यात द्रव्य से भरे थे उन पर विजय प्राप्त की फिर वहाँ से फ्राँस की एजधानी तक जो नगर और ग्राम मार्ग में मिला लूट कर उजड़ और चौपट कर दिया फ्राँस के बाद शह ने भी इस आपत्ति के टालने के लिये सोम समुद्र के किनारे पर लिधर से राडवड बादशह के आने का मार्ग था एक लक्ष सेना सामना करने के लिये खड़ी की ॥ यद्यपि इङ्गलिस्तान की सब सेना तीस सहस्र थी परन्तु बादशह ने अपनी सेना की दृढ़ता पर फ्राँस से लडने का साहस बिचारा और क्रेसी ग्राम में अपनी सेना जमाई कि वहाँ विश्राम लेके शत्रु के मारने और पराजय करने का उपाय विचारेंगे और अपनी सेना की तीन टुकडियाँ बाँधकर उन्हें एक बड़े ऊंचे चौड़े मैदान पर खड़ा किया पहली पंक्ति बेलज़ नामी राजकुमार की सरदारी में सौंपी और दूसरी पंक्ति अन्य दो विश्वासी सरदारों के अधिकार में रख कर तीसरी पंक्ति को निज अपनी आज्ञा में रक्खा ॥ फ्राँस का बादशह भी अपनी सेना के तीन दस्ते लेकर सामना करने के लिये आगे बढ़ा और तीसरे पहर के समय से इस क्रेसी के प्रसिद्ध युद्ध का प्रारम्भ हुआ और तोपों की लड़ाई उसी दिन से होने लगी और दोनों ओर से बहुत काल तक महा घोर संग्राम हुआ अन्त को इङ्गलिस्तानियों ने अवसर पाकर एक साथही शत्रुओं पर बाणों की वर्षा करी फ्राँसीसों की सेना में खलबली पड़ी ॥ राजकुमार बेलज़ ने यह रण देखकर वीरता सहित अपने समूह को

साथ लेकर धावा किया परन्तु फ्राँसीसों के रिसाले ने इस हल्ले को रोक कर राजकुमार को घेर लिया बादशाह ने दूर से यह व्यवस्था देखकर हौले से पूछा कि हमारा हितकारी पुत्र अभी जीता है वा मारागया लोगों ने प्रार्थना की कि महाराज ईश्वर के अनुग्रह से अभी क्षेम कुशल है और अपनी शूरवीरता प्रकाशित कररहा है यह सुनकर बादशाहने आज्ञादी कि राजकुमार को शीघ्र जता दो कि हम से कुछ सहायता की आशा न रक्खे जो हमारे भाग्य में विजय लिखी है तो तुम्हारे ही बल पराक्रम और साहस से जय मिलेगी नहीं हरि इच्छा राजकुमार के मन में बादशाह की इस आज्ञा को सुन कर नए सिरे से शूरता छाई और संभलकर इस रा हल्ला किया फ्राँस की सम्पूर्ण सेना में जो बड़ा बलवान एलनसोन नामी सेना ध्यक्ष था वह इस हल्ले में मारा गया और तभी से उधर की हानि होने लगी ॥ एलनसोन के मारेजाने के पीछे उस सेना में कोई चतुर सेनानी साहसी मनुष्य न रहा विना सरदार के बड़ा विघ्न पड़ा कि सेना भागी और इङ्गलिस्तान की विजयी बिकट सेना ने उस का पीछा किया ॥ विजय होजाने के पीछे बादशाह सेना को राजकुमार के अधिकार में सोंप आप इङ्गलिस्तान को सिधारा यहाँ पीछे एक और गुल खिला कि स्काटलैन्ड के बादशाह ने एडवर्ड बादशाह के सेना सहित फ्राँस देश के जाने की ख़बर पाकर राज्य के छिना लेने का सम्पूर्ण साज सामान साथ लेकर इङ्गलिस्तान की सीमामें पैर बढ़ाया ॥ फ़िलिप्पा नाम बादशाह की

बेगम ने भी तुरन्त सेना साजी और लार्ड परसी को अपना सेनाधिपति बना के रात दिन बराबर चल के दरहम नगर में पहुंची और वहां से थोड़े अन्तर पर एक मैदान में लड़ाई ठानी स्काटलैन्ड के बादशाह को भी इस युद्ध का बड़ा उत्साह था क्योंकि स्त्री के अधिपति होने से उस सेना को अशिक्षित और भगोड़ी जानता था ॥ हक़ीक़त में स्काटलैन्ड के बादशाह ने यह बड़ा धोखा खाया क्योंकि सान्हना होते ही शीघ्र पराजय पाई इस के सिवाय पंद्रह सहस्र सिपाही तलवार से मारे गये और आप बादशाह की बेगम के साथ क़ैद में पड़े के प्रधान नगर लन्दन में पहुंचा थोड़े काल पीछे एक और विजय आप्त हुई जिस में राजकुमार वेलज़ ने फ्राँस के बादशाह को पकड़ भेजा उन दिनों इङ्गलिस्तान के प्रतापरूपी भानु का प्रकाश हो रहा था कि एक समय में दो बादशाह क़ैद हुए ॥ बड़े पश्चात्ताप की बात है कि इस अनित्य संसार में किसीकी प्रतिष्ठा ऐश्वर्य्य और अधिकार एकसा नहीं रहता राजकुमार शरीर में खेद रहने के कारण सेना को फ्राँस देश में छोड़ आप इङ्गलिस्तान में चला आया और ४० वर्ष की अवस्था में इस प्रतापी बलवान राजकुमार ने मृत्यु पाई और उस का निर्दूषित शीलस्वभाव सब को स्मरण रहा देश में उसका ऐसा शोक सन्ताप हुआ कि बहुत काल तक लोग उस दुःख को न भूले सच मुच राजकुमार ऐसाही था और बादशाह एडवर्ड भी बड़ा विजयी और भाग्यशाली था और उस की शूरवीरता और राजनीति सराह

ने के योग्य थी यह बादशाह सिकन्दर का सा बलपरा क्रम और साहस और क़ैसर कीसी दूर दृष्टि और उदारता रखता था और बादशाहों कासा ऊंचा शरीर सजीला स्वभाव का कोमल और नम्र था परन्तु अपनी प्रतिष्ठा और यशकीर्ति को अधिक चाहता था इसी कारण से लोगों के हक़ और प्रजा की भलाई और देश की आमदनी की सुध भूल गया था और पुत्र की मृत्यु के शोक में आप ऐसा डूबा कि राज्य के सम्पूर्ण काम काज से हाथ उठा लिया फिर ऐसा भारी रोग लगा कि सब राज्याधिकारी लोग जिन को उस की कृपा दृष्टि से धन सम्पति और उच्च पदवी प्राप्त थी वे बादशाह को असाध्य जान कर छोड़ २ के अलग होगये और अन्त समय में कोई आंख बंद करने वाला भी मनुष्य पास न रहा ॥ इस शोक सन्ताप में यह प्रतापी बादशाह सन १३७७ ई० में राजगद्दी होने के ५१ वर्ष पीछे ६५ वर्ष की अवस्था का हो कर इस अनित्य संसार को त्याग परलोक को सिधारा ॥ पादवी **ब्लैनज़** के मरजाने के कारण बादशाह का दूसरा पुत्र **रिचर्ड** नाम राजसिंहासन पर बैठा ॥

शाह रिचर्ड दूसरा

जब यह बादशाह राजगद्दी पर बैठा इस की अवस्था केवल ११ वर्ष की थी बाल्यावस्था के कारण देश का प्रबन्ध **ड्यूक लङ्कास्टर** और **योर्क** और **ग्लास्टर** नाम उस के तीनों चचाओं को सौंपा गया और जब तक बादशाह की अवस्था २२ वर्ष की न हुई तबतक उन्हीं तीनों का अधिकार रहा ॥ बादशाह ने देशाधि

कार पाते हीरान्यप्रबन्ध में अयोग्यता प्रकाशित की विष
य वासना और वृथा अभिमान में डूबा रहा और नीच लो
गों से मित्रता रखने लगा और ड्यूक ग्लास्टर को किसी
छल से कैलेस के बंदी गृह में क़ैद किया और वह वहीं
मरगया और लोगों का द्वेष और बैर जो पहले से उस के
दुराचारों के कारण चला आता था इस अधर्म और अ
न्याय से और अधिक बढ़ा संयोग से एक दिन ड्यूक
नारफ़क और ड्यूक हैरीफ़ोर्ड ये दोनों सरदार आप
स में लड़ने को उपस्थित हुए बादशाह क्रोध में भर क
र उन के पास आया और एक को जन्म भर के लिये और
दूसरे को चार बर्ष की अवधि पर इङ्गलिस्तान से देश
निकाला दिया वे दोनों निरपराध देश से निकाले गये इस
अन्याय और अनीति से हैरीफ़ोर्ड और उस के कुटुम्बि
यों और सम्बंधियों ने बादशाह से बैर बांधा हैरीफ़ो
र्ड ने बहुतेरा बैर भाव को छिपाये रक्खा परन्तु क्रोध
के मारे सहन न करसका और अयोग्य निर्गुणी बा
दशाह को गद्दी से उठा देने का उद्योग किया ॥ जब
बादशाह रिचर्ड किसी उपद्रव के मिटाने के लिये
आयरलेण्ड देश को गया तब हैरीफ़ोर्ड ने अपनी
बुद्धिवानी और चालाकी प्रकाशित की और दाव
घात और अवसर पाकर साठ मनुष्य साथ ले जहा
ज़ में बैठ इङ्गलिस्तान में आया और सम्पूर्ण देश
में यह बात प्रसिद्ध हुई ॥ बहुधा अमीर और सर
दार बहुत सी भीड़ साथ ले २ कर उस से आमिले थो
ड़े दिन में उस के साथ साठ सहस्र की भीड़ होगई
जब यह ख़बर आयरलेण्ड में पहुंचीतबहीसे सेना

से सावधान और बचते रहना फिर उन्हें कुछ इनआम देकर विदा किया और कहा कि जब तुम अच्छे चाल चलन स्वीकार करोगे तब प्रतिष्ठानुसार यथा योग्य पदवी और २ अधिकार पर नियत किये जाओगे ॥ उस के पिता के समय के राज्याधिकारियों और कार्य्यकर्त्ताओं ने इस से अधिक भय माना परन्तु इस ने यह दण्ड देकर उन के मन का सब संदेह और भ्रम मिटा दिया और सब प्रकार उन की धीरज बंधाकर प्रेम प्रीति पूर्वक सब को जहाँ का तहाँ ओहदों पर नियत रक्खा ॥ विशेषकर उस क़ाज़ी ने जिस की प्रशंसा बादशाह ने नदी चोथे के समय में हुई थी बड़ा डर माना और अपने को दोषी समझा परन्तु उस क़ाज़ी ने अपमान और ताड़ना के पलटे प्रसंसा और धन्य वाद पाया वरन बादशाह के दरबार से उसे आज्ञा हुई कि वैसाही न्याय पक्षपात को छोड़ कर करतेरहो ॥ उन दिनों फ्रांसीस आपस में लड़ते थे सो यह साहसी बादशाह अपने लाभ की दृष्टि से तीस सहस्र सेना सहित जहाज़ों पर सवार हुआ और फ्रांस के इलाके हारफ्लोर में जा उतरा ॥ उस स्थान का पवन पानी ऐसा विपरीत हुआ कि थोड़े काल में सेना के बहुत लोग संग्रहणी के रोग से मरगये और जो उस आपत्ति से बचे वे घबराये और डरा हुए क्योंकि तीस सहस्र में से केवल दससहस्र मनुष्य बाक़ी रहगये ॥ बादशाह यह कुदण्ड देखकर जी में पछताने लगा कि मैं विना विचारे ऐसी शीघ्रता से इस देश में आया कि जिससे रोग

पर प्रकाशित किया जाय उन दिनों फ्रांस देश पर एक अचानक विपत्त पड़ी जो बुद्धि में नहीं समाती थी कि जोनआर्क नामी एक गाँव की स्त्रीने देश की कुरक्षा और नष्टता देखकर मन में यह बिचार किया कि मुझे आनुभवी ज्ञान हुआ है और यह बात एक राज्याधिकारी से कही कि मुझे देव ज्ञान हुआ है कि अपने देश को शत्रुओं की चढ़ाइयों से बचाऊं ॥ उस राज्याधिकारी ने पहले उस की बात का अनादर किया परन्तु जब इस बात में उस को खूब दृढ़ देखा तब अपने निज मनुष्यों के साथ उसे बादशाह के दरबार में भेजा यद्यपि राज सभासदों की बुद्धि में यह बात बिश्वास के योग्य नथी परन्तु राज्य को बिगड़ता हुआ देखकर इशिहार कर बाया कि इस स्त्री को निस्सन्देह आनुभवी ज्ञान हुआ है लोगों के इकट्ठे होजाने का यह एक बहाना हुआ जब कि लोगों ने उस के देखने की अभिलाषा करी तब उस स्त्री को पुरुष के कपड़े पहराके सब लोगों को दिखाया ॥ नगर के प्रतिष्ठित मनुष्यों नेभी समय के अनुसार वा मन से सहायता देनी अंगीकार की पहले बड़ी धूम धाम से उस की प्रतिष्ठा और कीर्ति बढ़ाई और फिर यह विचार ठहराया कि सब युद्ध सामग्री इकट्ठी करके शत्रुओं पर चढ़ाई करें ॥ इस स्त्रीने यह हामी भरी कि जो अंगरेज़ कैलेस नगर को घेरे हुए पड़े हैं उन को मैं हटा दूंगी और अपने को अपूर्वी मनुष्य ठहराने को तलवार बाँधी और एक अद्भुत झंडा हाथमें

के लोग बादशाह को छोड़ २ कर भागने लगे यहां तक कि बादशाह के पास केवल छः सहस मनुष्य रह गये बादशाह रिचर्ड ने लाचार होकर हैरीफोर्ड को इस आशय का पत्र लिखा कि जो कुछ तुम्हारी इच्छा हो सो मुझे स्वीकार है उसने उत्तर लिख भेजा कि आप चेस्टर नगर में आकर हम से मिलिये बादशाह इसके अनुसार उस नगर में गये हैरीफोर्ड ने मिलने के पीछे सब की मरजी पाकर बादशाह को क़ैद किया और लन्दन में पहुंचाया बादशाह रिचर्ड इस आपत्ति में पड़के ऐसा स्थिल और हिरासा हुआ कि थोड़े दिन में सब राजमद निकल गया और मन शोच सागर में डूब गया॥ बादशाह इस विपत्ति दशा में ऐसा आधीन होगया कि राजगद्दी के छोड़ देने के इक़रार नामह पर जिस में उस के बन्दोबस्त की निसबत उस की नारसाई लिखी थी अपने दस्तख़त करदिये उस का यह इस्तेफा पार्ली मेंट अर्थात् राज्य सभा में अंगीकार किया गया जब कि रिचर्ड बादशाह के कोई सन्तान न रही तब बहुधा प्रतिष्ठित सरदारों की इच्छा के अनुसार हैरी फ़ोर्ड को शाह हेनरी चौथे की पदवी देकर राजसिंहासन पर बैठाया॥ इस के समय में डयूक यार्क और लङ्कास्टर के घरानों में लड़ाई और विरोध फैला और बहुत काल तक उन्होंने सम्पूर्ण देश में उपद्रव और उपाधि उठाए रक्खी॥ इस अन्यार्द बादशाह हेनरी चौथे ने अपनी मजबूती और निर्भय राज करने के लिये बादशाह रिचर्ड को मारना विचारा और आठ

निर्दयी हत्यारे मनुष्यों को बादशाह के मारने पर नियत किया इनका यह विचार देख बादशाह रिचर्ड ने मन में दृढ़ साहस बांधा कि वृथा जीव देना न चाहिये तुरन्त उन में से एक का गुर्ज छीन कर चार को जीव से मारा अन्त को पराजय पाकर कालबस हुआ॥ बादशाह रिचर्ड को जन्म से ही अच्छी शिक्षा नहीं हुई क्योंकि उस के तीनों चचा उसके अज्ञान रहने से अपना अधिकार समझते रहे और जो इस को आदि से ही अच्छी शिक्षा होती तो यह बादशाह बड़ा सुज्ञान और प्रशंसा के योग होता किस लिये कि दानिशिरोमणि और प्रीति का सच्चा था और इस मूर्खता की अवस्था में वेही गुण सब क्लेशों के मूल और सम्पूर्ण दुर्व्यसनों के कारण हुए क्योंकि उस ने धन सम्पत्ति को वृथा लुटाया और साथ के बैठने वालों से अयोग्य स्नेह और प्रीति रक्खी निदान ३४ वर्ष की अवस्था पाकर राजगद्दी होने के २३ वर्ष पीछे सन् १३ ९७ ई० में यह बादशाह काल को प्राप्त हुआ॥

शाह हेनरी चौथा

इस बादशाह ने विचारा कि जो मनुष्य अधर्म और अन्याय से राजगद्दी पर बैठता है उसके लिये कांटे होते हैं तो कोमलता प्रकाशित करनी क्या ज़रूर है जो प्रीति कि इसने राजगद्दी पर बैठने से पहले सम्पूर्ण लोगों के हृदय में बसाई थी सो राज्याधिकार पाने के थोड़े दिन पीछे सब से छोड़ दी और दया को छोड़ कर बड़ी सरक्ती और कठोरता

से राज्य करने लगा ॥ अन्तको थोड़े दिनों में एक उप
द्रव उठा कि स्काटलैन्ड और वेलज़ की सना ने
मिलकर मार्टिमर नामी राज्य स्वाधिकारी को ग
द्दी पर बैठाना चाहा बादशाह ने जब यह समाचार
पाए तब शीघ्र सेना लेकर श्रापशेयर के क़िले
में जहां उपद्रवियों का समूह इकट्ठा किया गया ॥
बल पराक्रम में दोनों ओर की सेना बराबर थी इस
कारण महाघोर संग्राम मचा जिस स्थान पर खूब
कटा छनी होरही थी वहां बादशाह हेनरी और
उस का बेटा जो आगे जाकर फ्रांस देश को
विजय करेगा दोनों एक साथ पहुंचे ॥ दूसरी
ओर का हाटस्पर नामी एक बड़ा बीर साहसी
योद्धा जो उन का सामना करने में बल पराक्रम
प्रकाशित कर रहा था अकस्मात् एक बाण के
लगने से मारा गया और बादशाह हेनरी को वि
जय प्राप्त हुई ॥ जब शत्रुओं के उपद्रव से अव
काश पाया तब सम्पूर्ण जनों के मनों में अपनी और
के विश्वास जमाने के उपाय करने में लगा क्योंकि
पहले उस की प्रतीति उठ गई थी और उस से कुछ
खेद भी पाया था इस के सिवाय पारदी राजकुमार
के दुराचार और व्यभिचार का भी बादशाह को सदै
व सोच रहता था एक दिवस का वृत्तान्त है कि युव
राज का एक व्यभिचारी मित्र किसी अपराध के कार
ण सदरुस्सदूर की कचहरी में पकड़ा गया युवराज
उस मुक़द्दमें की व्यवस्था सुनकर ऐसा क्रोधित और
र अप्रसन्न हुआ कि भरे दरबार में जाकर क़ाज़ी के

मुह पर थप्पड मारा काज़ीने अपनी उच्च पदवी की प्रतिष्ठा और अधिकार पर दृष्टि करके तुरन्त राजकुमार को कैद किया॥ जिस समय यह व्यवस्था बादशाहने सुनी तो कहा कि उस बादशाह की नीति और आतङ्क को सराहना चाहिये कि जिस का क़ाज़ी ऐसे स्थानपर भी न्याय दंड करने से न चूका और जिस का बेटा इस प्रकार के दोष में बन्दीगृह के दुख मे पड़ा ॥ हक़ीक़त में इङ्गलिस्तान के भीतर यह बात पहली ही बेर हुई थी कि जिसमें ऐसे बड़े प्रतिष्ठित मनुष्य ने अपने दोष के कारण क़ाज़ी के न्याय से दंड पाया॥ बादशाह हेनरी चौथा बड़ा कुरूप और क्रोधस्वभाव था परन्तु शूरबीरता और आगम विचार और बुद्धिवानी की बातों में पूरा था यद्यपि कपट छल से उसने राजपाट पाया था परन्तु उस की प्रकृति में कई अच्छे २ गुण भी उच्च पदवी और प्रतिष्ठा के योग्य थे॥ राजतिलक होने के चौदवें वर्ष ४० वर्ष की अवस्था में सन् १४ १३ ई० में यह बादशाह परलोक को सिधारा और पाटवी राजकुमार हेनरी को राज्यसिंहासन प्राप्त हुआ॥

शाह हेनरी पाँचवाँ

युवराज पदवी के समय से लोगों के मनों में उस की ओर का स्नेह बढ़ गया था और जब उस को राज गद्दी मिली तब सबों ने उस की आधीनी और सेवा अंगीकार की और उसने सम्पूर्ण उपद्रवी बुरा चारियों को इकट्ठा करके कहा कि अब में राजनीति की तुलामें न्याय तोलता हूं चौकस आगे को बुरे कामों

लेकर सेना को विजय पाने की आशा बंधाई ॥ फ्रांस की सेना को धैर्य्य और साहस हुआ और उस स्त्री के बल पराक्रम से गढ़ कोट बांधना बंद रहा और फ्रांस वालों ने बराबर विजय प्राप्त की और हां के वैकुंठ वासी बादशाह के बेटे को जो बचन पहले दिया था उसी के अनुसार उसे बड़ी धूम धाम से ही इस नगर का राज तिलक दिया ॥ इस बादशाह के राज गद्दी पर बैठते ही फ्रांस देश की जीत और वृद्धि प्रति दिन होने लगी और इङ्गलिस्तान की सेना पराजित हुई ॥ चारों ओर की विजय पाने के पीछे वह अपूर्वी स्त्री कम्पेन नगर से जिस समय अंगरेज़ों के हटा देने को सेना लेकर चली थी पकड़ी गई और जैसे वह पहले महात्मा लोगों की भांति प्रतिष्ठा और आदर पाती थी वैसे ही बंधन में पड़ के जादूगरी के दोष में लाञ्छित और तिरस्कार की गई और क़ानून के अनुसार जीते जी अग्नि में जलाई गई ॥ इस अन्तर में ड्यूक बेड फोर्ड मृत्यु वस हुआ और इङ्गलिस्तान पर आपत्ति पड़ी दो तीन वर्ष के पीछे सम्पूर्ण फ्रांस के विजय किये हुए इलाक़े में से सिवाय एक कैलेस नगर के कोई अधिकार में न रहा इङ्गलिस्तान के बादशाह हेनरी छटे ने राज्य प्रबन्ध के मध्ये अपनी अज्ञानता और मूर्खता प्रकाशित करी जिस समय कि देशोपद्रव मिटा एक नवीन मनोरथ सिद्ध हुआ जो विजय के दिनों में प्राप्त नहीं हुआ था अर्थात् शाह एडवर्ड तीसरे के जेष्ठ पुत्र ल्यूनल नामी से एक बेटा रिचर्ड ड्यूक यार्क

नामी उत्पन्न हुआ और जो राजगद्दी पर बैठा था वह एडवर्ड के छोटे बेटे की सन्तान में से था॥ रिचर्ड के राज्याधिकारी होने से बड़ा झगड़ा फैला और बादशाह के मांदे पड़ने से देश में अप्रबन्ध और उलटपलट दूनी हुई पार्लीमेंट की सनद से रिचर्ड ड्यूक यार्क बादशाह के आरोग्य होने तक नायब नियत हुआ और बहुत काल तक राज काज करता रहा जब वह भाग्य हीन बादशाह सादगी से अच्छा हुआ तब अपना अधिकार कम देखकर सोच में पड़ा॥ बादशाह की मारग्रेट नामी बेगम नेजो पुरुषों की सी बुद्धि रखती थी बादशाह को कह सुनकर रिचर्ड ड्यूक यार्क से लड़वाया दैव संयोग से उस युद्ध में यार्क की सेना जीती और बादशाही सेना हारी और बादशाह आप भी घायल होकर पकड़े गये फिर उस पुरुषार्थिनी स्त्री के बल पराक्रम से बराबर लड़ाइयां होतीरहीं जिन में कभी हानि और कभी लाभ प्राप्त हुई अन्त को वे कफ़ील्ड के खेत में होनहार के बस होकर ड्यूक यार्क ने मृत्यु पाई उस समय सम्भव था कि वह बेगम राज्य की उच्च पदवी पर दृढ़ हो जाती परन्तु अर्लवारिक जो सेनाधिपति था उसने यार्क की सेना की सरदारी आपली और उस कैदी बादशाह को जहां जाता वहां अपने साथ लिये फिरता और बादशाह की बेगम से बड़ा वैर भाव रखता कई दिन के पीछे सेराट आलबंस के क़स्बे में लड़ाई हुई संयोग से अर्लवारिक भागा और कुछ ऊपर दो सहस्र मनुष्य उस के खेत रहे ॥

बादशाह हेनरी छठा बंधन से छूट कर अपनी सेना की ओर आया ॥ डयूक यार्क के जेष्ठ पुत्र एडवर्डेना मी ने पिताके मारे जाने के पीछे अपनी तैयारी और दृढ़ता की ॥ यह राज कुमार यौवना अवस्था में बड़ा स्वरूपवान सहन शील और पराक्रमी था सेना सज कर बड़ी धूमधामके सहित प्रधान नगर लन्दन में पहुंचा सम्पूर्ण जनों के चित्त में अपनी ओर का प्रेम देख कर बिचार किया कि राज्य पर दावा करने का समय यही है ॥ निदान बड़ी धैर्य्यता और साहस के साथ बादशाही सेना से लड़ने लगा और अर्ले वारिक जो बादशाह हेनरी के अन्याय और अधर्म के कारण फिर गया था और एडवर्ड के हक़ के ऊपर झगड़ रहा था उसके सहायक होने से बादशाह हेनरी को अधिक भयङ्कर अन्त को बादशाह की ओर के चालीस सहस्र मनुष्य मारे गये और बादशाह हेनरी छठा जो सदैव से भाग्य हीन और निर्बुद्धि था फिर पकड़ा गया और क़ैद में पड़ा परन्तु बादशाह की बेगम जो बड़ी बुद्धिमान और भाग्यवान थी तुरन्त जहांज़ में बैठ कर फ्रांदेस को सिधारी ॥ पार्लीमेंट ने सम्पूर्ण जनों की इच्छा से एडवर्ड को राज सिंहासन पर बैठाया ॥ अर्ले वारिक ने उस की युवा अवस्था देख कर शुभ चिन्तकता की दृष्टि से उसे बिवाह करने की सम्मति दी और आप इसी मामले के ठहराने के लिये फ्रांस देश को गया ॥ बादशाह ने उस के चले जाने के पीछे एक इङ्गलिस्तानीस्त्री

से विवाह करके उस के सम्पूर्ण उद्योग और मनोर
थ निष्फल किये ॥ अर्लवारिक यह सुन कर अत्यं
त अप्रसन्न हुआ और लोगों को मिला कर बादशा
ह से ऐसा विरोध बांधा कि बादशाह अपना देश
छोड़ कर भाग गया ॥ इस के पीछे बादशाह हेनरी
को क़ैद से छुड़ा के दूसरी बेर फिर राजगद्दी पर बैठा
या और अर्लवारिक को सब छोटे बड़ों ने राज्य
का स्थापक ठहराया यद्यपि बादशाह एडवर्ड के
नौकर चाकर बहुत से मारे गये और भाग गये
परन्तु सब ही नष्ट नहीं होगये थे बादशाह जो अ
के ला देश को छोड़ कर हालन्द के देश में रहा था
सो इस लिये कि उसके संगी साथी इङ्गलिस्तान
में विद्यमान थे सो नौ महीने के पीछे युद्ध की अभि
लाषा कर के फिर इङ्गलिस्तान में आया ॥ उसके
आते ही लोग छिब किचाये अन्त को क्रम २ से मित्रों
की सहायता से लड़ाई का सामान तैयार हुआ
इङ्गलिस्तानी जो सदैव प्रतिज्ञा के अनुसार स
ब का सन्मान किया करते हैं उन्होंने नगर का फाट
क खोल दिया और निर्बुद्धि भाग्य हीन बादशा
ह हेनरी फिर क़ैद में पड़ा ॥ अर्लवारिक को
लड़ाई भिड़ाई के सिवाय और कुछ उपायन सू
झा सेराट आलबंस के पास मोरचे जमा कर
युद्ध ठहरा और लङ्गास्टर वालों अर्थात् हेनरी
की हार हुई और अर्लवारिक भी घायल होकर
इस लड़ाई में मारा गया ॥ बादशाह की बेगम और
शाह हेनरी का बेटा दोनों क़ैद होकर बादशाह एडवर्ड

के पास बुलाये गये जब कि बादशाह ने उन्हीं से लड़ाई और उपद्रव उठाने का कारण पूछा तब हेनरी बादशाह के बेटे ने निडर होकर शूरता से उत्तर दिया कि मैं अपने बाप के राज्य की हानि का बदला लेने आया हूं यह बात बादशाह एडवर्ड को बहुत बुरी लगी और क्रोधित होकर एक थप्पड़ उस के मुंह पर मारा ॥ ड्यूकग्लास्टर और क्लारेन्स ने बादशाह को क्रोधित देखकर अधिक निर्दयता से दौड़ के एक कटार मारी अन्त को बादशाह हेनरी छठा सन १४७२ ई० में ड्यूकग्लास्टर के हाथ से मारागया इस प्रकार इङ्गलिस्तान और फ्रांस दोनों देशों के बादशाह हेनरी का राज्य जिस का आदि में प्रतापरूपीभानु सम्पूर्ण बादशाहों से अधिक प्रकाशित था अस्त को प्राप्त हुआ ॥ उस के साथियों में से जो कोई पकड़ागया बादशाह की बेगम के सिवाय और कोई जीता न बचा और बेगम के बचाने में यह लोभ था कि फ्रांस के बादशाह ने पचास सहस्र रुपया देकर उसे छुड़ाया ॥ मारगेट नामी बेगम जो बारह लड़ाइयों में अपने बादशाह की सहायक हुई थी वह निज लड़के बालों के पालन पोषण और माल असबाब से लाचार होकर थोड़े वर्ष पीछे दीन दशा सहकर फ्रांस देश में मरगई ॥ बादशाह हेनरी बड़ा संयमी नियमी और ईश्वरोपासक और उदार चित्त था और ईर्षाद्वेष और अधर्म से बचा हुआ रहता यद्यपि राज काज में निन्दा और बुराई पाई परन्तु ईश्वराधन और उपासना में बहुत योग्यता ॥ राजपाट के मध्ये

परस्पर का लड़ाई झगड़ा और बुद्धि की ही नता सम्पूर्ण आपत्तियों का मूल कारण हुई ॥

शाह एडवर्ड चौथा

इस बादशाह ने बड़े २ शत्रुओं को परास्त कर के छोटों २ पर कोप दृष्टि की यहाँ तक कि फांसी दे २ कर देश में कोई शत्रु बाक़ी न छोड़ा और उन की जायदाद ज़ब्त कर के बादशाही ख़ालसे के देशों में मिलाली ॥ यह बादशाह एक तो अन्यायी दूसरे एक रंग में डूबा हुआ था बादशाह का सुंदर रूप स्वरूप देख कर बहुधा स्त्रियां अपने पतियों को छोड़ २ कर उस के फन्दे में फंसी जो अन्याय कि ज्यूकज्ञारेन्स के साथ उसने किया वह सम्पूर्ण अधर्मों से बढ़ कर था और यह यह है कि एक दिन बादशाह किसी सरदार के आखेट स्थान में मृगया करता था एक खेत मृग जो अपने स्वामी को अधिक प्यारा था शिकार किया उस के स्वामी ने मन में दुखी हो कर कहा कि जो इस हिरन के मारने की सम्मति देने वाले को हिरन के सींगों से मरा हुआ देखता तो मुझे सन्तोष होता इस बात के सुनते ही अधर्मी बादशाह ने उस सरदार को बिना सोचे बिचारे सूली देदी ज्यूकज्ञारेन्स उस सरदार की मित्रता की दृष्टि से बहुत खेदित हुआ और कुढ़ कर भाई के न्याय धर्म पर बुराभला कहने लगा बादशाह इस बात से बड़ा क्रोधित हुआ और उसे निन्दा और आवज्ञा करने का कलङ्क लगा कर क़ैद किया उस समय में जो धन बान किसी मनुष्य पर अपराध का दोष लगाना यह बहुधा मालूम

के सिवाय कुछ और न्याय न पाता ॥ ड्यूक क्लारेन्स दोषी ठहरा और बादशाह ने उस से कहा कि आप जिस प्रकार अपनी मृत्यु चाहो प्रकाशित करो उसने लाचारी से मद्य पड़के उत्तर दिया कि मुझे शराब के पीपे में डुबो देना निदान अपनी इच्छा के अनुसार उसी में डुबोया गया ॥ यह बादशाह रूपस्वरूप में बड़ा सुन्दर और शूरवीरता में एक ही था परन्तु अन्य बादशाहों की अपेक्षा बड़ा अन्यायी और विषयी और कुटिल था ॥ जिस समय कि फ्राँस के युद्ध पर तैयार हुआ अकस्मात एक बड़े भारी रोगने आघेरा और सन १४८३ ई० में ४२ वर्ष की अवस्था पाकर मरगया और देश में उस के अन्याय से छुटकारा पाया उस की मृत्यु के पीछे उस के पाटवी पुत्र को राज गद्दी प्राप्त हुई ॥

एडवर्ड पांचवां

बादशाह एडवर्ड चौथे के मरने के पीछे राजकुमार एडवर्ड पांचवां बारह वर्ष की अवस्था में राज गद्दी पर बैठा परन्तु उस के चचा ड्यूक ग्लास्टर की उपाधि से उस को राजपाट न मिला क्योंकि बादशाह की बाल्यावस्था में वही राज काज का अधिकारी था ॥ उसने बैकुंठवासी बादशाह के लड़के बालों की रक्षा और पालन पोषण के बहाने क़ैद किया और उन पर यह कलङ्क लगाया कि यह बादशाह के औरस पुत्र नहीं हैं और एडवर्ड पांचवें का जो मुहूर्त राजगद्दी पर बैठने का था उसे हीले बहाने से टाल दिया ॥ और लार्ड हेस्टिङ्गस जो बादशाह की सन्तान का रक्षक और शुभचिन्तक था उस के सारडाले ने

के उपाय में प्रवृत्त हुआ ॥ अन्त को रथा लार्ड हे स्टिङ्ग स को मरवाडाला और फिर उसी समय से निर्भय होक र मृतक बादशाह की सन्तान को कष्ट देने लगा और वे भउक राज्य का अधिकारी हुआ ॥ ज्यूक व किङ्घम की सहायता पाकर उसने लोगों को अपने वस में किया तब सब ने रिचर्ड अर्थात् ज्यूकग्लास्टर को बादशाह की पदवीदी ॥ जब मुकुट उस के सम्मुख रक्खा गया प्रत्यक्ष में उस ने शोक पूर्वक एक ठंडी सांस भर कर उसे अङ्गीकार किया ॥

शाह रिचर्ड तीसरा

इङ्गलिस्तान में जितने बादशाह पहले हुए हैं उन सब से यह बादशाह बड़ा अन्यायी और निर्दयी था एक दोष सदैव दूसरे दोष का कारण होता है और कपट छल से न्याय दूर हटता है और जो कि दूसरे का सत्व लेता है उसे अपनी रक्षा का उपाय अवश्य करना पड़ता है ॥ इस बादशाह ने राजगद्दी पर बैठतेही बैकुंठ वासी बादशाह के दोनों बेटों को मरवाडाला जब कि वह अधर्म कर चुका तबही अर्लरिचमण्ड के समाचार पाए कि मारमन के देश से सेना लेकर आता है ॥ यह बादशाह भी युद्ध कर्म में बड़ा निपुण था शीघ्र सेना सजी और राज्य के दावे पर शत्रु से संग्राम करना विचारा ॥ और दो तीन दिन पीछे बासवर्थ के मैदान मे दोनों ओर की सेना तुल कर खड़ी हुई और खूब युद्ध मचा अंत में बादशाह रिचर्ड मारागए और दोनो कटक अर्लरिचमण्ड अर्थात् शाह हेनरी सातवें के आधीन हुये ॥ बादशाह

रिचर्ड बड़ा कपटी और छली था जिस समय अप-
ना भेद छिपाना कभी कोई उसके मन का मर्म न पा-
ता उसके सम्पूर्ण चाल चलन बादशाहों के विपरीत
थे और पशुओं की भांति अत्यन्त कठोर था ॥ धर्म
शास्त्र और दैवी आज्ञाओं को तुच्छ समझता और
सद्गुण और सहन शीलता से रहित था परन्तु राज
गद्दी पर बैठतेही कुछ धर्म से न्याय भी किया था ॥
यह बादशाह शरीर का ठिङ्गना और स्वरूप में बहु-
त बुरा था और उस का एक हाथ ऊपर से सूखाहुआ
और एक कन्धा दूसरे कन्धेसे बढ़ाहुआ था इसलिये
लोगों ने उसे कुबड़ा प्रसिद्ध किया ॥ इतिहास बेत्ता
ने लिखा है कि यह बादशाह सन् १४८५ ई० में लड़ा
ई के भीतर मारा गया और इस के पीछे राज कुमार हे-
नरी को राज गद्दी मिली ॥

शाह हेनरी सातवां

इस बादशाह का वृत्तान्त यह है कि इसने राज
गद्दी पर बैठते ही बादशाह एडवर्ड चौथे की अली
ज़बथ नामी पुत्री से बिवाह किया इस लिये कि योर्क
और लङ्कास्टर के दोनों घरानों में सम्बन्ध और मेल
मिलाप हो कर द्वेषभाव मिटजाय ॥ यह बादशाह ब-
ड़ा भाग्यवान हुआ और अपने देश और निकट वर्ती
प्रदेशों में अधिक कीर्तिवान और प्रशंसनीय था और
उस की धर्म दृष्टि से वाणिज्य में व्यापारियों को प्रति
दिन लक्ष्मी की वृद्धि हुई और महसूल का पैसा सब
प्रसन्नता पूर्वक राज में चुकाते रहे उस के समय में
जिस किसी सरदार से अपराध वा चोरी बनपड़ी

बादशाह ने जो दंड के योग्य था उस को तो दंड दिया और जो मारने के योग्य था उसे मरवाडाला ॥ उस के पीछे सब सरदार उस की सेवा और आधीनी में रहे बादशाह ने सम्पूर्ण पशुप्रकृती जनों को मनुष्यत्व सिखाकर बुद्धिवान और विद्वान किया ॥ जोरीतें बादशाह की युक्ति से बदल गईं उन का इस प्रकार शीघ्र बदलजाना प्रत्यक्ष में सब भांति असम्भव था उस के ऐश्वर्य्य और तेज प्रताप के कारण चारों ओर के बादशाह उस से मेल मिलाप रखते थे जो कुछ कठिनता अपने वा अन्य देश पर दिखाई पड़ती उस में बुद्धिवानी से सब प्रकार अपनी लाभ बिचार लेता यद्यपि अनेक विघ्न उसके ऊपर पड़े परन्तु वह अपनी बुद्धिवानी की युक्ति उक्ति से उन से बचा रहा ॥ बादशाह अलफ्रेड के समय के पीछे इस बादशाह का ऐसा अच्छा राज्य हुआ कि इस अन्तर में और किसी बादशाह का न ही हुआथा ॥ जो ग्लानि कि बादशाह के मध्ये किसी २ मनुष्य के मन में उपजी वह इस कारण थी कि बादशाह सब भांति बिरोध से बचता रहता था और उसके सम्पूर्ण व्यवहार इस आशय पर थे कि जब से प्रभु ईसामसीह इस संसार में पधारे तब से शांति और क्षमा का उपदेश हुआ और जब वे इस संसार से सिधारे तब भी शांति और क्षमा की शिक्षा की वास्तव में यह बात सच है परन्तु मनुष्यत्व के कारण बादशाहों का चित्त इन बातों में थोड़ा लगता है ॥ इस बादशाह ने २३ वर्ष राज्य कर के बावन वर्ष की अवस्था पाकर सन १५०४ ई० में मृत्यु पाई ॥

शाह हेनरी आठवां

इस बादशाह का राज्य के आदि में ऐसा प्रताप और ऐश्वर्य्य जागा कि प्रत्यक्ष में उस की समान और कोई भाग्यशाली नहीं हुआ पचास सहस्र विजयी विकट सेना सदैव अपने यहां उपस्थित रखता ॥ फ्राँसीसों की चढाई से इङ्गलिस्तान की प्रजा निर्भय थी इस लिये विचारा कि उस देश को अधिकार में करें परन्तु यात्रा करने के पीछे दोनों ओर से लड़ाई बन्द रही और इङ्गलिस्तानियों के वे सब विचार वृथा गए ॥ जो धन सम्पति कि अगले बादशाहों ने इकट्ठी की थी उसे शाह हेनरी मूर्खता से अनेक प्रकार के कुकर्मों में खर्च करने लगा यद्यपि सब जमा उड़ादी परन्तु बादशाह को उलज़ी नाम मुख्तारकार की ओर से पक्का भरोसा था कि फिर खजाना भरदेगा क्यों कि उस काम की योग्यता में उसकी समान और कोई दूसरा मनुष्य नथा बादशाह ने देश की जमा पर कुछ दृष्टि न की केवल द्रव्य के उठाने लुटा नें में लगा रहा ॥ सम्पूर्ण राजकाज उसी राज्यमन्त्री के अधिकार में था और बादशाह सदैव सुन्दररूपवती स्त्रियों के अनुराग में डूबा रहता और प्रजा के दुःख सुख की कुछ सुध न लेता और उलज़ी ने भी अपना अधिकार बना रहने के लिये बादशाह को अज्ञानता में रक्खा ॥ उस समय में पोप अर्थात ईसाई मत के आचार्य्य ने अपराधों के क्षमा करने की दुकानदारी फैलाई कि जो कोई रुपया जमा करे केसाही दोषी हो नर्क दंड से बचा रहेगा पोप के दूत

बुरे कर्मों से एक मार्टिनलूथर नाम मनुष्य जो बड़ा विद्वान और पण्डित था उसने ऐसा बुरा माना कि उसकी आधीनी को छोड़कर और उसकी विपरीतता से दुखी होकर सैकड़ों कलङ्क लगाने लगा और कई प्रमाणीक पुस्तकें पोप के आचारों के खण्डन करनेके विषय में बनाकर छपवादीं ॥ और उसी समय से पुस्तकों के छपने की रीति निकली इससे अनेक प्रकार की विद्या की वृद्धि हुई और जो कपट छल दीन के मतलबी खादिमों के थे वे सब जाते रहे क्योंकि पुस्तकों की विशेषता से प्रत्येक को वृत्तान्त प्रकाशित हुआ ॥ फिर पोप ने इश्तिहार दिया कि जो मनुष्य उसकी पुस्तक को पढ़ेगा उस पर शाप और पाप पड़ेगा ॥

संयोग से शाह हेनरी ने उन के मुबाहिसे के बीच में पड़ कर पोप की इच्छा से मार्टिनलूथर की पुस्तक पढ़ी और न्याय दृष्टि से उस की पुस्तकको शोधकर उस में अपनी युक्त उक्ति मिलाई और पोप ने उसे स्वीकार करके बादशाह को धर्मरक्षक की पदवी दी ॥ उस समय पोप को यह ध्यान नहीं था कि बादशाह मेरी रीतों पर पूरा बैरी होजायगा बादशाह के दरबार में उलज़ी नाम सरदार बहुत काल तक अधिकारी रहा जिस भले बुरे काम पर बादशाह का चित्त संलग्न देखता श्रम और उद्योग करके उसे पूरा करना ॥ निदान उलज़ी के अधिकार के घटने की दशा आई और प्रसिद्ध है कि संसार में जो बादशाह केवल अपने आनन्द के लिये प्रजा के

दुख हार्द अधिकारी का सुहलगाता है तौ फिर कभी न कभी किसी नुच्छ बात पर उस को अधिकार से उता रदेता है ॥ वास्तव में बादशाहों की प्रीति क्षणिक और अविश्वासित है ॥

एक समय बादशाह के जी में यह चाव हुआ कि पहली स्त्री को छोड़कर दूसरा विवाह करें सो पोप की सम्मति लेने में उलझी नें कुछ सहायता न दी इस लिये उसे दरबार से निकाल दिया ॥ जो शिक्षा कि उसने मरण समय की थी वह अब तक मसिद्ध है कि मैंने जिस प्रकार बादशाह की सेवा और आज्ञा का प्रतिपालन किया जो मैं अपने ईश्वर की करता तो वह मुझे कभी ऐसी विपत्ति दशा में न छोड़ता ॥ बादशाहने मत धर्म की दृष्टि से और कुछ राज्य की तृष्णा से पोप की प्रतिष्ठा और अधिकार उठा दिया ॥ यह बादशाह बड़ा शूर वीर और दानी था परन्तु उस के प्रेम प्यार का कुछ ठिकाना न हीं था जो उस के दुराचोंकी अवस्था लिखी जाती तो अन्याय और अधर्म और निर्दयता और विशेष ख़ राबी और ख़ुदमतलबी के मज़मून से एक पोथी भर जाती ॥ कोई बादशाह मत के आग्रह और कोई मन्त्रियों की खोटी सम्मति से अन्यायी कहाता है परन्तु शाह हेनरी केवल बुरे स्वभाव के कारण अधर्मी कहलाया देश प्रबन्ध और मत धर्म आदि सब बातों में बड़ा उपाधी था और इस ने छः बेग मों से विवाह किया जहाँ एक को दो चार महीने बितीत हुए उस से अनुराग उठा के और कुछ बहाना बता के

प्रीति की रीति से रहित होकर या तो उसे छोड़ दिया वा शूली देदी उसी समय में विद्वानों की सम्मति से प्रभू ईसा मसीह के मत का निर्णय होकर उस में से क्षेपक छाँट दिये गये ॥ इस बादशाह ने ३७ वर्ष राज्य करके सत्तावन वर्ष की अवस्था पाकर सन् १३४५ ई० में मृत्यु पाई और उस के बेटे **एडवर्ड** को राजगद्दी प्राप्त हुई ॥

शाह एडवर्ड छटा

यह बादशाह उस समय में विद्या गुण और प्रतिष्ठा में एक ही था और देश प्रबन्ध में भी बड़ा चतुर और बुद्धिवान था ॥ एक रोज़नामचे की पुस्तक अपने पास रखता और उस में विद्वान गुणी प्रतिष्ठित जनों के व्यवहारों की रीति भांति लिखता और अन्य देशों के व्यवहारों से भी खूब जानकार था जब किसी देश का वकील इङ्गलिस्तान से अपना काम कर के स्वदेश में जाता इस बादशाह की अद्भुत और अद्वितीय बातें अपने स्वामी से कहता ॥ निश्चय है कि जो इस की आयु दीर्घ बड़ी होती तो अन्य बादशाहों के मुख्याधिकारियों के विपरीत यह बादशाह अपने मुसाहिब **फ़िलज़ॅफ़ेलरिक** नामी से अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त करता क्योंकि उसे प्रत्येक देश में विद्या उपार्जन करने के लिये भेजा और बारंबार उसे यह शिक्षा लिखता रहा कि कुसङ्ग और विषय से बचना और मन से उन बातों पर ध्यान धरना जिनमें सर्कार का और अपना और इस देश का भला दीख पड़े ॥ यह बादशाह बड़ा प्रमाणिक सहनशील दयावान नीतिज्ञ

और बुद्धिवान था ॥ राज्य के ख़र्च की आवश्यकता के लिये जो किसी से रूपया उधार लेता तो उस के चुकाने की बड़ी चिन्ता रखता इस विश्वास पर कि जो बादशाह वचनों का प्रतिपालन नहीं करता वह जीते जी अपना भरम और धर्म गँवाता है इस कारण प्रतिदिन शाह एडवर्ड की प्रतीत बढ़ती गई जिस समय कहीं बाहर जाता ढंढोरा फिरवाता कि जो कोई ग़रीब दीन दुखी अपनी व्यथा कहा चाहे तो बिन रोक टोक बादशाह के सों ही निवेदन करे यद्यपि इस बादशाह को सब प्रकार से मन का आग्रह अधिक था परंतु आप मत पर दृढ़ विश्वास नहीं रखता था और उस अनुपम परमेश्वर ने जन्म से ही उस को स्नेह और प्रेम प्रीति और शील स्वभाव का रूप बनाया था ॥ और चेष्टा चारों और उत्तम चालचलनों और नम्रता से सब छोटे बड़ों के मन को प्यारा लगता था अन्त को यह बादशाह राजगद्दी होने के सात वर्ष पीछे सन् १५५३ ई० में परलोक को सिधारा और सम्पूर्ण लोगों ने उस का बड़ा शोक सन्ताप माना और उस के मरने के पीछे लोग उस के यश को स्मरण करते और कहते कि यह बादशाह बड़ा भाग्यवान था सन्तान के न होने से बैकुंठ वासी बादशाह की बहिन मेरी नामी शाह हेनरी आठवें की बेटी को राजगद्दी प्राप्त हुई और इस बादशाह के वसीयतनामे अर्थात् मरण पत्र के अनुसार जेनगे भी राज्य सत्ताधिकारिणी हुई ॥

मलिकह मेरी

बादशाह के मरने के पीछे मलिकह मेरी

एड्ह हेनरी आठवें की बेटी और जेनगे जिसे वसी
यत नामे का बल था दोनों राजपाट की अधिकारिणी
हुई ड्यूक नारथमरलन्द की सहायता से जेनगे ने
दस दिन तक राज्य किया इस अंतर में मलिकह मेरी
ने प्रत्येक प्रतिष्ठित सरदारों को इस आशय के पत्र
लिखे कि हमारे घराने में पहले से राज्य होता चला आ
या है इस लिये राज्य की सत्ताधिकारिणी मैं हूं और
तुम सब से सहायता मांगती हूं कि शुभचिंतक होक
र शीघ्र मेरा राज्य मुझे दिलवाओ इस बात पर मलिकह
का सत्व ऐसा दृढ़ हुआ कि सम्पूर्ण देश में उसके रा
ज्य की डोंडी पिट गई और ग्यारवें दिन उसने दरबार
को सुशोभित किया बहुत से प्रजा के लोग मलिकह
के मत पक्ष से और पोप के झूठे मत पर बिश्वास कर
ने से अप्रसन्न हुए वरन जेनगे जो मार्टिनलूथर
नामी आचार्य के मतानुयायी थी उस का राज्य उड
जाने से सब दुखी हुए मलिकह मेरी जब राज्यगद्दी
पर बैठी तब ड्यूक नारथमरलन्द निरास होकर भा
गा परन्तु पकड़ागया और शूली दियागया पोप के
मत के प्रचलित करने के लिये राज्याधिकारियों ने म
लिकह को स्पेन के शाहज़ादे के साथ विवाह करने की
सम्मति और उसने अंगीकार की ॥ थोड़े दिन पीछे
मलिकह मेरी ने जेनगे और उस के पति को शूली
दी और फिर धर्मबादी रिडली और लातीमर ये
दोनों मनुष्य मार्टिनलूथर के पक्ष के कारचितामें
चुन कर जलायेगये आग लगाने के समय एक ने
दूसरे से कहा कि हे मित्र बहुत धैर्य्य रक्खो ईश्वर ने

चाहा तो आज इस इङ्गलिस्तान में ऐसी आग लगेगी कि प्रलय काल तक न बुझेगी फिर एक क्रानमर नामी धर्म वेत्ता दोसौ सत्तर मनुष्यों के सहित इसी बैर से अग्नि में जलाया गया वास्तव में उस की कुछ येही मत सम्बन्धी बातें कठिन और कठोर न थीं वरन उस के संसारिक व्यवहार भी सब ऐसे ही बुरे थे उन के कारण उस को भी कुछ यश प्राप्त न हुआ ॥ कैलेस नगर जो दो सौ वर्ष से भी अधिक काल से इङ्गलिस्तान के अधिकार में था कपट छल से घिर गया और मामला ठहर कर नये सिरे से फ्राँसीसों के अधिकार में आया इस पराजय पाने से सम्पूर्ण इङ्गलिस्तान में खलबली पड़ी और इस चोट से मलिकह मेरी को भी ऐसी जलन हुई कि एक दिन झुंझला कर कहा कि जो मैं मरजाऊं तो भी कैलेस का दाग़ मेरे हृदय में बना रहेगा फिर बहुत सी कठिनाइयों के पड़ने और प्रजा के अविश्वास और पति के अहित और स्नेह त्याग से और प्रत्येक लड़ाई में पराजय और हानि पाने से मलिकह का मन मर गया और रोग ने आ घेरा और विशेष कर मत की ओर से उस का चित्त और भी बिगड़ गया और स्वभाव की ईर्षा खोरी और सत् धर्म की शत्रु और बड़ी अभिमानिनी स्वेच्छाचारिणी और कृपण थी और पोप के झूठे मत के खोज के सिवाय और कोई बात उस में सराहने के योग्य न थी ॥ जो सावधानी और चतुराई और दृढ़ता के गुण कि उस के पुरखाओं में पाये जाते थे वे इस में साधारण थे और चित्त की डामाडोली और बचनों के परिणा

ग और स्वेच्छाचार से अपने पिता शाह हेनरी आठ
वें की भांति बची रही ॥ धीरे२ रोग बढ़ने लगा और
र मांदगी की अवस्था में यह विचार जी में आया कि
प्रजा के लोग मुझे बुरा और अधम जानते हैं और
मेरे पीछे अलीज़बथ नामी शाहज़ादी राज्याधि-
कारिणी होगी ऐसे ऐसे अनेक प्रकार के सोचों से
मन में ऐसा क्लेश हुआ कि बड़े जोर से ज्वर चढ़ आया
॥ लोगों ने जब उस का अन्त समय निकट देखा
तब शाहज़ादी अलीज़बथ नामी मलिकह की ब-
हिन को सबों ने सम्मति करके राजगद्दी पर बैठाया
॥ मलिकह मेरी निष्फल जन्म गँवा के और नि-
राश हो के राज्यगद्दी होने के पांच वर्ष पीछे सैंताली
स वर्ष की अवस्था पाकर सन् १५५८ ई० में परलोक
को सिधारी और शाहज़ादी अलीज़बथ को राजगद्दी
प्राप्त हुई ॥

शाहज़ादी अलीज़बथ

यह शाहजादी बे खटके राजगद्दी पर सुशो-
भित हुई और प्रजा में ऐसा आनन्द और हर्ष छाया
कि कहने में नहीं आता ॥ राज्य के आरंभ से ही
उस ने बिचार किया कि इङ्गलिस्तान में ईसाई
मत से अशुद्धता निकलजाय और मार्टिनलूथर
के मतधर्म की रीति चलाई जाय ॥ यह बात मलिकह
के दरबार में प्रकाशित हुई और पार्लीमेंट की प्रस-
न्नता से दृढ़ होकर पक्की सनद की रीति पर बर्ती गई
पार्लीमेंट की पहली सभा में जो राज्याधिकारी का
नूनों के अनुसार वर्ष के अन्तर पर तीन वार मही-

ने राज्य के काम काज करते हैं उन में इस मत की रीति चल गई और उस रीति का पालन अब तक होता है ॥ इस संसार में सदैव किसी का ऐश्वर्य्य और सुख स्थिर नहीं रहा पहले तो मेरी स्टूअर्ट नामी स्काटलेण्ड की अधिकारिणी जो मलिकह अलीज़बथ की फुफेरी बहिन थी उस से शहज़ादी अलीज़बथ का वैर और द्वेष बंधा जब कि राजा और प्रजा में मत धर्म के विषय अंतर पड़ता है तो अवश्य उस का अन्त बुरा होता है क्योंकि एक ओर अपमान और दूसरी ओर अविश्वास और लज्जा उत्पन्न होती है स्काटलेण्ड की अधिकारिणी मेरी मत के सुधारने वालों के ऊपर हंसती थी और मन से इन्कार और बचाव रखती थी और वे भी उस के हंसी उड़ाने के कारण द्वेष भाव रखते थे ॥

निदान दोनों ओर से यह विरोध बड़ा संयोग से मेरी ने अपनी प्रजा को भी मत के पक्ष से अप्रसन्न और दुखी किया और बुराइयों करके ऐसा बैर बढ़ाया कि प्रजा ने लड़कर उसे हरा दिया और वह स्नारवस्लीवन के गढ़ में कैद हुई ॥ वहाँ चौकी पहरे वालों के सताने से अनेक प्रकार के दुःख और कष्ट सहे मेरी ने अपने रूप की सुन्दरता से और बहुत से कौल क़रार करके डगलस नामी साहसी सरदार को अपना सहायक बनाया इस लिये कि वह श्रम और उद्योग करके उसे क़ैद से छुड़ावे ॥ जब उस के छूटने की चर्चा हुई बहुत से लोगों ने नये सिरे से स्नेह और शुभ चिन्तकता प्रकाशित की

कई दिन पीछे छः सहस्र सिपाही उसकी सेवा में आकर उपस्थित हुए परन्तु प्रजा के लोग उसकी पहली कुचालों और बुराइयों को नहीं भूले थे इसलिये उन्हों ने फिर लड़ाई की और मलिकह को दूसरी बार शिकिस्त दी तब लाचारी से थोड़े मनुष्यों को साथ लेकर शहज़ादी अलीज़बथ से रक्षा पाने की आशा पर इङ्गलिस्तान की ओर भागी और वहाँ रक्षा पाने के बदले क़ैद हुई और बन्धन में पकड़ के अत्यन्त दुखी और लाचार होकर अठारह वर्ष तक अपने छूटने के हज़ारों उपाय किये इस अन्तर में कई मनुष्यों ने उस से मिल के इङ्गलिस्तान की मलिकह के मारने का विचार किया अन्त को यह भेद खुलगया और उपाधिकी सम्मति देने से उन सबों ने शूली पाई इन दुष्ट अधर्मियों के मारे जाने से प्रतिष्ठित मलिकह मेरी के भी मारे जाने की अवस्था दी गई ॥ यद्यपि प्रत्यक्ष में लोगों ने अनुमान से यह जाना कि मलिकह अलीजबथ इस आज्ञा के देने से शोच युक्त हुई परन्तु राज्याधिकारियों की सम्मति से यह आज्ञादी और वारण्ट अर्थात् शूली का हुक्म चार सरदारों और दो जल्लादों को सौंपागया कि उस को मारें वे आज्ञानुसार जिस गढ़ में वह क़ैद थी गये और उसे जताया कि कल सवेरे पहर दिन चढ़े तुम्हारे मार डालने की आज्ञा है जो कुछ काम काज करना हो सो इस अवधि में करलो ॥ जबरात्रि वितीत हुई और मरने का दिन आया तब मलिकह ने अच्छे २ मखमल के वस्त्र पहरे जब समय निकट आया एक सरदार ने पास

जाकर कहा कि मेरे साथ मरण स्थान पर चलिये उस
दिया कि मैं तैयार हूं यह कह कर दो साहिबों के कन्धे
पकड़ कर उठी और अपने नौकर चाकरों से विदा होक
र काल घर को चली ॥ वह स्थान बहुत अच्छी काली
बनात से सजा हुआ था वहाँ पहुंच कर बैठ गई और
उन सरदारों के मुसाहिबों ने वारण्ट अर्थात् हुक्म
नामा पढ़कर सुनाया उस के पीछे एक पादरी कुछ म
न के विषय की शिक्षा करने लगा इस पर मलिकह मे
री ने निषेध किया और कहा कि बस में पोप के मत
धर्म में मरूंगी फिर दोनों जल्लादों ने हाथ जोड़कर प्रा
र्थना की कि क्षमा कीजिये हम आज्ञा का पालन किया
चाहते हैं कहा कि मैं अपनी प्रसन्नता सहित जैसे
अपने ईश्वर से मुक्ति चाहती हूं वैसे ही तुम पर भी
क्षमा करती हूं फिर निडर होकर अपनी निर्दोषता का
वर्णन किया जब कि उस की आँखें रूमाल से बांधी
निडर होकर तुरंत सिर झुका दिया और ईश्वर का ना
म मुख से लिया तब जल्लादों ने झट उस का सिर उड़ा
दिया इस स्थान पर इतिहास वेत्ता ने लिखा है कि जो
सुन्दर रूप गुणस्त्रियों में चाहिये वह मलिकह मेरी
में था यद्यपि मेरी से अपराध बन आया परंतु उस
की अपेक्षा यह दंड बड़ा भारी और कड़ा था जो लोगों
के लड़ाई झगड़ों पर दृष्टि की जाय तो दोनों दोषी ठहर
तेहैं यद्यपि मेरी दोषों से भरी हुई और दंड के योग्य थी
परन्तु उसने शाहज़ादी अलीज़बथ के हाथ से नि
पराध और अनुचित प्राण दंड पाया क्योंकि वह रा
नी को इस प्रकार दंड देना योग्य न था इसअन्तर

में स्पेन का फ़िलिप नामी बादशाह जो बहुत काल से इङ्गलिस्तान के नष्ट करने के विचार में था उसने अपने उपाय बाँधे और वह बात जिस से अपनी प्रतिष्ठा और प्रयोजन था यह थी कि पोप का मत वृद्धि को प्राप्त हो और जो मत मार्टिनलूथर ने निकाला है वह जड़ मूल से उखड़ जावे ॥ इस विचार से इङ्गलिस्तान पर चढ़ाई की और एक सौ तीस जहाज़ का बेड़ा जिसका नाम अपने घर में अजय रखलिया था और उस में चौदन सहस्र सेना चढ़ सकती थी इङ्गलिस्तान को भेजा इङ्गलिस्तान में जब यह ख़बर पहुंची तब सब छोटे बड़ों के मन में भय छागया इस बेड़े के केवल तीस नंगी जहाज़ ऐसे थे जो समुद्र में इस बेड़े का सामना कर सकते थे ॥ यद्यपि ये शत्रु की सेना से गणना में बहुत थोड़े थे परंतु शूरवीरता और बाहु बल में उन से अधिक थे ॥ स्पेन से बेड़े के चलने के दो दिन पीछे एक बड़ी भारी आँधी उठी उस से बहुत से जहाज़ डूब कर तबाह होगए ॥ इस आपत्ति से लाचार होकर वे फिर स्पेन के बंदर स्थान को लौटगये और फिर टूटे फूटों की मरम्मत कर के दूसरी बेर चढ़ाई करने का विचार किया ॥ संयोग से से जहाज़ाधिपति मरगए और इङ्गलिस्तान पर चढ़ाई की आज्ञा ड्यूक मडीनासिडोनी को मिली जो जहाज़ी कामों सें बहुत ही अज्ञान था उसने कई दिनों में जहाज़ों को सुधार कर फिर लंगर उठाया और एक मच्छी पकड़ने वाले के मुख से सुना कि स्पेन के बेड़े पर आपत्ति पड़ी सुनके इङ्गलिस्तानी

अपने देश को लौटगए और बहुत सी जंगी जहाज़ी से
ना को नौकरी से छुड़ा दिया ॥ स्पेन के जहाजाधि
पति ने यह झूठी ख़बर पाकर जैसा कि फ्लाँदर्स से औ
र सेना के साथ लेने की आज्ञा पाई थी उस के बुलाने का
निषेध रक्खा इस ख़ुशी पर कि इङ्गलिस्तान के टापू
में शीघ्र पहुंच कर जो जहाज़ वहाँ मिलें उन्हें छार २
कर डालें इस लिये तुरंत सब जहाज़ों के बादबान खुल
वा दिये ॥ इङ्गलिस्तान का जहाज़ाधिपति लार्ड अ
फ़ङ्घम जो उन की ख़बर लेने पर तैयार था झटपट
सवार होकर चलता हुआ जब थोड़ी दूर पहुंचा देखे
तो स्पेन का बेड़ा सात कोस तक बराबर अर्धचंद्रा
कार के रूप चला आता है जोंही वह कैलेस के ब
न्दर स्थान में पहुंचा लड़ाई होने लगी ॥ लड़ाई की
आदि में इङ्गलिस्तानियों ने स्पेन के आठ जहाज़ पक
ड़ के उन में वारूत भरी और सोख़ता लगा कर शीघ्र
उन्हें उन के जहाज़ों में मिला दिये वहाँ पहुंचते ही उ
न के फटने से जहाज़ों के टुकड़े २ उड़गये इस आप
त्ति से घबरा बहुत से कर स्पेन का बेड़ा बिखरा ॥ इङ्गलिस्ता
न के जहाजाधिपति ने उन का पीछा किया और भाग
ते में उन के बारह जहाज़ और हाथ आए ॥ स्पेन
वाले ऐसे संकट में पड़े कि डूबते मरते और आपत्ति
से बचते बचाते उन के केवल तीस जहाज़ बाकी र
हगए और वे लौट कर अपने देश को पहुंचे ॥ इस
शाहज़ादी के समय में कई नवीन वस्तु जैसे छुरी कां
टा जेब घड़ी और तमाकू आदि इङ्गलिस्तान में आई
और सेजगाड़ी भी जब ही से है पहले घोड़े की सवारी थी

॥ जो इतिहासों की पुस्तकों में खोज कीजाय और दे-
शों की बढ़ोतरी और वृद्धि का वृत्तान्त देखाजाय तो
इस शहज़ादी के समय की सी धनवान प्रजा कम
देखने में आवेगी ॥ प्रधान और मन्त्रियों और राज्या-
धिकारियों की योग्यता के पहचानने और मालगुज़ा-
री के प्रबन्ध और राजनीति में यह शहज़ादी ऐसी
बुद्धिवान और चतुर थी कि अगले पिछले बादशाहों
में कोई इस विषय में उससे बढ़ कर नहीं हुआ ॥
शहज़ादी **अलीज़बथ** ने राजनीति में निस्सन्देह
यश कीर्त्ति और नाम प्राप्त किया और अपने राज्य
के समय में कभी ऐसा संयोग नहीं पड़ा जो किसी
मनुष्य को प्रेम प्यार वा किसी के कहने सुनने वा प-
क्षपात से कोई बड़ी पदवी दीहो सिवाय उस के कि
जिस ने सब प्रकार से प्रजा के साथ भलाई की ॥
यह शहज़ादी शरीर में लम्बी और स्वभाव इस का व-
ड़ा चंचल और क्रोधी था और रूपस्वरूप पुरुषों का सा
रखती थी और राजनीति मे बड़ी चतुर दूरदर्शी और ज्ञा-
नवान् थी राज्य के आरंभ से अंत तक उस के अच्छे
२ चालचलन प्रकाशित हुए और प्रजा की रक्षा और
देश प्रबन्ध के लिये उसने अपने ये तीन नियम बां-
धे एक यह कि सब के मन में बसी रही दूसरे बाद-
शाही कोश में से प्रमाण का ख़र्च किया तीसरे और
पास के देशों के लोगों के लड़ाई झगड़ों को चुकातीर-
ही ॥ उस के शत्रुओं ने लिखा है कि उस के स्व-
भाव में बनावट और ख़ुशामद बहुत थी और इ-
न्हीं दोनों बातों में पूर्ण होने के कारण उसकी

प्रतिष्ठा और योग्यता थी और लिखा है कि जैसी वह पवित्रता प्रकाशित करती थी वैसी न थी परंतु उनका यह लेख किसी पक्के प्रमाण से पुष्ट नहीं होता ॥ और एक प्रकार से सच भी है क्योंकि कहीं २ इस बादशाह जादी ने संसारिक व्यवहारों को मत धर्म की आज्ञाओं पर प्रबल रक्खा और मेरी के मरवाडालने में न्याय नीति से रहित हुई ॥ जब कि यह शाहज़ादी मरने को हुई तब स्काटलैंड के स्वामी मेरी स्टूअर्ट के सुपुत्र बादशाह जेम्स छटे को युवराजगद्दी मिली निदान शाहजादी अलीज़बथ पैंतालीस वर्ष राज्य करके ७० वर्ष की अवस्था पाकर सन् १६०३ ई० में इस अनित्य संसार को त्याग परलोक को सिधारी ॥

इङ्गलिस्तान में अब तक उस की कीर्ति और प्रशंसा चली जाती है और स्काटलैंड का बादशाह जेम्स छटा इङ्गलिस्तान में आकर जेम्स पहले की पदवी से राजसिंहासन पर बैठा ॥

बादशाह जेम्स पहला

यह बादशाह सम्पूर्ण मनुष्यों की प्रसन्नता से राजगद्दी पर बैठा राज्य के आरंभ में रोमनकाथलिक्स पोप के मतावलम्बियों को उस के राज्यपाने और मेरी के वारिस होने से यह दृढ आशा थी कि पोप के मत की सहायता करेगा परंतु बादशाह को दो तीन बेर पोप के कानूनों के विपरीत मलिकह अलीज़बथ के आचरणों पर चलना दुआ देख कर अपनी आशा के विरुद्ध पाया तब बहुत अप्रसन्न और दुखी होकर ऐसी बुद्धि विचारी जिससे

बादशाह और पार्लीमेंट एक क्षण में नाश को प्राप्त होजांय और वह यह है कि पार्ली मेंट की कचहरी के नीचे एक स्थान था उस में सौदागरी के लकड़ी और कोयले भरे थे रोमन काथलिक के लोगों ने वह सब सामग्री मोलले के उस घर को भाड़े लिया फिर धीरज से बारूत के छत्तीस पीपे उन लकड़ियों और कोयलों में छिपाकर वे धड़क हो द्वार के पाट खोल दिये और किसी के आनेजाने की रोकटोक और पड़ी नरक्खा क्यों कि जो करते तो कला बिगड़ जाती ॥ अपने मन चीते मनोरथों के सिद्ध होजाने की आशा पर बाक़ी कामों के उपाय में लगे और विचारा कि पार्लीमेंट के प्रथम इजलास के दिवस आप बादशाह और बेगम और उन का पाटवी पुत्र अवश्य सभा में आवेंगे और हम उस समय इस बारूत में आग लगावेंगे जिससे सम्पूर्ण बादशाह का कुटुम्ब नाश होजाय और कदाचित बादशाह का छोटा बेटा जो बाल्यावस्था के कारण न आवेगा तो उसे वहीं मारेंगे और इस मनोरथ के सिद्ध होने के पीछे शाह जेम्स की बेटी को राज्याधिकार पर बैठावेंगे इस लिये कि वह पोप के मत की सहायता और वृद्धि करेगी ॥ निदान इस अधर्म विचार में पार्लीमेंट की सभा का दिवस पास आ पहुंचा और वे सब अधर्मी इस उपाधि के उठाने वाले उस घड़ी के आने की अभिलाषा में अधीर हो रहे थे कि देखिये यह मन सूबा किस भांति पूरा पड़े यद्यपि यह भेद बहुत से लोगों को विदित था पर

नु डेढ़ वर्ष तक गुप्त रहा जब कि उन निर्दई अधर्मियों को किसी की करुणा और दया न आई तब केवल एक मनुष्य की प्रीति के कारण सम्पूर्ण बादशाह के कुटुम्ब परिवार और सरदारों की जान बची अर्थात् परसी नाम एक मनुष्य जो इन दुष्टों में मिला हुआ था उसने चाहा कि अपने एक मित्र को इस आपत्तिकाल से बचा ले सो उसे इस आशय का पत्र लिखा कि हे मित्र तुम इस पार्सी मेंट से बचते रहना क्योंकि इन हिन्दू दोषियों के दण्ड देने के उपाय में ईश्वर और उस के भक्तजनों की एक सम्मति हुई है और मेरे इस लिखने को साधारण मत समझना तुम्हें उचित है कि किसी दूसरी कचहरी में चले जाओ और इस उपाधि को देखो यद्यपि प्रत्यक्ष में कुछ हलचल न होगी परन्तु निस्सन्देह सांझ सवेरे इस पार्सी मेंट पर महा भारी आपत्ति पड़ी चाहती है और जो इस उपाधि का मुखिया है उस का पता भी नहीं मिलेगा ॥ वह सरदार इस पत्र के आशय को पढ़कर अचम्भे में आया और पहले उस को केवल धमकी जानी अंत को सोच समझ कर उस चिट्ठी को बादशाह के मन्त्रियों के पास लेगया वे भी पढ़कर अनहोनी समझे परन्तु उन्हों ने उस चिट्ठी को बादशाह के पास भेजी बादशाह ने उस को ख़ूब ध्यान से पढ़कर सोच के कहा कि निश्चय कोई नागहानी आपदा बारूत की किस्म से पार्सी मेंट पर पड़े ॥ आज्ञा दी कि इस इमारत के तहखाने को देखो और ख़ूब ढूंढो कि कुछ इस में नहो इस बात में बादशाह के अनुमान को अत्यन्त सराहना चाहि-

क्योंकि करामात की ओर ढूंढने के लिये वह सरदार नियत हुआ जो बादशाह की ड्योढ़ी का रक्षक था यद्यपि उस को दृढ़ आज्ञा हुई थी परन्तु उसने बुद्धिवानी से पार्ली मेंट की सभा के होने का दिवस टाल दिया और उस दिन आप कई नौकरों को साथ लेकर तहखाने में गया ॥ वहाँ क्या अचम्भा देखा कि एक मनुष्य बुरका ओढ़े फ़लीता हाथ में लिये हुए बारूत की सुरङ्ग लगाता फिरता है उस को पकड़ कर देखा तो वह गाईफ़ाक्स नाम मनुष्य निकला और वह बन्धन में पड़ के कहने लगा कि जो तुम्हारे उड़ा देने में मैं आप भी उड़ जाता तो सब मन की अभिलाषा पूरी होती भला जो कुछ हुआ सो हुआ अब क्या होना है फिर उसे तीन दिन खूब जकड़ कर टिकटी से बन्धा रक्खा और पूछा कि सच बता कि इस उपाधि में कौन २ मिले हुए हैं उसने कष्ट पाकर सब विधिपूर्वक बखान्ते कह दिया ॥ तब मुख्य प्रधान के साहिबों ने यह व्यवस्था सुन कर उपद्रवियों के ढूंढने के लिये सिपाहियों को भेजा वे सब अस्सी मनुष्य थे और उन्हों ने परस्पर में यह सम्मति ठहराई कि बादशाह के यहाँ कैद होकर शूली पर चढ़ना कुछ अवश्य नहीं काल तो सिर पर आई चुका नाम कर के ही मरें सो उन में से आधों के अनुमान तो वहीं सिपाहियों के साथ तलवारों से लड़ के करमरे और बाक़ी कैद में पड़ के फाँसी दिये गए ॥ इस बात के ताने छानने और इस महाभारी आपत्ति के शान्ति करने में यद्यपि

बादशाह बड़ा चतुर बुद्धिवान् प्रसिद्ध हुआ था परन्तु
फिर थोड़ेही काल पीछे मुंहलगों के बस में पड़ गया।
इसी कारण से लोगों ने उसके विपरीति निरा मूर्ख और
अज्ञान जाना वास्तव में यह बादशाह ऐसाही था इस
के यथा अधिक धन उड़ाने और अन्याय और रैलीना
म एक मनुष्य जो बड़ा बुद्धिवान् और ईमानदार था
उस के मारडालने के कारण लोगों को उससे ऐसा
भारी बिरोध बंधा कि वैसा किसी और बादशाह से
नहीं हुआ था और ऐसा कलङ्क लगा कि धर्म सेनाओं
ने उसका तिरस्कार और अपमान रक्खा और भाँडोंने
नक्लों में ठट्ठा उड़ाया और मरने के पीछे भी उस की
हँसी रही जो गम्भीरता और शीलता कि बादशाहों
को चाहिये वह उस में नहीं थी डील का सामान्य और
कुरूप और बोल चाल में बड़ा कड़ा था ॥ शीलता
और दयालुता और प्रीति के निबाहने का जो गुण
उस की प्रकृति में था वह कुठौर प्रकाशित होने से
दोषों में गिना गया ॥ इस बादशाह का स्वभाव बड़ा
चंचल और अस्थिर था और ठट्ठा और हँसी और चुह
ल और मसखरी और बिल्ली करके पास के बैठने वा
ले मुसाहिबों को अच्छे २ ओहदे और धन सम्पत्ति
देकर निहाल कर दिया उन्हों ने ऐसी ढिठाई अंगीका
र की थी कि जो कुछ मन में आता बेधड़क होके बा
दशाह से कहा करते और कभी उन पर कुछ ताड़ना
और त्रास ना होती तो ऐसा संयोग ही नहीं पड़ा कि
चतुर विद्वानों को उत्तम पदवी और अधिकार दिया
हो ॥ जो कूट और सच कि उस की प्रकृति के विषमें

लिखा गया है सब यथार्थ ही गिनना चाहिये क्यों कि उस के समय से अधिक हानि और किसी बादशाह के समय में नहीं हुई और इङ्गलिस्तानियों ने इसी के समय में निकटवर्ती प्रदेशों से अपकीर्ति और अप्रतिष्ठा पाई क्योंकि यह बादशाह लड़ाई से बचाव रखता और किसी का पकड़ जाना था सो सम्पूर्ण आपत्ति और संकट और अपयश उसी के कारण से थे निदान इस बादशाह को ५९ वर्ष की अवस्था में शीतज्वर का रोग हुआ अन्त समय चार्ल्स नामी पादरी को बुला कर शिक्षा दी कि मार्टिनलूथर के मत धर्म में दृढ़ विश्वास रखना और जहाँतक बने इस को प्रचलित करना तदनन्तर राजगद्दी होने के २२ वर्ष पीछे सन् १६२५ ई० में यह बादशाह मृत्यु को प्राप्त हुआ ॥

बादशाह चार्ल्स पहला

यह राजकुमार राज्य के आरंभ में बड़ा भाग्यशाली और प्रतापी था और अन्त में ऐसी २ आपत्ति और कठिनाइयाँ सहीं कि वैसी किसी बादशाह ने नहीं सहीं थी ॥ पार्लीमेंट ने सेना और जंगी जहाज़ों का विशेष ख़र्च उस की इच्छानुसार नहीं दिया इस लिये उसने उन राज्य सभाधिकारियों को पदवी से उतार दिया और दूसरे चतुर बुद्धिमान् मनुष्यों को बुलाकर उन के स्थान पर नियत किया परन्तु वे भी अधिक धन उठाने में अप्रसन्न हुए इस बादशाह ने प्रजा से जो ख़िलाफ़ दस्तूर अधिक कर मांगा इस लिये सम्पूर्ण देश में खलबली पड़ी और इसी दशा में अपरलेंड के देश से

विरोध और द्वेषबन्धा क्यों कि उन्हों ने सोचा कि इङ्गलिस्तान के अधिकार में से निकल जाने का ऐसा अवसर फिर न मिलेगा इस विचार के अनुसार अमरलेंड के निवासियों ने सब प्राटिस्टंट अर्थात् मार्टिनलूथर के मत वलम्बी पक्ष पाती क्या स्त्री क्या पुरुष छोटे बड़े धनी निर्धन कङ्गालों की एक साथ कटा करा ली और मत के आग्रह की ऐसी आग्न भड़की कि आपस में भाइयों ने भाइयों को और मित्रों को कुटुम्बियों ने कुटुम्बियों को निर्दयता से मार डाला ॥

अन्त को बादशाह ने उस उपद्रव की आपत्ति को मिटाना चाहा और पार्लीमेंट से सेना के ख़र्च के लिये फिर रूपया माँगा उन्हों ने स्पष्ट उत्तर दिया और कहा कि जो इङ्गलिस्तान में ही यह विघ्न पड़ा और देश प्रबन्ध न होसका और नित्यप्रति के ख़र्च का ही पूरा नहीं पड़ता तो ऐसे बड़े ख़र्च के लिये रूपया कहाँ से आवे ॥ बादशाह के दोषों और अनीति पर चलने के कारण सम्पूर्ण सरदारों और प्रजा के मन का यह आशय प्रकाशित हुआ कि राज्य का नाम मिटा दें और कोई बादशाह गद्दी पर न बैठे चार्ल्स बादशाह के शत्रुओं ने प्रतिदिन अपना जत्था बाँध के और दृढ़ता कर के पहले बादशाह के मन पक्षी १३ आचार्यों को यह कलङ्क लगा कर दोषी किया इन्हों ने पार्लीमेंट की आज्ञा के विना स्वेच्छाचारी से मत के विषय नये क़ानून चलाये ॥ वे मत के आचार्य इस प्रकार का द्वेष भाव देख कर आप से आप पार्लीमेंट की सभा से जुदे होगए इस विरो

ध से बादशाह के राज्य में बड़ा विघ्न पड़ा अन्त को बादशाह इस अनुभाव को न सह सका अपने वकील को आज्ञादी कि पार्लीमेंट मे से लार्ड किमबोलटन और पाँच अंगरेजों को बैरभाव रखने और नमक हरामी के दोष में पकड़ लाओ ॥ उसने बादशाह की आज्ञानुसार चाहा कि उन को पकड़ें परंतु वे हाथ नही आए फिर बादशाह ने खबर पाई कि अपने पक्षपातियों की हिमायत से पकड़े नहीं गए तब आप बादशाह पार्लीमेंट में गए और कहा बड़े पश्चात्ताप की बात है कि मैं आपउन के पकड़ने को आया हूं और तुम सब बचाते हो ॥ फिर सम्पूर्ण सभा मे उन को देखा परन्तु वे पहले ही वहाँ से खिसक गये थे कहीं दृष्टि न पड़े तब बादशाह वहाँ से लाचार होके उलटे फिरे लौटते समय समूह में से एक मनुष्य ने पुकार कर कहा कि हे यहूदियो अपने २ घरों को जाओ और इस कहने से यह आशय है कि जब यहूदियों की जाति अपने बादशाह की आधीनी से निकलना चाहती तब आपस में यही वाक्य कहा करती थी ॥ पार्लीमेंट ने वहाँने से बादशाह के यहाँ यह दरख्वास्त की कि जितने जंगी जहाज़ हैं सब हमारे अधिकार में रहैं बादशाह उन दिनों ऐसे दबे हुवे थे कि जो कुछ उन्होंने कहा अंगीकार कर लिया कहावत है कि कनौड़ी बिल्ली चूहों से कान कटवाती है ॥ यह व्यवस्था देखकर उन्होंने अपने मनलब की कई नई २ बातें निकालीं और वे पूरी हो गई ॥ मनोरथ के सिद्ध हो ने से उन को प्रति दिन २ लोभ बढ़ता गया और अयरलेन्ड के योप के मना-

वलम्बियों के भय का वहाना करके चाहा कि निज़ामत की सेना को भी हमें सौंप दें इस लिये कि हम अपनी इच्छा के अनुसार उस में ओहदेदारों को मुकर्रर करें और उपद्रवियों को युक्ति पूर्वक मत में मिला बें और प्रार्थना की कि थोड़े दिन के लिये सेना को भी हमारे अधिकार में करदीजिये लाचारी से बादशाह ने दुखी होकर कहा कि अब तक जो कुछ तुम्ह ने चाहा सो मैंने अंगीकार किया परन्तु सेना एक क्षण भर के लिये भी मांगोगे तो कभी नहीं मिलेगी इस बात पर दोनों ओर के बचन निबन्धों में अन्तर पड़ा और युद्ध करने पर उपस्थित हुए पार्लीमेंट और प्रजा की ओर से लार्ड **इस्कस** सेना की सरदारी पर नियत हुआ ॥ वह समय बड़ा भयङ्कर एक प्रलय काल के समान दीख पड़ा कि तीस सहस्र मनुष्यों ने एक देश की लड़ाई के लिये कमर बान्धी ॥ और थोड़ी देर की मारामरी में पांच सहस्र मनुष्यों का खेत पड़ा और दोनो ओर की सेना लड़ते २ थकगई और विरोध की आंचकुछ एक ठंडी पड़ी परन्तु इधर उधर लड़ाई होती रही बादशाह ने युद्ध की दृढ़ता के लिये **आक्सफ़ोर्ड** के नगर में नवीन **पार्लीमेंट** की सभास्थापित की आश्चर्य की बात है कि एक समय में दो **पार्लीमेंट** की सभा हुई ॥ बादशाह को इस नवीन **पार्लीमेंट** से कुछ रोकड़ और जिन्स प्राप्त हुई और बादशाह ने अपना काम निकालकर उसे उठाडाला इस अन्तर में पुराने **पार्लीमेंट** ने अनुमान पैंतीस सहस्र सेना के इकट्ठी की और घोषणा दी कि यह सेना सम्पूर्ण लोगों की रक्षा के लिये है उचित है कि हर एक मनुष्य प्रति

सप्ताह में अपने एक दिन का आहार बन्द रक्खे इस लि-
ये कि इस प्रमाण खर्च से सेना की तलब चुका दीजा-
यगी ॥ संदेव के लड़ाई झगड़े और विरोध के कारण
बहुधा लोग दुखी हुए विशेष कर स्त्रियाँ तो ऐसी वा-
कुल हुईं कि तीन सहस्र इकट्ठी होकर पार्लीमेंट में
गईं और प्रार्थना की कि भगवान के लिये इस लड़ा
ई झगड़े और वैरभाव को छोड़ो और आपस में मेल
मिलाप करलो और जो कोई मिलाप करने पर राज़ी
न हो उसे हमें सौंपो कि उस को मार कर टुकड़े २ करें
कहावत प्रसिद्ध है कि नक्कारखाने में तूती की आवाज़
कौन सुने है उन की किसीने कान न धरी और स्त्रियों हि-
यों को समझा की कि इन को यहाँ से निकाल दो उन्होंने
ऐसा हुल्लड़ मचाया कि भीड़ में पिच कर तीन चार २
स्त्रियाँ मरगईं और इससे और अधिक विरोध बढ़ा ॥
पार्लीमेंट और स्काटलेन्ड की सेना ने एक मन
होकर बादशाही सेना से मार्स्टनमूर के मैदान में
युद्ध किया और क्रामवेल नामी सरदार की सावधा-
नी और चालाकी से विजय प्राप्त की दूसरी वेर फिर
ऐसी जीत हुई कि बादशाही सेना में से बहुत सी
तोपें हाथ आईं इस हार के पीछे फिर बादशाही सेना
न सम्भली ॥ तीसरी वेर क़सबे नेज़बी के निकट
लड़ाई हुई इस युद्ध में बादशाह का ऐसा भाग्य सोया
कि किसी प्रकार जय की आशा नहीं रही परन्तु क-
छुदेर तक दोनों ओर की सेना में कठिन घमसान र-
हा अंत को क्रामवेल ने शूरवीरता से सवारों का
समूह साथ लेकर ऐसा हल्ला किया कि बादशाही

सेना में हड़बड़ी और भागड़ पड़ी और बादशाह भी अपनी ऐसी पराजय और हानि देखकर रण भूमि में से भागा और जितनी युद्ध सामग्री थी वह क्रामवेल के हाथ आई और इस के सिवाय बादशाह की सेना के पचास सहस्र मनुष्यों को क़ैद कर लिया ॥ इस आपत्तिदशा में बादशाह ने स्काटलैन्ड के देश से सहायता मांगी उन्हों ने कुमक के बदले उसे क़ैद कर लिया इङ्गलिस्तान की पार्लीमेंट ने बादशाह का क़ैद में पड़ना सुन के यह सन्देसा भेजा कि बादशाह क़ैदी को हमें दो स्काटलैन्ड वालों ने उस के पलटे का एक करोड़ रुपया मांगा और पार्लीमेंट ने प्रसन्नता पूर्वक रुपया देकर बादशाह को छुडालिया ॥ पार्लीमेंट को सेना के सिवाय जिस की शूरबीरता और बल पराक्रम से यह विजय प्राप्त हुई और किसी का भय नहीं रहा और सेना से भी भय होने का यह कारण था कि फ़ौज के सरदार आपही कुचलाने लगे ॥ थोड़े दिनों में क्रामवेल ने सेना की मरज़ी पाकर जिन २ मनुष्यों को अपने से विरुद्ध देखा उन्हें छांट २ कर तुरन्त पार्लीमेंट से निकाल दिया सो पार्लीमेंट में कई एक गिन्ती के मनुष्य रह गए ॥ फिर उन की पंचायत करवा के बादशाह के दोषी ठहराने का उपाय किया और यह कलङ्क लगाया कि न्याय रहित होकर इङ्गलिस्तान के पार्लीमेंट से लड़ा था जब कि यह दृढ़ विचार होगा या बादशाह पर दोष के निश्चय करने को न्यायसभा में लेगये वहाँ पार्लीमेंट और सेना में के अनुमान

सत्तर मनुष्यों के नियत किये गए थे ॥ बादशाह क्रोध में भरा हुआ आकर उन के सन्मुख एक कुर्सी पर बैठ गया तब एक मनुष्य बादशाह के दोषी होने की मिसल पढ़कर सुनाने लगा आशय उस का यह था कि आदि से और अन्त तक जितने लड़ाई झगड़े टंटे बखेड़े हुए हैं वे सब बादशाह के किये हुए हैं ॥ बादशाह उस को सुन कर क्रोधित हो मुसकुराया जिस समय वह मिसल पूरी हो चुकी सभा के मुख्याधिकारी ने बादशाह की ओर दृष्टि की और कहा अब हमें आप के उत्तर की अभिलाषा है बादशाह ने धैर्यता सहित अपने बचाव की बात चीत करी और कहा कि पहले तो मुझे तुम्हारे इस अधिकार के होने पर ही इनकार है क्योंकि तुम में से कोई मनुष्य राज्याधिकार के योग्य दृष्टि नहीं आता और क़ानून की रीति से योग्यता के बिना अदालत में न्याय धर्म नहीं होता और मैं आप न्याय नीति का रूप हूं जिन नियमों और जाब्तों को कि मैंने पहले अंगीकार नहीं किया उन से मैं कैसे दोषी हो सकता हूं क्योंकि प्रजा के जो सत्व मेरे अधिकार में थे उन में तुम्हारे अधर्म और अन्याय की मुख़्तारी मान लेना तो राजनीति से रहित था और मैं जो किसी धर्मात्मा राजा की सभा में होता तो अपने बचाव का उत्तर देता और उस का प्रमाण पहुंचाता परन्तु तुम्हारे सम्मुख अपने निकास की बात चीत करनी उचित नहीं क्योंकि तुम्हारे सामने बोलने से लोगों के नज़दीक मेरी धार्मिकता में अन्तर पड़ता है और सम्पूर्ण राजनीति में कपट छल प्रकाशित होता है

और सैंकड़ों मनुष्यों के सन्मुख बोलने से एक मनुष्य कब जीत सकता है उस अवस्था में दोषी होना पड़ेगा और सब लोग निश्चय मुझे दोषी अपराधी ठहरा कर कपटी कहीजानेंगे ॥ सभा के मुखाधिकारीने अपने अधिकार के जताने और दृढ़ करने के लिये कहा कि सम्पूर्ण प्रजाजो अदालत और राज्य की मूल कारण है उसने हमें अधिकार सौंपा है जो कहना हो सो हम से कहिये बादशाह कुछ न बोले चुप होरहे इसी प्रकार तीन बेर सभा में बुलाये गये चौथी बेर उस अन्याय सभा में जाने के समय सेना और प्रजा के लोग जो वह काये सिखाये थे पुकारने लगे कि इस अधर्मी को मारो जिससे न्याय पावें वरन एक मनुष्य ने बड़ी अवज्ञा की और वह भी बादशाह ने सही ॥ और जिस समय लौटकर बन्दीगृह में गया अपने लड़के बालों के देखने और लन्दन के निवासी मन के आचार्य्य के साथ नमाज़ पढ़ने की प्रार्थना की और यह बात अंगीकार कीगई और तीन दिन का अवकाश मिला निदान मृत्यु का दिवस आपहुंचा बादशाह अच्छे २ वस्त्र पहिर कर मन के आचार्य्य के साथ मृत्यु स्थान को चला औ सम्पूर्ण जनो को सन्मुख अपना वृतान्त इस आशय से वर्णन किया कि जब तक पार्लीमेंट ने पहले लड़ाई की रीति नहीं निकाली थी मैं आप से आप नहीं लड़ा था सब प्रकार निर्दोषित हूं अब भी अपनी ओर से सम्पूर्ण कलङ्क और दोषलगाने के खोट क्षमा करता हूं कि फिरभी हित पूर्वक और न्याय दृढ़ होकर

मेरे बेटे को पादवी करो ॥ इस पर उस आचार्य्य ने ज्ञानोपदेश करके धीरज बन्धवाया कि इस अनित्य राज पाट के छोड़ने पर मत कुढ़ो ईश्वर तुम्हें स्वर्ग का राज्य देगा ॥ यह सुन कर बादशाह ने सिर झुका दिया और एक ही वार में सिर धड़ से अलग जापड़ा ॥ निदान यह बादशाह राजतिलक होने के २५ वर्ष पीछे ४९ वर्ष की अवस्था पाकर सन् १६४८ ई० में मारा गया ॥ यह बादशाह उत्तमता और पवित्रता में एक ही था और बड़ा दयावान सहन शील ईश्वरोपासक और धर्मिष्ठ था ॥ एक प्रतिष्ठित इतिहास वेत्ता ने लिखा है कि जैसी प्रीति बाप भाई और हितू मित्रों में चाहिये वैसी यह बादशाह सब से रखता था और उस समय के किसी मनुष्य में यह गुण उस की सदृश न था ॥ स्वतन्त्र राज्य करने के कारण देश में बड़ा विघ्न पड़ा और प्रत्येक मुक़द्दमे के बिगड़ जाने का यही हेतु था ॥ इस बादशाह को धार्मिक और सत्य प्रतिज्ञ की पदवी थी परन्तु जो गुण कि प्रतिष्ठित बादशाहों के योग्य होते हैं वे उस मे न थे ॥

क्रामवेल

बादशाह **चार्ल्स** के मारे जाने के पीछे **क्रामवेल** का मनोरथ सिद्ध हुआ और ऐसा स्वतंत्र राज्य मिला कि वैसा स्वप्न में भी कभी देखने में नहीं आया जो सेना **अयरलेण्ड** को भेजना चाहते थे उस की सरदारी पार्लीमेंट की आज्ञा से **क्रामवेल** को दी गई और उस के उपाय और साहस से लड़ाई में विजय प्राप्त हुई जब कि वहाँ से लौट कर इङ्गलिस्तान

में आया और सभा में गया तब सभा के मुख्याधिकारी ने उठकर **पार्लीमेंट** की ओर से धन्य बाद दिया और बहुत सी सराहना की ॥ थोड़े दिन पीछे जब इन्हों ने सुना कि स्वर्ग बासी बादशाह **चार्ल्स** पहले के बेटे को **स्काटलेण्ड** में राजगद्दी मिली तब उस पर चढ़ाई करने का विचार किया और किसी चतुर सेनाधिपति को वहाँ भेजना उचित जाना ॥ फिर भी सोलहसहस्र सेना साथ लेकर **क्रामवेल** ही **स्काटलेण्ड** को गया और इसके पहुंचते ही घोर संग्राम मचा **स्काटलेण्ड** की सेना यद्यपि **इङ्गलिस्तान** से दुगनी थी परंतु पराजय होकर भागी और **क्रामवेल** ने पीछा किया और उस में के बहुत से मनुष्य मारे इस आपत्ति दशा में स्वर्ग वासी बादशाह **चार्ल्स** के बेटेने बादशाहों का सा साहस विचारा कि अपने राज्य के लिये सब प्रकार की जोखिम उठावें सो **इङ्गलिस्तान** का मार्ग खुला देख कर सेना सहित उधर को प्रस्थान किया और उस को यह दृढ़ विश्वास था कि हमारी शुभ चिन्तक हितकारी प्रजा अवश्य सहायता करेगी परन्तु उस की यह आशा पूरी न हुई क्योंकि **स्काटलेण्ड** की सेना यह भारी सुहीम देख कर झुंड के झुंड फट कर अलग होगई और **इङ्गलिस्तानी** जो बादशाह की ओर झुके हुए थे उन को भी पक्षपात करने से शत्रु की ओर का भय हुआ ॥ बादशाह बहुत से कष्ट पाता हुआ **वस्टर** नगर में पहुंचा और वहाँ यह ख़बर पाई कि **क्रामवेल** नई भरती की चालीस सहस्र सेना इकट्ठी कर

के बराबर चला आना है ॥ इतने में शूरवीर परा-
क्रमी क्रामवेल आपहुंचा और नगर पर चारों ओ-
र से फौज़े टूट पड़ी प्रत्येक गली कूंचों में कटा करके
रुधिर के नाले बहा दिये और स्काटलेण्ड की कु-
छ सेना मारी गई और कुछ पकड़ी गई बादशाह ने
वृथा प्राण जाने के कारण शूरता दिखानी उचित न
जानी और पांच सरदारों और पचास सिपाहियों
के सहित भाग्य बल से भाग कर निकल गया और
सम्पूर्ण आपत्ति और संकटों से बच कर इकतालीस
दिन में क्षेम कुशल पूर्वक नारसन में पहुंचा ॥
बचने का विधि पूर्वक वृत्तान्त यह है कि उस नगर
से चौदह कोस एक स्थान पर जाकर अपनी रक्षा
की दृष्टि से अकेला एक ज़मींदार के घर में गया क्रा-
मवेल के इस आशय के इश्तिहार के देने पर भी
कि जो कोई बादशाह को छिपावेगा वह प्राण दंड
पावेगा उस ज़मींदार ने बादशाह के साथ अधिक
हित किया उसने और उस के चारों भाईयों ने मिल-
कर बादशाह को अपना सा भेष बदल वाया और कु-
ल्हाड़ी हाथ में देकर जङ्गल में लेगये और कहा कि
हमारे साथ में काम काज करते रहिये और बड़ी सा-
वधानी से एक सीता फल के वृक्ष पर चढ़ा के छिपा
दिया एक रात और एक दिन बादशाह उस की पत्नी
और बालियों में छिपे रहे और क्रामवेल के सिपा-
हियों ने उस के नीचे भी आ ढूंढा परन्तु उन को कुछ
दृष्टि नहीं आया अकृता पकृता कर उलटे लौट गये
॥ बादशाह वहां से थरथराता कांपता भूखा प्यासा

समुद्र के किनारे गया और जहाज़ में बैठकर नार मन्दी में पहुंचा उस समय से प्रति दिन क्रामवे ल का विभव और ऐश्वर्य्य बढ़नेलगा और बहु धा पार्लीमेंट के अधिकारी आज्ञाकारी और प्रति निधि नियत हुए ॥ एकबेर क्रामवेल ने सुना कि पार्लीमेंट में कोई लोग अब तक मेरे विरो धी हैं यह बात निश्चय करने के लिये अपने एक मुसाहिब को भेजा और कहा कि देखो अब वे किस विचार में हैं वह मुसाहिब पार्लीमेंट में गा या देखौतो वे सब एक महा सोच में पड़े हैं पूछा कि क्या करते हो उन्हौंने कहा अपने परमेश्वर की खोज में हैं मुसाहिब ने उस के उत्तर में कहा कि जहाँ तुम सरी के दुराचारी हौं वहाँ ईश्वर के मिलने का क्या ठिकाना है यह कहकर उन्हें पार्लीमेंट से निका ल दिया निदान पार्लीमेंट की जो एक परछाईं सी रह गई थी वह भी जाती रही ॥ सेना के अधिपति यों ने अपनी ओर से क्रामवेल को देशाधिकारी ठ हराया और इङ्गलिस्तान के प्रजा पति की पदवी के सहित ठेठ लन्दन नगर और उस के निकट वर्त्ती प्रदे शों में उस के नाम की ऊंढ़ी फिरवादी क्रामवेल ने कि सी को अधिकार देकर और किसी को पदवी से उतार कर अन्य के काम काज में सेना के लोग जो उस के मि त्र थे चुन कर मुकर्रर किये और सेना पर बड़ी कृपा दृ ष्टि रखना और एक महीने की तलब सब को पेशगी देदिया करना था क्योंकि उन्हीं की सहायता से उस का सब कारखाना जमा था ॥ एस्त्रालय में अलग ख

और सब प्रकार की युद्ध सामग्री सीसा बारूद आदि तै-
यार रखता और बादशाही ख़ज़ाने में से प्रमाण का
ख़र्च उठाता और आगम विचार से सम्पूर्ण आपत्ति
यों को टालता रहता और जो कोई मामला अन्यदे-
शों से आपड़ता तो उस का ख़ूब दृढ़ प्रबन्ध करता
और प्रत्यक्ष में उसने जल थल की लड़ाइयों में विजय
और कीर्ति प्राप्त की परंतु थोड़े वर्ष पीछे उस की यह दु-
शदुई कि पाषाणी और स्वार्थी होने के कारण प्रत्येक
आजीविका वाले लोगों ने उसे बुरा जाना और सब ने
बहुत दुखी हो कर उस के मार डालने का उपाय किया
निदान तब सेक्राम वेल्ल के जीव का सब सुख चैन
जाता रहा और शेष अवस्था बड़े दुःख में काटी और
मारे जाने का भय सदैव उस के हृदय में बना रहा
और डर के मारे वस्त्रों के नीचे कवच पहरता और
तमंचों की जोड़ी जेब में रखता और मुख पर उदासी
छाई रहती जो कोई मनुष्य उस के पास जाता उसकी
ओर से सन्देह रखता कि कहीं घात न करे ॥ जो
कभी हवा खाने निकलता तो हड़बड़ाया सा रहता
और बहुत सी सेना साथ लेकर आता एक बेर जिध
र हो के निकलता उधर फिर न आता इस लिये कि
कहीं कोई घात न लगा वे एक स्थान में दो तीन
रात के सिवाय कभी न सोता उसी अवस्था में जाड़े
तप आई औ प्रति दिन रोग बढ़ने लगा जब कि क्राम
वेल्ल को मूर्च्छा आई और अस्त व्यस्त बकने लगा तब
उससे पूछा कि तुम्हारी गद्दी पर किसे बैठावें बड़ी क
ठिनता से जीभ हलाई और अपने बेटे रिचर्ड का

नाम लिया निदान राजगद्दी पर बैठने के नौ वर्ष पीछे ५८ वर्ष की अवस्था पाकर सन् १६५८ ई० में यह बादशाह इस भांति मृत्यु को प्राप्त हुआ ॥ यद्यपि में क्रामवेल सेना के कामों में बड़ा चतुर और सावधान था परन्तु उस के स्वभाव में अत्यन्त अन्याय और अधर्म बसता था और भलाई के गुण उस में बहुत थोड़े थे ॥

इस के पीछे देश की रक्षा का अधिकार रिचर्ड को मिला इस से राज्य के सम्हालने की योग्यता नथी इसलिये शीघ्र अधिकार को छोड़ कर फ्रांस को गया ॥ तब स्काटलेंड के सेनाधिपति जनरल मङ्क नामीने यह उपाय विचारा कि मुख्य बादशाह के घराने को बहाल करें सो आठ सहस्र सेना लेकर राजधानी में आया और राजकुमार चार्ल्स की ओर से भी उस के नाम चिट्ठी पत्री आई जब कि उस ने पार्लीमेंट के सभासदों की मरज़ी राजकुमार पर हुई देखी तब राजकुमार का एक पत्र जो उन के नाम आया था पढ़ सुनाया उस को सुनकर पार्लीमेंट के सरदार बहुत प्रसन्न हुए और ऐसा उत्तर दिया कि जिस से आगे के सुख चैन की आशा हुई सो थोड़े दिन पीछे राजकुमार भी प्रधान नगर लन्दन में आ पहुंचा और मार्ग में कोसों तक मनुष्यों के ठट्ट के ठट्ट खड़े हुए देखे ॥

जो लोग कि बहुत काल से अन्याय और अधर्म के रगड़ों में व्याकुल हो रहे थे और अनीति के कारण बिगड़ गये थे वे प्राचीन कानूनों के जारी होने की आशा पर बड़े आनन्दित और हर्षित हुए और नये सिरे से देश में उत्साह छाया ॥

शाह चार्ल्स दूसरा।

जब यह बादशाह राजसिंहासन पर सुशोभित हुआ उसकी अवस्था तीस वर्ष की थी और रूपस्वरूप और बोल चाल में बहुत अच्छा था और अपनी चालचाल से सम्पूर्ण जनों के मनों में स्नेह बढ़ाया ॥ थोड़े दिनों पीछे अपने पिता के मारने वाले अपराधियों पर क्षमा करने का दस्तखत लिखकर जारी किया परन्तु **क्रामवेल** और **अपरटन** और **ब्राडशा** ये तीनों मनुष्य जो उसके पिता के मारने में अधिकप्रवृत्त हुए थे उन को वैर सहित याद किया यद्यपि वे मर गए थे तोभी आज्ञादी कि उन की लोथों की क़बरों से निकालकर कई दिन तक सूली पर लटकाओ और फिर उसी स्थान में गाड़ दाव दो सेवकों ने वैसाही किया ॥

बादशाह शीघ्रही विषयवासना में लिप्त हुआ और बहुत खर्च करने से सदैव निर्धन रहा और खर्च की आवश्यकता से ऐसा सोच और फिक्र में डूब जाता कि उससे निकलना कठिन पड़जाता ॥

उन में से एक यह है कि **पोर्तगाल** के बादशाह की बेटी से तीन करोड़ रुपये रोकड़ और दो किलों के लालच पर विवाह किया इतनी रोकड़ के सिवाय उसके बाप ने वे दोनों क़िले जो एक **आफ्रिका** में था और एक **बम्बई** में था दहेज में देने विचारे थे ॥ बादशाहज़ादी यद्यपि कुल में अच्छी थी परन्तु रूप स्वरूप में कुछ सुंदर नथी और सिवाय उस लालच के बादशाह के मोहित होने में और कुछ कारण नहीं जान पड़ता था ॥ **क्लारिडन** नामी मनुष्य जो ब-

हुआ दरबार में रहा करता था उसने बादशाह की इ-
च्छा के विपरीत इस विवाह के विषय शिक्षा की औ-
र कहा कि इस में अनेक विघ्न हैं विशेष कर के एक
यह कि इस से कोई सन्तान न होगी बादशाह ने कु-
छ न माना और उस से विवाह किया **क्वारिडन**
भलाई की बात कहने में कभी न चूकता चाहो बा-
दशाह को अच्छी लगती वा बुरी इस कारण बादशा-
ह के मन से उतर गया और उस के शत्रु इस बात से
बहुत प्रसन्न हुए और यह उपाय विचारा कि राज्य में
से इस का खोज मिटा दे वह इस बात को ताड़ कर रु-
दजहाज़ में बैठ **फ्राँस** को चला गया उसी समय से
बादशाह के ऊपर आपत्ति आई जब ऐसे धर्मज्ञ शु-
भचिन्तक हितकारी मन्त्री को जुदा कर दिया तब रा-
ज्य के सम्पूर्ण काम काज उन विषयी मित्रों को सौंपे
गये जो आठो पहर कुकर्म में साथी थे ॥ दैव सं-
योग से उसी वर्ष मे ऐसी मरी पड़ी कि जिस में अड
सठ सहस्र मनुष्य मरे और दूसरे वर्ष राज धानी पर
एक और अचानक आपत्ति आई कि नानबाई की
दूकान में से अग्नि लगकर सम्पूर्ण नगर में जा भड़
की और तीन दिन और तीन रात बराबर बुझने न
पाई नगर के गली कूंचों की तेरह सहस्र दो सौ छ-
लिपां जल कर राख होगईं इन दो आपत्तियों के सि-
वाय तीसरे शत्रु **चार्लिस** का राज्य प्रति वर्ष विघ्न का
रक हुआ और उन दिनों में इस के समान कोई बादशा-
ह अन्याई और विषयी न था परन्तु प्रजा के लिये यह
कुशल हुई कि उस का अधर्म राज्य बहुत दिनों तक

न रहा ॥ उस की बोल चाल में मनोहरता और हंसी ब
हावहुत था लिखा है कि एक दिन बादशाह के भाई ने
मृगया से लौटते हुए बादशाह को राजधानी से बाहर
अकेला देखकर कहा कि महाराज बड़ा आश्चर्य्य है कि
आप ऐसे खोटे विपरीत समय में अकेले क्यों फिरते
हैं बादशाह ने कहा कि आप अपनी सावधानी रक्खो
जब तक तुम हो मुझे किसीका कुछ डर भय नहीं क्यों
कि अपने को बादशाह बनाने के लिये मुझे कोई न मा-
रडालेगा ॥ और विदित है कि कोई मत के आचार्य्य
बादशाह के यहाँ नौकर थे सो बादशाह दयालुता स
हितउन को सप्ताह में एक दिन अपने साथ भोजन
कर बाता वे भोजन पर बैठने के समय यह आशीर्वा
द देते कि ईश्वर बादशाह को चिरंजीव रक्खे और भं
डार भरा रहे थोड़े दिन पीछे उन्होंने अपनी नौक-
री के छूट जाने की खबर पाई तब भोजन के ठीक स-
मय पर आशीर्वाद का आशय बदल कर सबने एक
मुख हो कहा कि ईश्वर इस भण्डार को भरा रक्खे औ
र बादशाह का सुयश बढ़ावे बादशाह ने आशीर्वा-
द के शब्दों के बदलने से मुसकरा कर कहा कि तुम्हा
री आजीविका बनी रहेगी सो वे नौकरी पर जैसे थे वै
सेही बने रहे ॥ यद्यपि पार्लीमेंट में बादशाह की
अपेक्षा बहुत द्वेष और विरोध बंधा परन्तु प्रजा के
लोग तब भी बादशाह की सुशीलता और मिलन सा-
री से कुछ २ प्रेम गाँठे रखते थे ॥ उस के व्यभिचारी
होने के कारण सम्पूर्ण गुण दोषों में छिप गये स्त्री-
यों के विषय में ऐसा डूब जाता कि राज्य के किसी

काम में श्रम न करता ॥ मत धर्म का निंदक और बड़ा आलसी या कायरता से कभी कोई मुहीम न जीत सका ॥ और अन्याय दृष्टि से सदैव यह जानता था कि सब झूठे और स्वार्थी हैं इसलिये अपने सम्पूर्ण कामों में कपट छल और विश्वास घात करना अंगीकार किया फ्रांस देश के बादशाह की राज्य रीति उस को बहुत अच्छी लगती थी और अपने देश से अप्रसन्न रहता था और इङ्गलिस्तान की प्रजा को तुच्छ समझता इस दृष्टि से कि मेरे बाप को मारडाला और मुझे भी दुःख दिया और अब राज्य के खोदेने के उपाय में है इस हेतु सब से कपट और द्वेष रखता और उस को अपने जान में देश प्रबन्ध के विषय एक बड़ा उत्तम गुण समझता था और सम्पूर्ण लोगों के बीच में जो मामले पड़ते उन में कपट छल करता ॥ यह बादशाह देश की वृद्धि और लाभ से अचेत रहा और प्रतिष्ठा और पदवी की इस को कुछ लज्जा न थी और प्रजा के सहों पर भी कुछ दृष्टि न की और कोश में से वृथा अधिक धन उठाता था ॥ इस बादशाह में यद्यपि यह गुण था कि कभी खोटे बचन मुख से न निकाले परन्तु कोई काम बुद्धिवानी और चतुराई का नहीं किया अन्त को ५९ वर्ष की अवस्था में ऐसा मिर्गी का रोग लगा कि राजगद्दी होने के २५ वर्ष पीछे सन १६८५ ई० में मृत्यु को प्राप्त हुआ और उस के भाई जेम्स को राजगद्दी मिली ॥

शाह जेम्स दूसरा

इस बादशाह ने राज्य के आरम्भ में माता के

उप देश से पोप के मत की शिक्षा पाकर उसी के नियमों और निबन्धों पर दृढता की और एक कारिल नामी सरदार को अपनी ओर से वकील बनाकर पोप के पास भेजा इसलिये कि वह बादशाह की ओर से प्रणाम और दंडवत कहकर यह मनोरथ जता दे कि इङ्गलिस्तान को आप फिर अपने मत धर्म की रीति पर लाइये उधर मानमथ नामी एक सरदार ने बादशाह की अनीति और निर्दयता देखकर बादशाहत अपने अधिकार में करने का साहस किया और वह मनुष्य दृढ़ और ऐसा हठीला था कि सम्पूर्ण प्रजा उस का आदर सम्मान करती थी इसने आरगिल उधर स्काटलेंड के बासी की सहायता से आप तो इङ्गलिस्तान में उपद्रव उठाया और उसने उत्तर की ओर दुंद मचाया ॥

बहुत से लोगों ने यहूदी की ख़ुशामद से उन के नीचे आज्ञा कर उन की आधीनी अंगीकार की पहली ही लड़ाई में आरगिल की सेना ने शिकस्त पाई और वह भी बन्धन में पड़ के सूली दिया गया ॥

इस अन्तर में उधर मानमथ ने छः सहस्र सेना भरती की और पंक्ति बांधकर बादशाही सेना से लड़ा सामना होते ही बादशाह की सेना पीछे को हटी उस समय निश्चय था कि उधर विजय प्राप्त करे परन्तु उस की सेना का गे नामी सरदार जो रण में से भागा इसलिये उस की सम्पूर्ण सेना में खलबली पड़ी तो भी सेना बिना सरदार के कुछ देर तक लड़ती रही और तीन सौ मनुष्य तलवार से कट मरे अन्त को बाकी रहे

सहे भाग निकले और बादशाही सेना ने उनका पीछा किया जूक **मानमथ** भी लाचार और निराश होकर भागा इसका घोड़ा बराबर एक दस बीस कोस पहुंचा अन्त को ऐसा हारा कि एक डग भी न भर सका लाचार वह कालबस घोड़े को वहीं छोड़ एक चरवाहे का भेष बदल कुछ दूर पैरों गया था कि भेदियों के हाथ पकड़ा गया तब एक विनय पत्र अपनी अवस्था और अपराध क्षमा के विषय लिखकर बादशाह के दरबार में भेजा बादशाह ने सोचकर कहा कि तुम्हारा ऐसाभारी अपराध है कि कभी क्षमा न कियाजायगा इस लिये उसने भी शूली पाई और इस प्रकार वह प्रजा का हितकारी मनुष्य मारा गया ॥

मत धर्म के विषय उन लोगों पर **जेम्स** ने अन्याय किया जो पोप के मत के निन्दक और निषेधी थे इस अवस्था में सम्पूर्ण लोगों ने राजकुमार विलियम की शरण ली जिसे बादशाह की बेटी व्याही थी ॥ उस राजकुमार ने जो बाल्यावस्था ही से देश प्रबन्ध में बड़ा चतुर और सावधान था निश्चय किया कि **जेम्स** बादशाह ने प्रजा से द्वेष और विरोध बांधा तब वह प्रजा की विनय के अनुसार पंदरह सहस्र सेना साथ लेकर **इङ्गलिस्तान** में आया पहले तो मानमथ के प्राण दण्ड पाने के कारण बादशाह के विरोधी लोगों ने भय के मारे उसका साथ न दिया ॥

इस दुबधा में राजकुमार बहुत काल तक चाहता रहा कि **इङ्गलिस्तान** की प्रजा साथ देगी परन्तु जब वहाँ से कोई न आया तब हिरासा हुआ और

अपने देश को लौट जाने का मन सूबा बांधकर सेना को जहाज़ों में चढ़ने की आज्ञा दी इङ्गलिस्तान की प्रजा के अमीर सरदार और सेना के लोग यह खबर सुनकर सब उससे जा मिले जब जेम्स बादशाह ने देखा कि मेरे पास कोई न रहा तब लाचार होकर राज्य की आशा त्यागी और शीघ्रही फ्रांस देश को गया वहाँ के निवासियों ने इसे बादशाह और सन्त की पदवी दी और वहाँ बादशाह बड़े आनन्द में रहा ॥

सन १६८८ ई० में इङ्गलिस्तान की राज्यगद्दी खाली हुई तब पार्लीमेंट के अधिकारी परस्पर में विचारने लगे कि किसको राजतिलक दीजिये किसीने विलियम को युवराज पदवी देने को कहा और किसीने बादशाह जेम्स की बेटी जो राजकुमार विलियम के घर में थी उस को राजगद्दी पर बैठाने की सम्मति दी अन्त को बहुत सी कहा सुनी होकर यह बात ठहरी कि दोनों स्त्री पुरुष राजसिंहासन पर बैठें परन्तु राज्य करने का अधिकार केवल राजकुमार विलियम को रहे ॥ बादशाह जेम्स का वृत्तान्त लिखने के योग्य है क्योंकि वह बहुत सी बातों में अच्छा था इसने देश की आमदनी में से प्रमाण का खर्च किया और वनिज व्यापार को खूब चमकाया और जहाजी कारखाने के कामों को तन मन धन लगाकर पूरा किया और इङ्गलिस्तान की प्रतिष्ठा और गौरव के लिये बड़े २ श्रम और उद्योग किये गृहस्थाश्रम के धर्म में ऐसा निर्दूषित था कि सन्तान को ऐसा पिता और स्त्री को ऐसा पति

और मित्रों को ऐसा परम स्नेही हित कारी मित्र मिलना कठिन है ॥ इन गुणों के सिवाय बड़ा सहन शील और मन का उदार था जहाँ कोई इलाक़ा ख़ाली देखता वहाँ तुरन्त किसी प्रतिष्ठित मनुष्य को नियत करता और सब कामों में साहसी और बलवान था यद्यपि इसने किसी की धन सम्पत्ति और मिलकियत पर हाथ नहीं डाला परन्तु मत के विषय में अधिक आग्रह रखता था और मत धर्म की विरुद्धता और फ़ाँसी सों की प्रेम प्रीति के कारण प्रजा के लोग उस से अप्रसन्न रहते थे ॥ उसका भजन स्मरण कभी बन्द नहीं रहा और अन्त समय तक सब प्रकार का संयम नियम निबाहा ॥

पोप के मत के अनुसार अनेक प्रकार के श्रम और उद्योग उठाता और अपने पूर्व के अपराधों की सदैव क्षमा चाहता इस बादशाह ने अपनी शेष अवस्था महात्मा लोगों और मत के आचार्यों के सत्संग में व्यतीत की ॥

जो महात्मा लोग लातरन के क्लेसिया में रहते थे उन से यह बादशाह वर्ष भर में एक बेर अवश्य भेंट करने जाता क्योंकि वे अन्य उपासकों की अपेक्षा अधिक देवाराधन करते थे उस देवालय की यथा योग्य सेवा और परिचर्या करने से बादशाह की श्रद्धा भक्ति उन महात्माओं को विदित हुई ॥

बादशाहत से भी अधिक आनन्द में इस प्रकार बारह वर्ष व्यतीत हुए अन्त को कम्पवायु के रोग में ग्रसित होकर पंद्रह दिन तक रोदपाया और इसी रोग

में ६९ वर्ष की अवस्था पाकर सन् १७०१ ई० में मृत्यु को प्राप्त हुआ ॥

शाह विलियम तीसरा और मलिका मेरी दूसरी

इन दोनों को राजगद्दी पर बैठते ही देश प्रबन्ध करना बड़ा भारी पड़ा क्योंकि प्रजा ने आज्ञा पालन के बदले अवज्ञा पर कमर बाधी और बहुत दिनों तक आयरलेन्ड के लोगों ने जेम्स बादशाह को राज्य सिंहासन पर बैठाने की अभिलाषा में उन से युद्ध किया जब कि युद्ध भूमि में खूब घमसान हुआ तब लड़ाई से बन्द हुए और उनकी मनसा यह थी कि बादशाह विलियम को जीव से मार डालें परन्तु ईश्वर की कृपा से उनका कुछ बस न चला ॥

बादशाह के समय में बहुत काल तक फ्रांस देश से लड़ाई रही फिर रीसविक नगर में दोनो ओर से संधि होने का बचन निबन्ध ठहरा और वे सब लड़ाई झगड़े मिटगए इङ्गलिस्तानियों को इस मूर्खता और अज्ञानता की लड़ाई में कि जिस में ऐसी मारामरी हुई कि रुधिर की नदियाँ बह निकलीं परिणाम में सिवाय इसके कि विलियम को फ्रांस के बादशाह के यहाँ से बादशाह की पदवी मिली और कुछ फल प्राप्त न हुआ

इस बादशाह का शरीर मझोला पाँव की पिण्डलियाँ भारी और बेडौल थीं और कन्धे गोल और झुके हुए और मुख बहुत ही कुरूप था और बहुधा घर की बातों में बड़ा कठोर और क्रोध स्वभाव था ॥

यद्यपि जन्म से उस की प्रकृति कोमल और शरीर

निर्बल था परन्तु शूरवीरता के कामों में अधिक मन लगाता और युद्ध कर्म में भी बड़ी निपुणता प्रकाशित करता और बुरी बातें उस के चित्त पर जल्दी बैठ जाती और बहुत देर तक जमी रहती थी परन्तु मन में ईर्षा द्वेष नहीं रखता था राज्याधिकार पाने से पहले उस बादशाह के थोड़े गुण प्रकाशित हुए और बुद्धि की तीव्रता और विद्या से रहित था केवल युद्ध विद्या में कुशल था दान करने में निरा मूर्ख और उदारता के स्थान पर कृपणता और कृपणता के स्थान पर उदारता प्रकाशित करता और दोषियों के दण्ड देने में भी अनुचित करुणा करता था ॥

इस बादशाह के मन में राज्य के आरम्भ में बड़ी उमङ्ग भरी हुई थी और बात चीत बहुत थोड़ी करता था और जो करता भी था तो चेडौल और अमीरों और सरदारों को अनुचित बातों की शिक्षा करने की टेव थी और अन्य देश के लड़ाई झगड़े मे आप पड़ने की अभिलाषा रखता था पहले आवश्यकता के समय सेना को भरती करते थे और अपना काम पूरा करके उसे नौकरी से छुड़ा देते थे इसने पार्लीमेंट से आज्ञा मांगली कि राज्य में सदैव सेना बनी रहे सो यह बात अंगीकार होकर अब तक देश प्रबन्ध के कानूनों में प्रचलित है ॥

और प्रजा से बहुत दिनों के इकरार पर ऋण लेने की बुरी रीति उसीने निकाली और लोगों से प्रतिदिन अधिक ऋण लिया ॥ वृद्धावस्था की सिथिलता के छिपाने के लिये घोड़े पर सवार होकर हवा खाने को जाया

करता था एक दिन घोड़े पर चढ़ने के समय संयोग से घोड़ा गिर पड़ा बादशाह के ऐसी अधिक चोट लगी कि हंसली की दोनों हड्डियाँ टूटगईं जो उस के शरीर में बल होता तो यह चोट कुछ ऐसी भारी नहीं थी परन्तु शरीर की निर्बलता के कारण वही जीव लेवा होगई यद्यपि कुछ काल तक जीने की आशा थी परन्तु रात में पलङ्ग पर सोते हुए कम्पवायु कारोगउठखड़ा हुआ और उस के साथ ही ज्वर और पेट चल निकला तब जीने की कुछ आशा नहीं रही ॥

अपना अन्त समय देख कर जिन २ कामों और बातों में उसका मन लगरहा था सब का स्मरण किया और इङ्गलिस्तान की प्रतिष्ठा और कीर्त्ति को इस अवस्था में भी न भूला जीने की अवधि के दो दिन बाकी रहे थे कि हालेाड़ देश से लाई ट्रलमाल नामी वकील के फिर आने के समाचार सुन के उसे अपने पास बुलाया और उस देश की सम्पूर्ण व्यवस्था उससे पूछी तीसरे दिन ५२ वर्ष की अवस्था में राज्यगद्दी होने के १३ वर्ष पीछे सन् १७०१ ई० में मृत्यु पाई और बादशाह की बेगम जेम्स की बेटी मलिकह मेरी जो बड़ी सरूपवती और धार्मिक श्रद्धावान थी वह इस बादशाह के छः सात वर्ष पहले ही मर चुकी थी इस लिये एनी नाम बादशाह की दूसरी बेटी को राजगद्दी मिली ॥

मलिकह एनी

यह बादशाहज़ादी ३८ वर्ष की अवस्था में राजगद्दी पर सुशोभित हुई और थोड़े दिन पीछे इसने फ्रांस देश पर सेना के भेजने का विचार किया सो पार्लीमें-

ट में उस की यह बात अंगीकार होकर लड़ाई की आज्ञा दी गई ॥

इङ्गलिस्तान की यह खबर पाकर जरमनी और हालेणड के देश निवासियों ने भी फ्राँस देश पर चढ़ाई की इस एका बांधने के समाचार सुनते फ्राँस के बादशाह को पहुंचे उसने सब पर कोप किया और विशेषकर हालेणड के देश से अधिक द्वेष बांधा इङ्गलिस्तान की सेना की सरदारी ड्यूक मार्लबरा को मिली अन्त को तीनों देश की सेना इसी प्रतिष्ठित सरदार के अधिकार में हुई यह मनुष्य उस समय युद्ध कर्म में बड़ा कुशल साहसी और धैर्यवान था और देश प्रबन्ध में मुख्य प्रधान के योग्य और बात चीत करने में भी बहुत चतुर था ॥

फ्राँस वालों का यह ऐसा भारी शत्रु हुआ कि क्रेसी और अजिनकोर्ट की लड़ाई के पीछे और कोई दूसरा वैसा नहीं हुआ इस बादशाह ज़ादी के समय में फ्राँस की बहुत लड़ाई लिखी हैं और ड्यूक मार्लबरा की बुद्धिवानी और चतुराई से जो विजय और कीर्ति पाई उस का अधिक वर्णन किया है परन्तु इङ्गलिस्तान को उस लड़ाई में बहुत थोड़ी लाभ हुई वरन जो विजय स्पेन में आप्त की उन में उस से अधिक फल मिला क्योंकि एक तो सेना बहुत थोड़ी मारी गई दूसरे जिबराल्टर का विकट गढ़ कि जिस पर सिवाय एक ओर के हल्ला करना कठिन था वह सेना की पूरी वीरता से हाथ आया और अब तक इङ्गलिस्तान के अधिकार में है यद्यपि जेम्स बादशाह के समय से

इङ्गलिस्तान और स्काटलेंड की अमलदारी मिलगई थी परन्तु पार्लीमेंट दोनों की अलग अलग रही और प्रत्येक अपने २ देश की वृद्धि और लाभ चाहता था॥

बहुत काल में बड़ी कहा सुनी के पीछे इस बादशाहज़ादी के समय में दोनों का मिलाप हुआ इस रीति पर कि स्काटलेंड के सोलह सरदार और पैंतालीस साहिब इङ्गलिस्तान की पार्लीमेंट में भरती हुए और तभी से यह रीति चलित है॥

और यह बात प्रसिद्ध है कि इस बादशाहज़ादी और मलिकह अलीज़बथ के समय में जैसा वैभव और ऐश्वर्य इङ्गलिस्तान के राज्य का बढ़ा वैसा और किसी बादशाह के समय में नहीं हुआ लिखा है कि मलिकह एनी की बोल चाल बड़ी मधुर और मनोहर थी और पार्लीमेंट में इस रीति से बात चीत करती कि बहुधा लोग उसकी मीठी बोल चाल की सराहना करते थे वास्तव में यह बादशाहज़ादी इङ्गलिस्तान की राजगद्दी के योग्य थी और अगले बादशाहों में से इस की समान दूसरे कम हुए चित्त की उदार सहनशील मिलनसार और स्त्रियों के से स्वभाव की भूल चूक उस में नथी॥

और अपने मत धर्म में पक्की और श्रद्धावान और दान करने में बड़ी पुण्यात्मा थी मत धर्म में जिस मनुष्य को संयमी नियमी और विद्यावान देखती उस का बहुत आदर सन्मान करती और भजा पर माता की हित प्रीति रखती इसी से सब को प्यारी थी॥

अकस्मात् यह बादशाहज़ादी ऐसी मांदी हुई

कि जीने की कुछ आस न रही ॥

दोनों देश की सन्धि के समय यह वचन ठहरा था कि मलिकह रानी के मरने के पीछे हनोवर देश का इलक्टर अर्थात् सूबा जो इङ्गलिस्तान के अधिकार में था राजगद्दी पर बैठे ॥

इस वचन निबन्ध के अनुसार पार्लीमेंट ने हनोवर देश को इस आशय का पत्र लिखा कि बादशाहज़ादी बहुत मांदी है इसलिये तुम्हारा यहाँ आना उचित है और कई जहाज़ आप के पास भेजे जाते हैं आप शीघ्र पधारिये ॥

बादशाहज़ादी को प्रति दिन रोग बढ़ने लगा अन्त को सक्ते की बीमारी से राजगद्दी होने के १३ वर्ष पीछे ५० वर्ष की अवस्था पाकर सन् १७१४ ई० में मृत्यु पाई और पार्लीमेंट ने हनोवर के इलक्टर जार्ज पहले को इङ्गलिस्तान और स्काटलेंड और अयरलेंड का बादशाह बनाया ॥

शाह जार्ज पहला

यह बादशाह चौवन वर्ष की अवस्था में राज्य सिंहासन पर बैठा और उस की बुद्धिवानी और चतुराई और कुटुम्बियों के बाहु बल से लोगों को निश्चय था कि इस का राज्य बहुत अच्छा होगा ॥

जो लोग इस बादशाह से स्नेह मान कर स्टूअर्ट के घरानें से द्वेष रखते थे उन के मध्ये उस का यह वचन था कि अपने शुभ चिन्तक हितकारियों को कभी न भूलोंगा और सम्पूर्ण देश का न्याय करूंगा और किसी से न डरूंगा और ऐसे ही गुण प्रकाशित किये

क्योंकि प्रत्येक मामले और मुकद्दमे में मन से ख़ूब सोच विचार करता परंतु इङ्गलिस्तान की प्रजा के विभव और ऐश्वर्य्य की अपेक्षा हनोवर देश की अधिकता चाहता इस के सिवाय थोड़े दिन पीछे उस की ऐसी खोटी दशा आई कि रात दिन मुहलगे ख़ुशामदियों के कुसङ्ग में रहने लगा और प्रत्येक ओहदा ख़ाली करके उन को अधिकार पर नियत किया इसकारण हर एक ज़िले और परगने में उपद्रव मचा इसके पीछे कई अमीर और अंगरेज़ बादशाह की आज्ञा से क़ैद हुए॥

इन ईर्षा द्वेषों और अधिकारों के घटाने बढ़ाने से होसे २ लोगों का वैरभाव बढ़ा और स्काटलेन्ड में उपद्रव की नींव जमी और एक सरदार अर्लमार ने अपने सङ्गीसाथी और नौकर चाकरों में से तीन सौ मनुष्य इकट्ठे करके राज्यस्वत्वाधिकारी जेम्स स्टूअर्ट को जो मलिकह ऐनी के घराने से था बादशाह बनाया और देश में उस के नाम की डोंडी फिरवादी और अपने को सेनाधिपति नियत किया इस बात की दृढ़ता और सहायता के लिये फ्रांस में एक जहाज़ जिस में कई ओहदेदार और बहुत सी बारूद और अस्त्रशस्त्र थे स्काटलेन्ड में पहुंचा और उस के साथ यह सन्देसा भी आया कि राज्यस्वत्वाधिकारी बादशाह भी पीछे से आते हैं इस ख़बर के सुनते ही उस सरदार ने दससहस्र सिपाही इङ्गलिस्तानियों से लड़ने पर खड़े कर दिये और जहां लड़ाई की वहाँ हार पाई ॥

इस अन्तर में राज्य का लोभी जेम्स स्टूअर्ट

भी स्काटलैण्ड में आया और वहाँ पहुंचते ही अ
र्लमार और तीस प्रतिष्ठित सरदारों ने उस से भेंट की
और दूसरी बेर फिर उस के दृढ़ राज्य होने का दंटौरा
फिरवाया दो दिन पीछे एज तिलक की रीति भांति का
उत्सव हुआ और राज्याधिकार का दृष्टिहार रूप वाक
र सब ओर भिजवा दिया फिर जेम्स ने मत के आचा
र्यों को आज्ञा दी कि निमाज़ पढ़ो और मेरे लिये शुभ
चिन्तन करो जब इस प्रकार के आनन्दोत्सव में सात
दिन व्यतीत हुए तब जीमें ध्यान आया कि इङ्गलिस्ता
न की मुहिम से हाथ उठावें और अपने मन्त्रियों औ
र प्रतिनिधियों को बुलाकर कहा कि पश्चात्ताप है कि
युद्ध सामग्री और याचा के योग्य रुपया कोष में न हो
ने के कारण तुम सब को लाचारी से छोड़ना पड़ा रुप
अज्ञानता से यह विरोध बंधगया था सो मिट गया
फिर जेम्स ने कई सरदारों को अपने साथ ले
फ्राँस को गया जिन उपद्वी सरदारों ने उसका साथ
दिया था वे पकड़े आए और सब अलेक्षाना धन से
भरगया कई महीने में अदालत से उनका न्याय हो
कर किसी ने शूली पाई और किसी को जन्म कैद हुई औ
र किसी को देश निकाला दिया और उन का घर बार
और माल असबाब ज़ब्त कर लिया ॥

इस बादशाह के समय में पांच रुपये सैकड़ा व
रसौड़ी ब्याज पर रुपया लेने की रीति बंधी और लो को
ई इस से विशेष ब्याज लेता वह अदालत में दण्डित
किया जाता और व्यापार में अधिक लाभ होने से लोगों
में कपट छल और दगाबाज़ी फैली और सब छोटे

कहीं में अनीति और अधर्म होने लगा ॥

थोड़े दिनों पीछे इस बादशाह ने अपने हनोवर देश के देखने का विचार किया और पार्लीमेंट को उठा कर वहाँ अपना प्रतिनिधि नियत कर के आप जहाज़ में सवार हुआ और हालेण्ड के इलाक़े में जहाज़ से उतर कर थल के मार्ग हनोवर की ओर चला पहली मंज़िल के दिन डेलडेन नाम क़स्बे में ठहर कर रात को खाना खाया और आनंद में सोया प्रातःकालही वहाँ से आगे को चला तीन चार कोस पहुंचा होगा कि सेजगाड़ी को ठहराने का इशारा किया और खड़े होने से जाना गया कि बादशाह के एक हाथ को लक़्वा मार गया राज्य वैद्य जो सवारी के साथथा उसने निदान मिलाके अनेक प्रकार के उपाय किये और बहुत सी सद्यगुण कारी औषध नेज़ा व आदि की लगाई परन्तु किसीने कुछ गुण न किया और बादशाह की जीभ सूखकर लुतलाने लगी केवल मुख से इतनाही निकला कि जल्दी चलो निदान राजगद्दी होने के २३ वर्ष पीछे ६८ वर्षकी अवस्था पाकर सन् १७२७ ई० में यह बादशाह काल को प्राप्त हुआ यद्यपि इसकी प्रकृति सराहने के योग्य न थी परन्तु राज्य के काम चलाने को अच्छा था और कुछ एक प्रजा उससे प्रसन्न रही इस की मृत्यु के पीछे राजकुमार जार्ज नामी को राजगद्दी मिली ॥

शाह जार्ज दूसरा

इस बादशाह के समय में फ्रांस आदि देशों से बहुत लड़ाइयां हुईं परन्तु उन दिनों इङ्गलिस्तान

का मनुष्य रूपीभानु अस्त हो रहा था और इन महा भारी आपत्तियों और सङ्कटों के मिटाने के लिये पहले वहाँ के लोगों ने कुछ उपाय भी नहीं किया क्योंकि उस समय इङ्गलिस्तान की प्रजा इस बादशाह पर दो कारणों से अप्रसन्न थी एक तो यह कि बादशाह हनोवर देश के लोगों का बहुत पक्षपात रखता था दूसरे सेना को बहुत धन देने के लिये देश पर अन्याय करता था इस कारण राज्य में अनेक प्रकार के विघ्न पड़े और इसी आपत्तिकाल में जेम्स स्टुअर्ट जिसने बादशाह जार्ज पहले के समय में इङ्गलिस्तान की राजगद्दी का दावा किया और फिर लौटकर फ्राँस को चला गया था उसका बेटा प्रजा की अप्रसन्नता का वृत्तान्त सुन के फ्राँसीसों से सहायता के बचनों पर छः सात सरदारों और दो सहस्र बँदूक लेकर जहाज़ पर सवार हुआ और इस विचार से इङ्गलिस्तान की ओर प्रस्थान किया कि उस सम्पूर्णदेश को अपने अधिकार में करें इङ्गलिस्तानी इस चढ़ाई के समाचार सुन कर बड़े अचम्भित हुए ॥

जहाज़ से उतरते ही बहुत से उपद्रवी उपाधी लोगों ने उस का साथ दिया और स्काटलेन्ड की राजधानी एडिनबरा के मार्ग में भी बहुत सी भीड़ उस के सङ्ग होली थी सो बिन रोकटोक स्काटलेन्ड देश में पहुंची और बड़ी धूम धाम से अपने पिता के नाम की दोंड़ी फिर वादी इस अन्तर में एक कोप नामी सरदार जिस के अधिकार में बादशाही सेना का एक कम्पू था वह शत्रुओं का सामना करने पर उपस्थित हुआ और उन के रोकने के लिये एडनबरा की ओर

प्रस्थान किया ॥

चार्ल्स एडवर्ड ने भी अपनी अशिक्षित सेना जो बादशाही सेना से गण नामें अधिक थी साथ लेकर अपनी राजधानी से बारह कोस के अन्तर पर **सिटिन पेंस** में आकर लड़ाई की और पांच सौ मनुष्यों को मारकर बाक़ी सेना को सरदारों सहित भगादिया उस के विजय पाने से **इङ्गलिस्तान** में बड़ी घबराहट और खलबली मची और वह थोड़े दिनों **एडिनबरा** में बड़े आनन्द पूर्वक रहा और **फ्रांस** के वचनानुसार दक्षिण की ओर से सेना की सहायता के मिलने की आशा पर **इङ्गलिस्तान** पर चढ़ाई की और शीघ्रही यहां से चलकर **मांचेस्टर** नगर में जो लन्दन से केवल सौ कोस है अपने डेरे डाले यहाँ भी दो सौ **इङ्गलिस्तानी** जो बादशाह से अप्रसन्न थे अपना एक गोल बांधकर उस के साथ हुए इस बढ़ोतरी से सेना के सरदारों को आधीनी में रहना बुरालगा और अपनी २ प्रतिष्ठा पर झगड़ने लगे जब बादशाह से उन का कुछ प्रबन्ध न होसका नबलाचार होकर सेना समेत पीछे को हटा और जिस समय **एडिनबरा** के समीप पहुंचा एक ओर बादशाही कटक से सामना हुआ और उस से भी विजय पाई उस के पीछे उस पर यह आपत्ति आई कि ड्यूक **कम्बरलन्द** जो **इङ्गलिस्तान** की सेना का सरदार था वह **लौदर्स** से बुलाया गया सो शत्रु उस के आने की ख़बर सुन कर पहलेही से पीठदेगएथे।

उस ड्यूक एडिनबरा से चौदह सहस्र सेना साथ लेकर उन का पीछा किया तब शत्रु ओंने यह विचार

ठहराया कि क्लोडिन के मैदान में बैरियों का सामना करें निदान उस समय भूमि में महा घोर संग्राम मचा थोड़ी देर पीछे शत्रुओं की सेना के पैर उखड़े और तीन सहस्र मनुष्य मारे गए और रुधिर की नदियां वह निकली ॥

ड्यूक कम्बरलन्ड ने जब लड़ाई से अवकाश पाया तब छत्तीस मनुष्य जो अपनी सेना में से भागे थे सब को पकड़कर एक साथ सूली देदी और उस की ऐसी धाक पड़ी कि जिधर होके उस के आने की खबर होती उधर लोग भय भीत होजाते ॥

इङ्गलिस्तान का शत्रु सेना के छिन्न भिन्न होजाने के कारण चार्ल्स दूसरे की भांति भागता फिरा और भूख प्यास सहकर कभी गाँव में और कभी जङ्गल में दिन काटे अन्त को जहाज़ में सवार होकर फ्रांस में पहुंचा तब भी दो बादशाही जहाज़ उसके पीछे लगे परन्तु हाथ न आया इस बादशाह के समय में क्लेव साहिब बहादुर जो अन्त में गवर्नर जनरल नियत हुए उनकी बुद्धिवानी और चतुराई से सन १७५९ ई० में इङ्गलिस्तान की सेना ने हिन्दुस्तान पर विजय और अधिकार प्राप्त किया और उन दिनों में इङ्गलिस्तान की सेना ने जिस देश पर चढ़ाई की उस पर विजय पाई ॥

जब कि महिमण्डल में इङ्गलिस्तानियों का प्रतापभानु प्रकाशित हुआ तभी इस आनन्द और सुख की अवस्था में राजतिलक होने के तेतीस वर्ष पीछे सत्तर वर्ष की आयु में सन १७६० ई० में अकस्मात बादशाह की मृत्यु के कारण विजय का हर्ष और

उत्साह ढीला पड़ा ॥

और नहीं मालूम कि आप से आप क्या अंधेर हुआ कि जोंही नौकर चाकरों ने जाकर देखा तो बादशाह घट घटियों होरहा था पहले अच्छा भला चङ्गा था और रोग का कहीं नाम भी न था वैद्यों ने बहुत से उपाय किये परन्तु कुछ आराम न हुआ और उसी समय तड़फ २ कर प्राण निकल गए ॥

यह बादशाह अपने पिता की अपेक्षा प्रतिष्ठा और योग्यता कम रखता था परन्तु उस के समय में प्रजा और सेना बड़े सुख चैन में रही और प्रमाण से ख़र्च करने में प्रशंसा और सराहने के योग्य था यद्यपि स्वभाव भी चंचल और चपल था परन्तु आचरण उस के सब बुद्धिवानी के साथ थे और अपनी बात पर सदैव दृढ़ रहा और बचनों का पूरा था निदान उस में सम्पूर्ण गुण न बहुत अच्छे थे न बहुत बुरे सामान्य थे उस के समय में इङ्गलिस्तान की विजय का प्रताप भानुउदय होरहा था और पाटवी पुत्र के बैकुंठवास पाने के कारण जार्ज नाम बादशाह का पोता राजसिंहासन पर सुशोभित हुआ ॥

बादशाह जार्ज तीसरा ॥

इस बादशाह ने राजसिंहासन पर बैठने के वर्ष दिन पीछे जरमनी के देश में एक बादशाही घराने से विवाह किया क्योंकि बड़े २ उत्तम कुल फ्रांसीस आदि योप के मत में थे इस लिये उन में विवाह करना इङ्गलिस्तान की रीति के विपरीत जाना ॥

उस की स्त्री यद्यपि अच्छे कुल की नहीं थी परन्तु

जन्मभर ऐसी पवित्रता और शुद्धता से रही कि बादशाह को उस के हीन कुल पर कुछ पछतावा न हुआ ॥

बादशाह की गम्भीरता और दयालुता के विषय लिखा है कि एक दिन सवारी से उतर कर एजभवन में जाते थे कि उसी समय एक स्त्री आई अर्दली के लोगों से विनती कर कहने लगी कि मुझे बादशाह के समीप जाने दो उन से मेरी एक प्रार्थना है उन्हों ने उसे जाने दिया बादशाह ने बड़ी दयालुता सहित उस की अर्ज़ी सिर झुका कर ली और उस दुष्टात्मा स्त्री ने एक हाथ से अर्जी दी और दूसरे हाथ से बादशाह पर कटार चलाई ईश्वर की दया से बादशाह का झुकना उपयोगी हुआ कि वार खाली पड़ा दूसरी बेर जब घात करने का विचार किया इस में सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और बादशाह ने कहा कि मुझे कुछ चोट नहीं लगी इसे दुःख मत दो निश्चय होता है कि यह सिडन है अन्त को न्याय सभा में निश्चय हो कर उस के मध्ये यही व्यवस्था दी गई कि यह सिडन है और विक्षिप्त पागलों के साथ कैद हुई ॥

इस बादशाह के राज्य का इतना वर्णन लिखा है कि सम्पूर्ण इङ्गलिस्तान के इतिहास में अनुमान चौथाई भाग के है सो यहां ग्रंथ के बढ़जाने के कारण संक्षेपता से लिखा गया ॥

इस ने फ्राँस और स्पेन और हिन्दुस्तान पर बराबर विजय प्राप्त की सन १८१० ई० में बादशाह ने अपनी वृद्धावस्था और मांदे रहने के कारण विचारा कि राजका काम काज मुझ से न हो सकेगा सो पार्ली-

मेंट से उस की मरज़ी के अनुसार सनद प्रचलित हुई कि बादशाह के आरोग्य होने तक पाटवी राजकुमार वेल्स राज्य का प्रबन्ध कर्ता रहे फिर प्रति वर्ष बादशाह के शरीर की सामर्थ्य घटती चली ॥

जो शीलस्वभाव के गुण कि मनुष्य की प्रतिष्ठा और शोभा को बढ़ाते हैं वे इस बादशाह में थे और अपने मत धर्म में बड़ा दृढ़ और संयमी नियमी था और विश्वास के अनुसार ग़रीबों और फ़क़ीरों और निर्धन रंक सेवाओं को पुण्यदान कर के धर्म का मार्ग दिखाता और राज्य के कामों में दया धर्म और न्याय नीति का करना उस को अच्छा लगता था मन्त्रियों को राज काज में कभी प्रवेश न देने दिया और कभी किसी की ख़ुशामद पर ध्यान न किया और बड़े सीधे स्वभाव से राज्य शासन करता रहा ऐसे विपरीत काल में कि जिस में प्रजा के अधर्म और अन्याय से बड़ी२ विलायतों के नरक डिगमिगाने लगगए थे इस बादशाह का राज्य पाट इस की धर्म दृष्टि से सदैव दृढ़ और अनेक प्रकार के विघ्नों से बचा रहा ॥ अनुमान साठ वर्ष तक इस का राज्य रहा और सम्पूर्ण बादशाहों से अधिक प्रतिष्ठित और प्रतापी हुआ निदान इस बादशाह ने ८१ वर्ष की अवस्था पाकर सन् १८२० ई० में इस अनित्य संसार को त्याग स्वर्गवास किया उस के समय में दीन ग़रीबों ने ऐसा सुख चैन पाया था कि सबने उस की मृत्यु से पिता के मरने का सा शोक माना और राज गद्दी उस के जीते जी पाटवी राजकुमार को प्राप्त हुई ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥

शाहजार्ज चौथा

बादशाह के मरने के दो दिन पीछे तो इस बादशाह ने प्रधान नगर लन्दन में और एक सप्ताह पीछे सम्पूर्ण देश में अपने नाम की डोंडी फिरवादी एक महीना भी पूरा नहीं हुआ था कि फसल्टूद आदि कुविचारी मनुष्योंने एक ऐसा कुमन्त्र विचारा कि कभी किसी मनुष्य के ध्यान में न आया होगा कि जिससे एक दम में देशाधिपति और राज्याधिकारियों का नाश होजाय और वह यह है कि एक दिन इन दुष्टों को विदित हुआ कि सब राज्याधिकारी अमुक मनुष्य के यहाँ महमानी की रीति पर आवेंगे सो उस हवेली के निकट एक स्थानमें सब प्रकार के अस्त्र शस्त्र और सीसा गोली और बारूद आदि युद्ध सामग्री इकट्ठी कर रक्खी और समय के आने की बाट तकने लगे और उन अधर्मियोंने यह मनसूबा बांधा कि जिस समय वे सब इकट्ठे हों फ़सल्टूद एक सन्दूक़ अमीरों की भांति लार्ड हर्स्टी के पास भिजवादे और धोखा देकर द्वारपाल के इतने ही अवकाश में अपने उपद्रवी मित्रों के साथ उस स्थान में घुसकर सब सरदारों को मारडाले ॥

परन्तु एक मनुष्य जो प्रत्यक्ष में उन से मित्रता रखता था और अन्तःकरण से इसबात को प्रकाशित करना चाहता था सो सभा होने के समय यह विधिपूर्वक वृत्तान्त उस के कहने से जाना गया और उस उपद्रव के शान्ति करने के लिये यह बात ठहरी कि जिस समय वे इस काम में प्रवृत्त हों झट पट क़ैद किये जांय तब एक राज्याधिकारी की आज्ञा से कोतवाली के

कई सिपाही जङ्गी सेना के साथ उस ओर गए और वहाँ उन से दङ्गा बखेड़ा होकर एक कोतवाली का बरकन्दाज ठौर मारा गया अन्त को उन में से नौ मनुष्य क़ैद हुए और अदालत में उन पर यह अपराध निश्चय होकर पांच को तो शूली दीगई और बाक़ियों को देशनिकाला हुआ ॥

इस बादशाह का राज्य यद्यपि बड़ी धूम धाम से हुआ परन्तु इस उपाधि के होने के कारण प्रजा का मन फिर गया इन सब बातों के सिवाय बादशाह और बादशाह की बेगम में विरोध पड़ा इस कारण कि बादशाह की बेगम के स्वभाव में प्रेम प्रीति बहुत थी और इस का मुक़द्दमा पार्लीमेंट में पहुंच कर विधि पूर्वक निश्चय किया गया और यह न्याय पाया कि बादशाह की बेगम और देश में जुदी रहे और रोज़ीना पाया करे ॥ इस बादशाह ने दस वर्ष राज्य करके सन् १८३० ई० में मृत्यु पाई और यह बादशाह अपनी तरुणावस्था में बड़ा स्वरूपवान था और बात चीत भी बड़ी मधुरता से करता था और दुराचारी उपद्रवियों के पहचानने में उस की चालाकी और चतुरता प्रकाशित थी परन्तु विषय वासना में डूबा रहा ॥ यद्यपि रूप स्वरूप और बुद्धिवानी के कारण बहुधा अमीर और सरदार उस की प्रशंसा करते थे परन्तु जो गुण कि उस के पिता में थे उन को नहीं पहुंचा सन्तान के न होने से उस का भाई विलियम चौथा राजगद्दी पर सुशोभित हुआ ॥

शाह विलियम चौथा

यह बादशाह सन् १७६५ ई० में जन्मा और २५

जून सन् १८३० को राजगद्दी पर बैठा और ६ वर्ष ११ महीने २५ दिन तक राज्य किया निदान ७२ वर्ष की अवस्था पाकर **विन्डसर** नाम स्थान में मृत्यु पाई और इस के पीछे श्रीमती भूपाल शिरोमणि महाराणी **विक्टोरिया** जिन का जन्म सन् १८१९ ई० मे हुआ २० वीं जून सन् १८३७ ई० को राज सिंहासन पर सुशोभित हुई जिनकी कीर्ति और यश अब सम्पूर्ण महिमण्डल में छारहा है ॥

॥ दोहा ॥

विद्या यश कीरत बड़ी कोंगुण बरनेजायँ ॥
जों तारे सब गगन के मूठी में न समाय ॥
जों लगि गणपति गोपिपति जग प्रकाश शशिसूर
श्रीराणी विक्टोरिया अटल राज्य भर पूर ॥

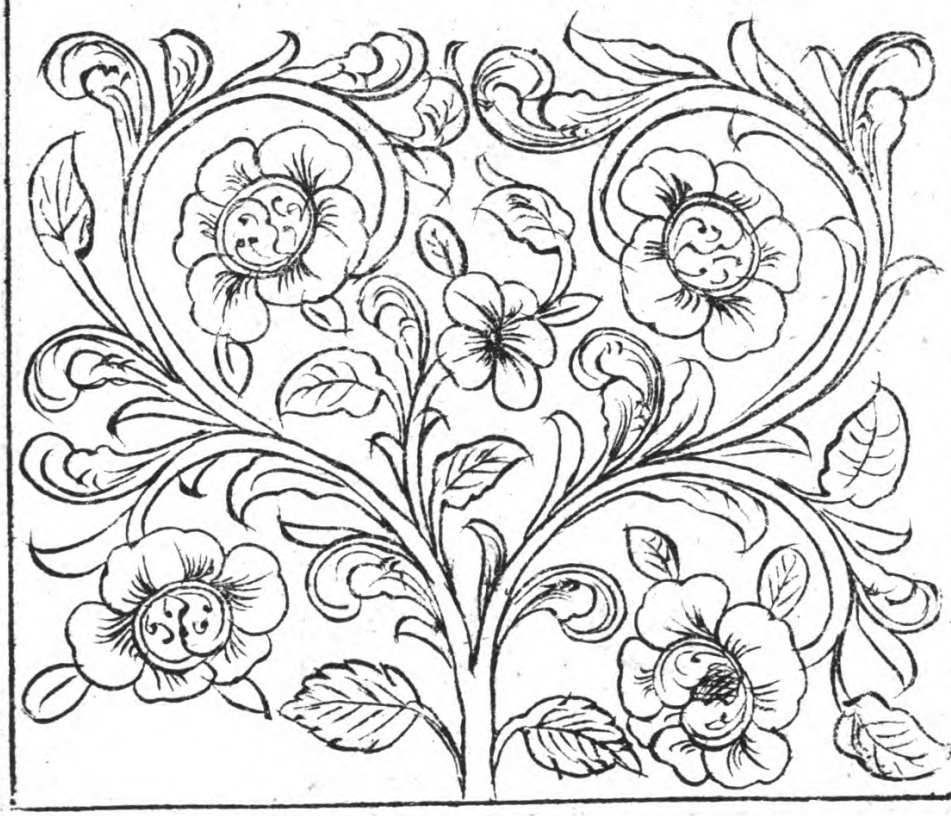









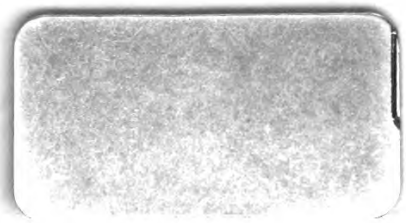

I